UNIVERSITY OF CALICUT

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Study materials

B.A HINDI

I Semester

Complimentory Course In Hindi

HISTORY OF HINDI LITERATURE

Prepared by
Dr. E.M. Anna Salley
Associate Professor
Department of Hindi
Malabar Christian College
Kozhikode. 673001

©
Reserved

विषयक्रम

UNIT 1	-	हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण
UNIT 2	-	आदिकाल
UNIT 3	-	भक्तिकाल और सन्त काव्य परंपरा
UNIT 4	-	हिन्दी सूफी काव्य या प्रेमाख्यानक काव्य
UNIT 5	-	सगुण भक्ति काव्य और रामभक्ति शाखा
UNIT 6	-	सगुणभक्ति काव्य – कृष्ण भक्ति शाखा।
UNIT 7	-	रीतिकाल
UNIT 8	-	आधुनिक काल- गद्यकाल
UNIT 9	-	निबन्ध
UNIT 10	-	आलोचना
UNIT 11	-	हिन्दी उपन्यास का विकास
UNIT 12	-	हिन्दी नाटक का विकास
UNIT 13	-	हिन्दी कहानी का विकास
UNIT 14	-	हिन्दी एकांकी का विकास
UNIT 15	-	गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ – जीवनी साहित्य
UNIT 16	-	आत्मकथा
UNIT 17	-	संस्मरण और रेखाचित्र
UNIT 18	-	यात्रावृत्त
UNIT 19	-	गद्यकाव्य
UNIT 20	-	रिपोर्ताज
UNIT 21	-	इंटर्व्यू-साहित्य
UNIT 22	-	आधुनिक हिन्दी कविता का विकास
UNIT 23	-	द्विवेदी युगीन काव्य
UNIT 24	-	छायावाद युग
UNIT 25	-	प्रगतिवाद
UNIT 26	-	प्रयोगवाद और नयी कविता
UNIT 27	-	साठोत्तरी कविता
UNIT 28	-	समकालीन हिन्दी कविता
UNIT 29	-	हिन्दी साहित्य को केरल की देन

UNIT 1

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण

1. **हिन्दी साहित्य का काल विभाजन ग्रियर्सन ने किस प्रकार किया है और उसकी क्या कमी थी?**

   ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य को ग्यारह काल खण्डों में विभक्त किया है

   1) **चारण काल** 700 – 1300**ई**
   2) 15**वीं शताब्दी का पुनर्जागरण**
   3) **ब्रज का कृष्ण संप्रदाय**
   4) **मुगल दरबार**
   5) **तुलसीदास**
   6) **रीतिकाव्य**
   7) **तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि**
   8) 18**वीं शताब्दी**
   9) **कंपनी के शासन में हिन्दुस्तान**
   10) **महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान**

इस विभाजन में युग विशेष के सूचक कम है। कालक्रम का प्रवाह इसमें अविच्छिन्न रूप से नहीं चलता। पूरी चौदहवीं शती को इतिहास से निकाल दिया गया है। कालों के नामकरण में भी समान मानदण्डों को नहीं अपनाया गया है।

2. **मिश्रबन्धुओं ने कालविभाजन किस प्रकार किया है?**

1) **प्रारंभिक काल**	-	**पूर्वारंभिक काल** 700 – 1343**वि.सं**
		उत्तरारंभिक काल 1344 - 1444**वि.सं**
2) **माध्यमिक काल**	-	**पूर्व माध्यमिक काल** 1445 - 1560 **वि.सं**
		प्रौढ़ माध्यमिक काल 1561 -1680 **वि.सं**
3) **अलंकृत काल**	-	**पूर्वालंकृत काल** – 1681 - 1790 **वि.सं**
		अलंकृत काल – 1791 – 1889 **वि.सं**
4) **परिवर्तन काल**	-	1890 - 1925 **वि.सं**
5) **वर्तमान काल**	-	1926 **से अबतक**

3. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कालविभाजन किस प्रकार है?**

   1) **आदिकाल** – **वीरगाथाकाल** – 1050 - 1375**वि.सं**
   2) **पूर्व मध्यकाल** – **भक्तिकाल** – 1375 - 1700**वि.सं**
   3) **उत्तर मध्यकाल** – **रीतिकाल** – 1700 - 1900**वि.सं**
   4) **आधुनिक काल** – **गद्यकाल** – 1900 **से अबतक**

4. **डॉ. रामकुमार वर्मा का कालविभाजन किस प्रकार है**?
   a. **संधिकाल** – 750 -1000**वि**
   b. **चारणकाल** – 1000 – 1375**वि**
   c. **भक्तिकाल** – 1375 – 1700**वि**
   d. **रीतिकाल** - 1700 – 1900**वि**
   e. **आधुनिककाल** - 1900 **से अबतक**
5. **डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त का कालविभाजन किस प्रकार है**?
   a. **आदिकाल** – **सन्** 1184 – 1350**ई**
   b. **पूर्व मध्यकाल** – **सन्**1350 – 1600**ई**
   c. **उत्तर मध्यकाल** - **सन्**1600 – 1857**ई**
   d. **आधुनिक काल** – **सन्**1857 **से अबतक**

6. **डॉ. रामपुमार वर्मा ने आदिकाल को संधिकाल और चारणकाल के रूप में क्यों विभाजित किया**?
   रामपुमार वर्मा के अनुसार उत्तर भारत की अपभ्रंश भाषाओं से हिन्दी की उत्पत्ति हुई। अपभ्रंश और हिन्दी के संक्रमण के समय में रची हुई रचनाएँ मिलती हैं। अतः आदिकाल के प्रारंभिक चरण को वे अपभ्रंश और हिन्दी का संधिकाल मानते हैं। अर्थात् अपभ्रंश की अंतिम रचनाएँ हिन्दी की आदिम रचनाएँ हैं। उसके बाद के समय में राजस्थान के चारण कवियों की रचनाएँ मिलती हैं। इसलिए उन्होंने 1000**से** 1375 **तक के समय को चारणकाल कहा।**
7. **आदिकाल के नामकरण के बारे में क्या क्या तर्क वितर्क हुए हैं**?
   शुक्लजी ने आदिकाल को 'वीरगाथाकाल' नाम दिया है। लेकिन उन्होंने जिन बारह रासो काव्यों के आधार पर यह नाम दिया है, वे अप्रामामिक सिद्ध हुए हैं। डॉ. रामपुमार वर्मा ने आदिकाल को 'संधिकाल' और 'चारणकाल' के रूप में विभाजित किया है। राहुल सांकृत्यायन ने सिद्धों द्वारा अपभ्रंश में लिखित धार्मिक साहित्य तथा वीरकाव्य दोनों को महत्व देते हुए आदिकाल को 'सिद्धसामन्तयुग' नाम दिया। मिश्रबन्धुओं ने आदिकाल को आरंभिककाल नाम देकर 'पूर्वारंभिक काल', 'उत्तरारंभिक काल' इसप्रकार दो भागों में विभाजित किया। श्री.गणपतिचन्द्र गुप्त ने 'प्रारंभिककाल', रामरतन भटनागर ने 'आविर्भाव काल' और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीजवपनकाल' नाम दिया है। कुछ लोगों ने 'अंधकार काल' या 'शून्यकाल' भी कहा है। अधिकांश विद्वानों ने 'आदिकाल' नाम ही स्वीकारा है।
8. **डॉ. रामपुमार वर्मा ने भक्तिकाल को धार्मिक काल नाम क्यों दिया**?
   भक्तिकालीन साहित्य धार्मिक अनुभूतियों से ओत-प्रोत है। इसलिए उसको और भी स्पष्ट करने केलिए धार्मिक काल नाम दिया।

9. **रीतिकाल के नामकरण के बारे में क्या क्या तर्क - वितर्क हुए हैं**?

उत्तर मध्यकाल में रीतिग्रन्थों या काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों की प्रचुरता के कारण शुक्लजी ने 'रीतिकाल' नाम दिया। लेकिन आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसका विरोध करके कहा है कि रीतिकाल नाम देने पर घनानन्द जैसे रीतिमुक्त कवियों को बाहर निकालना पडेगा। उस युग की सभी कृतियों में प्राप्त विषय को आधारित करके इसको 'श्रृंगार काल' नाम देना उचित है। लेकिन डॉ. नगेन्द्र ने कहा कि रीतिमुक्त कवियों ने भी थोडी रीति- विषयक रचनाएँ की हैं। श्रृंगार काल कहने पर भूषण जैसे वीरकाव्य लिखनेवाले कवि बाहर पड जाएँगे। गणपतिचन्द्रगुप्त ने काव्यशास्त्रपरक ग्रन्थों की धारा को 'शास्त्रीय मुक्तक काव्यधारा' तथा रीतिमुक्त धारा को 'स्वच्छन्द काव्यधारा' नाम दिया। डॉ. रामशंकर शुक्ल रसाल के अनुसार रीतिकाल केलिए 'कलाकाल' नाम ज्यादा उचित है। रीतिकाल की अलंकरण की प्रवृत्ति देखकर मिश्रबन्धुओं ने इसे 'अलंकृतकाल' कहा। रामबहोरी शुक्ल और भगीरथमिश्र ने इस युग को 'रीतिश्रृंगार काल' नाम दिया।

10. **आधुनिककाल को शुक्लजी ने क्यों गद्यकाल कहा?**

आधुनिककाल में हिन्दी में गद्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। इसलिए शुक्लजी ने गद्यकाल कहा।

UNIT - 2

आदिकाल

1) **आदिकाल की विभिन्न परिस्थितियों पर विचार कीजिए?**

किसी भी युग का स्वरूप उसकी परिस्थितियों पर आधारित है। आदिकाल की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परिस्थितियाँ प्रमुख हैं।

<u>राजनीतिक परिवेश</u>

राजनीतिक दृष्टि से आदिकाल के समय पतन का युग था। उस समय वर्द्धन-साम्राज्य का पतन हो गया। हर्षवर्द्धन के समय से ही उत्तरी भारत पर यवन आक्रमण हुआ। उनकी मृत्यु के बाद उत्तरी भारत में छोटे राजपूत राजा राज्य करते थे जो हमेशा आपस में लडते थे। मुसलमानों ने अवसर पाकर उनको पराजित किया। दिल्ली में तुर्कों की सलतनत स्थापित हुई। जनता एक ओर देशी राजाओं के अत्याचारों से पीडित थी तो दूसरी ओर विदेशी आक्रमणकारियों से। इसलिए जनता में एक वर्ग वीरता के साथ लडते हुए जीना चाहता था। दूसरा वर्ग इन शोरगुल से दूर आध्यात्मिक बात सोचता था। कुछ लोग इन सबके बीच जीवन कारस लेना चाहते थे। इन तीन वर्गों का रूप आदिकाल के साहित्य में देख सकते हैं।

<u>धार्मिक परिवेश</u>

वैदिक और पौराणिक धर्म के साथ बौध और जैन धर्म भी उत्तर भारत में प्रचलित थी। लेकिन सभी वास्तविक आदर्शों से दूर हट रहे थे। धर्म के स्थान पर अधर्म का प्रचार हो रहाथा। बौद्ध धर्म मंत्र, तंत्र तथा सिद्धियों के चक्कर में पडकर पतित होने लगा। महायान, वज्रयान, सहजयान, मंत्रयान आदि कई रूप हुए। वैष्णवों, शाक्तों, शैवों तथा जैनों में भी विकृत प्रचार हुआ। बाद में नाथ संप्रदाय के संतों ने धर्म को सीधे रास्ते पर लाने का प्रयास किया। इसीप्रकार तमिलनाडु से भी भक्ति का नया आन्दोलन उत्तर भारत में आया। यह लोकहित पर आधारित भक्ति को महत्व देता था। आचार्य शंकर, रामानुज, निंबार्क आदि आचार्यों ने भी धार्मिक उद्धार करना चाहा। लेकिन इन सबका प्रभाव इस युग में नहीं हुआ। इस अशान्त वातावरण में इस्लाम धर्म भी भारत में प्रवेश किया।

<u>सांस्कृतिक परिवेश</u>

हर्षवर्धन के समय हिन्दू संस्कृति उन्नति के शिखर पर पहूँच गयी थी। सभी कलाओं में धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति थी। मुसलमानों के आगमन के साथ मुस्लीम संस्कृति का प्रभाव भी लोगों पर होने लगा। हिन्दू-मुस्लीम संस्कृतियाँ तनाव की स्थिति में एक दूसरे को विरोध और शंका से देखती रही। लेखिन उत्सव, त्योहार, भोजन, वस्त्र, मनोरंजन आदि सभी में हिन्दू प्रभाव ज़्यादा दिखायी पडने लगा। इसप्रकार आदिकाल की भारतीय संस्कृति में एक ओर अपनी उत्कृष्ट परंपरा का ह्रास तथा दूसरी ओर इस्लाम का सम्मिश्रण प्राप्त है।

<u>सामाजिक परिवेश</u>

राजनीति, धर्म और संस्कृति के हलचल में जनता को शासन तथा धर्म से आश्रय नहीं मिल रहा था। जाति-पाँति के बन्धन कठोर हो गये। कई तरह के अन्धविश्वास बढ़ते जा रहे थे। राजाओं और उच्चवर्ग विलासमय जीवन बिता रहे थे। शिक्षा, शास्त्र-ज्ञान तथा साहित्य से साधारण जनता का कोई संबन्ध नहीं था। नारी केवल उपभोग की वस्तु थी।

साहित्यिक परिवेश

आदिकाल में साहित्य में तीन धाराएँ थीं। प्रथम धारा संस्कृत साहित्य की थी। इस युग में ज्योतिष, दर्शन, साहित्य आदि सभी में संस्कृत संपन्न थी। आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र आदि उस समय जीवित थे। दूसरी धारा में प्राकृत और अपभ्रंश में साहित्य रचना होती थी। जैन और बौद्ध धर्म से संबन्धित साहित्य प्राकृत या अपभ्रंश से लिखा जा रहा था। तीसरी धारा हिन्दी भाषा की थी। हिन्दी में चारण कवियों की वीर गाथाएँ इस काल में लिखित हो रही थीं।

2) डॉ.रामकुमार वर्मा ने आदिकाल के प्रथम चरण को संधियुग नाम क्यों दिया?

हिन्दी की उत्पत्ति अपभ्रंश से हुई है। आदिकालीन अपभ्रंश काव्यों में अपभ्रंश भाषा का अंतिम स्वरूप मिलता है, जो उत्तर अपभ्रंश जाना जाता है। यही हिन्दी का आदिम स्वरूप है। इसलिए इसको पुरानी हिन्दी भी कहते हैं। सचमुच यह अपभ्रंश और हिन्दी का संधिकाल है। इसलिए रामकुमार वर्मा ने आदिकाल के प्रथम चरण को संधियुग कहा।

3) आदिकाल की मुख्य काव्य-प्रवृत्तियाँ क्या क्या है?

1) सिद्ध-नाथ-जैन सम्प्रदाय में दीक्षित कवियों द्वारा धर्म और नीतिपरक काव्य रचना।
2) रासो काव्य की परंपरा
3) रासो प्रबन्ध काव्यों की संदिग्ध प्रामाणिकता
4) वीर तथा श्रृंगार रस की प्रधानता
5) राष्ट्रीय भावना का अभाव
6) अपभ्रंश प्रभावित पुरानी हिन्दी का प्रयोग
7) डिंगल-पिंगल काव्य शैली का प्रयोग
8) प्रबन्ध व मुक्तक काव्य रचना
9) लोक साहित्य की रचना
10) गद्य रचनाओं का प्रादुर्भाव

4) आदिकाल की साहित्यिक कृतियों पर प्रकाश डालिए?

लगभग 800 से लेकर 1300 तक की सभी कृतियाँ आदिकाल के अन्तर्गत आती हैं। आदिकाल के प्रथम चरण में जो साहित्य रचा गया है उनमें हिन्दी की अपेक्षा अपभ्रंश का रूप ज्यादा मिलता है। दूसरे चरण में देश भाषा में लिखे काव्य मिलते हैं। इसलिए आदिकालीन साहित्य को दो विभागों में विभक्त किया गया है।

1) अपभ्रंश काव्य
2) देश भाषा काव्य

आदिकाल के अपभ्रंश काव्य में मुख्य रूप से धार्मिक विषयों पर आधारित ग्रंथ मिलते हैं। इनके अलावा लौकिक विषय के काव्य भी मिलते हैं। अतः अपभ्रंश रचनाओं को चार विभागों में रख सकते हैं –

a. **सिद्ध अपभ्रंश काव्य**
b. **जैन अपभ्रंश काव्य**
c. **नाथपंथी काव्य**
d. **शुद्ध अपभ्रंश काव्य(लौकिक काव्य)**

आदिकाल के देश भाषा काव्य दूसरे चरण की कृतियाँ हैं। दूसरा चरण, चारण काल माना जाता है। इसलिए इन रचनाओं को चारण काव्य या रासो काव्य भी कहते हैं। चारण कवियों ने प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं।

I. **<u>सिद्ध अपभ्रंश काव्य</u>**

बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के सिद्ध योगियों का काव्य सिद्ध साहित्य के अन्तर्गत आता है। बौद्ध-सिद्धों का कार्यक्षेत्र देश के पूरवी क्षेत्र में था। नालन्दा व तक्षशिला विश्वविद्यालय भी बौद्ध सिद्ध साधना के केन्द्र थे। सिद्ध साहित्य में तांत्रिक वामाचार की प्रधानता है। वे सुरा, सुन्दरी आदि भोग के उपकरण को मोक्ष का साधन मानते थे। लेकिन उनकी रीति में एक प्रगतिशील तत्व अवश्य मिलता है। उन्होंने कभी शास्त्रों को नहीं माना। वेदों का तिरस्कार कर तीर्थों में जाना आदि धार्मिक रूढ़ियों तथा आचारों का खण्डन किया। इन विशेषताओं का विकास बाद में संत कवियों में मिलता है। माना जाता है कि ऐसे चौरासी(84) सिद्ध मिलते हैं। इनमें 14 सिद्धों की रचनाएँ उपलब्ध होती है। सिद्धों में पहले आने वाला सरहप्पा है। इनके अलावा शबरपा, लूइपा, डोंबिपा, कण्हपा, कुक्कुरिपा आदि प्रमुख हैं।

<u>सरहप्पा</u>(769ई) :- सरहपा हिन्दी का पहला कवि माना जाता है। वे सरोजवज्र, राहुलभद्र आदि नामों से भी जाने जाते हैं। इनके द्वारा रचित 32 ग्रन्थ माने गये हैं जिनमें 'दोहाकोष' प्रसिद्ध है।उनकी भाषा सरल एवं गेय है। उनकी चिंतन पद्धति में धर्म की परंपरागत रूढ़ियों और बन्धनों को तोडने की विद्रोही प्रवृत्ति मिलती है।

<u>शबरपा</u>(780ई) :- शबरपा ने सरहपा से ज्ञान पाया था। शबरों के समान जीवन बिताने के कारण ये शबरपा कहलाये। इनकी प्रसिद्ध रचना है 'चर्यापद'। ये मायामोह को त्यागकर सहज जीवन पर बल देते हैं। और उसी को महासुख की प्राप्ति का मार्ग बताते हैं।

<u>लूइपा</u> :- वे शबरपा के शिष्य थे। चौरासी सिद्धों में इनका स्थान सबसे ऊँचा माना जाता है।लूइपा के प्रभाव से प्रभावित होकर उडीसा के राजा और मंत्री उनके शिष्य बन गये थे।

<u>डोंबिपा</u>(840) :- ये मगध के क्षत्रिय थे। इनकी इक्कीस रचनाएँ हैं जिनमें 'डोम्बिगीतिका', 'योगचर्या' और 'अक्षरद्विकोपदेश' मुख्य हैं।

कण्हपा(820):- सिद्धों में कण्हपा सबसे अधिक पढ़े लिखे थे। इन्होंने सबसे अधिक (74) ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें अधिकांश दार्शनिक विषयों पर आधारित हैं। इन्होंने शास्त्रीय रूढ़ियों का खण्डन किया है।

कुक्कुरिपा:- कपिलवस्तु के ब्राह्मण वंश में कुक्कुरिपा का जन्म हुआ। इनके सोलह ग्रंथ मिलते हैं।

II. **जैन अपभ्रंश काव्य**

जैन साहित्य धार्मिक शिक्षा के उद्देश्य से रचा गया है। मध्य देश के पश्चिमी क्षेत्र में जैन साधुओं ने जैनमत का प्रचार करने केलिए हिन्दी में काव्य रचना की। कुछ जैन कवियों ने हिन्दुओं के रामायण, महाभारत आदि कथाओं के राम, कृष्ण आदि चरित्रों को अपने धार्मिक सिद्धान्तों के अनुरूप प्रस्तुत किया है। जैन महापुरुषों के चरित्र भी लिखे गये हैं। प्रमुख रूप से जैन कवि दो विभाग में आते हैं –

1) **प्रबन्ध रचनाकार** 2) **मुक्तक रचनाकार।**

प्रबन्ध काव्य ग्रन्थों की भाषा अपभ्रंश के निकट हैं जबकि रास साहित्य और मुक्तक रचनाएँ देशी भाषाओं के निकट हैं।

प्रबन्ध काव्य जैन कवियों में स्वयंभू, पुष्पदन्त और धनपाल आते हैं।

स्वयंभूदेव(स्वयंभू) :- आठवीं शताब्दी के कवि स्वयंभू ने प्रबन्ध काव्य की रचना की है। 'पउम चरिउ'(पद्म चरित) और 'टिठजेमी चरिउ'(अरिष्टनेमी चरित) उनके प्रमुख प्रबन्ध काव्य हैं। छन्द शास्त्र से सम्बन्धित स्वयंभूछन्दस की रचना भी उन्होंने की है। पउम चरिउ में संस्कृत के महाकाव्यों की परंपरा नियमों का पालन हुआ है। सर्वप्रथम स्वयंभू ने इसका आरंभ किया है। पउम चरिउ में राम की कथा है। उन्होंने जैन धर्म की प्रतिष्ठा के लिए राम कथा में परिवर्तन करके नये प्रसंगों में जोड दिया है। स्वयंभू 'अपभ्रंश का वात्मीकि' माना जाता है। 'अरिष्टनेमी चरित' में राम की कथा मिलती है।

पुष्पदंत:- दसवीं शताब्दी में जीवित पुष्पदंत जैन कवियों में प्रमुख है। स्वभाव से अभिमानी होने के कारण इनको 'अभिमान मेरू' उपनाम मिला था। उनका प्रसिद्ध काव्य 'महापुराण' है। उन्होंने इस काव्य के आदि पुराण-खण्ड में रामायण और महाभारत की कथा है। राम की कथा में बहुत परिवर्तन किये गये हैं। कृष्ण चरित वर्णन में वे विशेष सफल हुए हैं। इन्हें अपभ्रंश भाषा का व्यास माना जाता है। पुष्पदंत ने ब्राह्मणों का खुलकर विरोध किया है।

धनपाल : - लौकिक प्रबन्ध काव्य रचना करनेवाले जैन कवियों में कवि धनपाल का नाम आता है। उनका 'भविस्यत कहा' नामक काव्य बहुत प्रसिद्ध है। इसमें भविषदत्त नामक व्यापारी की कथा है।

जैन साहित्य के मुक्तक रचनाकारों में जोइन्दु और मुनि रामसिंह प्रमुख हैं।

जोइन्दु :- जोइन्दु का मुक्तक काव्य है 'परमात्म प्रकाश'। इनमें आध्यात्मिक विचारों का वर्णन मिलता है। योग सार उनका दूसरा काव्य है।

मुनि रामसिंह :- **अपभ्रंश में मुक्तक काव्य लिखनेवाला दूसरा कवि है। उनका प्रसिद्ध काव्य 'पाहुड दोहा' है। उसमें कवि ने धार्मिक विचारों का चित्रण किया है और योगियों से संबन्धित तत्वों और रहस्यवादी विचारों का चित्रण भी है।**

अन्य कवियों में हरिभद्रसूरि का 'नेमिनाथ चरिउ', विनयचन्द्रसूरि का 'नेमिनाइ चौपइ', आचार्य देवसेन का 'श्रावकाचर' आदि उल्लेखनीय है। जैन रास साहित्य में शालीभद्रसूरि का 'भरतेश्वर बाहुबली रास', कवि आसगु का 'चन्दनबाला रास', विजयसेन सूरि का 'रेवंतगिरि रास', जिनधर्म सूरि का 'स्थूलिभद्र रास' आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

III. **नाथपंथी काव्य**

सिद्धों के वामाचार भोग प्रधान योग साधना के विरुद्ध नाथ पंथियों की हठयोग साधना का आरंभ हुआ। इसलिए नाथ पंथ को सिद्धों का ही विकसित रूप माना गया है। नाथपंथ में हठयोग की प्रधानता है। नाथ संप्रदाय ने बाद के संत संप्रदाय को प्रभावित किया। इसलिए नाथ संप्रदाय को सिद्धों और संतों के बीच की कडी मानते हैं। नाथपंथी साधक ज़्यादा और कवि कम थे। अतः उनकी कविता में काव्यगत सुन्दरता अधिक नहीं है। नाथ संप्रदाय के प्रमुख कवि गोरखनाथ है। इनके पहले मत्स्येन्द्रनाथ, जालंधर नाथ आदि आते हैं।

गोरखनाथ :- **गोरखनाथ नाथ साहित्य का प्रवर्तक माने जाते हैं। वे मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य थे। लेकिन बाद में उनका विरोधी बन गये। तेरहवीं शती के आरंभ में गोरखनाथ ने साहित्य रचना की थी। उनके कुल 40 ग्रन्थ हैं। सबदी, पद, प्राण संकली, आत्मबोध आदि उनकी रचनाएँ हैं। उनकी कृतियों का संकलन हैं 'गोरखबानी'। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरुमहिमा, इन्द्रिय निग्रह, प्राण साधना, कुण्डलिनी जागरण, सून्य समाधी आदि कई बातों का वर्णन किया है।**

IV. **शुद्ध अपभ्रंश काव्य**

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में लौकिक जीवन के श्रृंगार और शौर्य के प्रसंगों को लेकर निम्नलिखित काव्य लिखे गये हैं।

संदेश रासक :- **लौकिक काव्यों के अन्तर्गत अब्दुर्रहमान का 'संदेश रासक' महत्वपूर्ण है। यह एक खण्डकाव्य है जो लोक जीवन की एक कल्पित कथा पर आधारित है। इसमें विरह की सूक्ष्म अनुभूतियों का सुन्दर चित्रण है। इसको विरह साहित्य का प्रतिनिधि काव्य माना जाता है। काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से संदेश रासक का अपभ्रंश साहित्य में विशेष स्थान है। इसका ऋतुवर्णन कालिदास के ऋतुवर्णन की परंपरा में आता है।**

प्राकृत पैंगलम :- **इसमें विद्याधर, शारंग, बब्बर, जज्जल आदि कई कवियों की रचनाओं का संकलन हैं। भाषा शास्त्र की दृष्टि से इसका अध्ययन होता है।**

ढोला-मारू-रा दूहा :- **यह मूलतः लोकभाषा काव्य है। इसमें ढोला राजकुमार और मार्वाणी राजकुमारी की प्रेम कथा है। यह लोक प्रसिद्ध प्रेमगाथा आदिकालीन श्रृंगार काव्य परंपरा की महत्वपूर्ण कडी है। पश्चिमीहिन्दी तथा राजस्थान में यह काव्य अत्यन्त लोकप्रिय रहा है। इसमें नारी हृदय की अत्यन्त मार्मिक व्यंजना मिलती है। प्रेम का सात्विक किन्तु सरस पक्ष इसमें विस्तार से प्रस्तुत हुआ है। ढोला-मारू-रा दूहा का मूल रूप दोहों में मिलता है।**

<u>वसंत विलास</u> :- इसके रचनाकार अज्ञात है। इसमें चौरासी दोहों में वसंतकाल और स्त्रियों पर उसके मादक प्रभाव का वर्णन किया गया है। स्त्री, पुरुष और प्रकृति में निरंतर बहनेवाली मदोन्मत्तता का इस काव्य में जैसा चित्रण मिलता है, वैसा रीतिकालीन कवि भी नहीं कर सके हैं।

<u>चन्दायन</u> :- कहा जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 'चन्दायन' लिखा गया है जिसके अन्य नाम हैं- चन्दायन, चन्दावत। डॉ.रामकुमार वर्मा के अनुसार, हिन्दी में प्रेम काव्य की परंपरा इस काव्य से शुरू होती है। बाद में सूफी प्रेम काव्य की परंपरा का श्रोत चन्दायन से ही मिलता है।

<u>चारण काल (आदिकालीन हिन्दी का दूसरा चरण)</u>

चारण काल में वीररसपूर्ण कृतियाँ मिलती हैं जो राजस्थानी मिश्रित हिन्दी में हैं। इसलिए इसको वीरगथाकाव्य भी कहते हैं। राजपूत राजाओं के दरबारी कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में उनकी वीरगथाएँ गायी थी। वे कवि चारण कहलाते थे। चारण कवि राजा के साथ लड़ाई भी करते थे। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में लेखनी लेकर वे राजा के साथ हमेशा रहते थे। रास, या रासक छन्द में लिखे गये ये काव्य गाने योग्य हैं। इनको रासो काव्य कहते हैं। चारण कवियों ने प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं।

a) **<u>प्रबन्ध काव्य</u>**

1) **<u>खुमान रासो</u> :- अधिकांश विद्वान मानते हैं कि दलपति विजय ने इसकी रचना की है। लेकिन इसकी प्रामाणिकता में संदेह है। आचार्य शुक्लजी ने इसको नवीं शताब्दी की रचना मानी है। क्योंकि इसमें नवीं सदी के चितौड नरेश खुमान के युद्धों का चित्रण है। यह पाँच हज़ार छन्दों का विशाल काव्य ग्रन्थ है।**

2) **<u>पृथ्वीराज रासो</u> :- आदिकाल के वीर काव्यों में यह सबसे महत्वपूर्म माना जाता है। इसका रचयिता चन्दबरदायी है। चंद पृथ्वीराज का सहयोगी और परम मित्र भी था। ऐसा प्रसिद्ध है कि वे पृथ्वीराज के साथ वि.सं.1206में पैदा हुए थे। काव्य, साहित्य, छन्दशास्त्र, ज्योतिष, पुराण नाटक आदि में उनका पूर्ण अधिकार था। छप्पय छन्द पर उनका विशेष अधिकार था। इसलिए उनको छप्पय राजा कहते थे।**

पृथ्वीराज रासो में पृथ्वीराज चौहान की वीरतापूर्ण जीवन कथा का वर्णन है। वीर और श्रृंगार रस की दृष्टि से यह काव्य महत्वपूर्ण है। नारी के रूपांकन में चन्द ने विशेष सफलता पायी है। कहा जाता है कि युद्ध में शहाबुद्दीन गोरी ने पृथ्वीराज की आँखें तोडी थी। फिर चंद के संकेत पर पृथ्वीराज ने शब्दभेदी बाण चलाकर गोरी का वध किया। पृथ्वीराज रासो अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी है जो पिंगल शैली में लिखी गयी है।

पृथ्वीराज रासो के चार संस्करण उपलब्ध है। इसलिए इसकी प्रामाणिकता पर वाद विवाद है। एक वर्ग इसे प्रामाणिक मानता है, दूसरा वर्ग पूर्णतः अप्रामाणिक मानता है तो तीसरा वर्ग अर्द्धप्रामाणिक मानता है। चन्द ने पृथ्वीराज के जीवन की घटनाओं का जैसा वर्णन किया है उसे देखकर स्पष्ट होता है कि वह पृथ्वीराज का समकालीन था। हो सकता है कि बाद के चारण कवियों ने इसमें कुछ घटनाओं को जोड दिया हो। उसके काव्य सौन्दर्य की अपेक्षा ऐतिहासिकता उतनी महत्वपूर्ण नहीं।

b) **<u>मुक्तक रासो काव्य</u>**

बीसलदेव रासो :- **'बीसलदेव रासो' वीरगाथा काल की प्रसिद्ध रचना है जो नरपति नाल्ह की रचना है। इसकी रचना** 1212 **में हुई थी। कहा जाता है कि कवि नरपति राजा विग्रह राजा चतुर्थ का समकालीन था। बीसलदेव रासो का नायक विग्रह राजा चतुर्थ है। यह एक विरह काव्य है जिसमें श्रृंगार की प्रधानता है। इसकी कथा मुक्तक शैली में कही गयी है।**

परमाल रासो :- **यह आल्हाखण्ड नाम से प्रचलित लोक गेय काव्य रचना है। इसके रचयिता कवि जगनिक है। वे कालिंजर के राजा परमार्दिदेव के दरबारी कवि थे। इसमें राजा परमाल की वीरता का वर्णन नहीं है। वल्कि उनके राज्य में आल्हा और ऊदल नामक दो वीर थे। उनकी वीरतापूर्ण लड़ायियों का वर्णन है। इसकी विशेष शैली आल्हा शैली से प्रसिद्ध हुई है।**

हम्मीर रासो :- **प्राकृत पैंगलम के आधार पर रामचन्द्रशुक्लजी ने हम्मीर रासो नामक एक कृति की कल्पना की। लेकिन इसकी कोई प्रामाणिक प्रति उपलब्ध नहीं है। शारंगधर इसके रचनाकार बताए जाते हैं।**

इनके अलावा नल्यसिंह द्वारा रचित 'विजयपाल रासो' और जयानक कवि द्वारा रचित 'पृथ्वीराज विजय' भी उपलब्ध है। भट्टकेदार कृत 'जयचंद प्रकाश' और मधुकर कवि कृत 'जयमयंक जसचंद्रिका' भी इसी कोटि में आती हैं लेकिन इनकी कोई प्रति प्राप्त नहीं है।

हिन्दी के आदिकाल में कुछ अन्य कवियों की रचनाएँ भी आती हैं। विद्यापति और अमीर खुसरो तो स्वतंत्र रूप से काव्य रचना करके आदिकाल में अलग स्थान प्राप्त किया है।

विद्यापति (1360 -1448**ई**) :- **विद्यापति संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली तीनों भाषाओं में रचना करनेवाले महान पंडित थे। वे हिन्दी में भक्ति और श्रृंगार के प्रवर्तक माने जाते हैं। 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' में उनका वीर कवि का रूप है। 'पदावली' में उनका श्रृंगारी रूप है और 'शैव सर्वस्वसार' में भक्त कवि का रूप है। वे मिथिला के राजा कीर्तिसिंह और शिवसिंह के दरबारी कवि थे। विद्यापति ने पदावली में राधाकृष्ण की प्रणय लीलाओं का अत्यन्त हृदयहारी वर्णन किया है। उसमें उनका श्रृंगारी रूप पूर्णतः उभर आया है। श्रृंगार के दोनों- संयोग और वियोग- का वर्णन इस ग्रन्थ में उपलब्ध है।**

अमीर खुसरो :- **अमीर खुसरो खडीबोली हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं। इनका पूरा नाम अबुलहसन यमीनुद्दीन था। अमीर खुसरो के पिता तुर्क थे और माँ हिन्दुस्तानी। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में दो संस्कृतियों, दो भाषाओं का संगम हैं। अमीर खुसरो मुगल दरबार के कवि थे। उन्होंने दिल्ली के शासन पर ग्यारह सुलतानों को बैठे देखा है। अपनी आँखों से गुलाम वंश का पतन, खिलजी वंश का उत्थान और तुग्लक वंश का आरंभ उन्होंने देखा।उन्होंने कविता की** 99 **किताबें लिखी हैं। इनमें 'किस्सा चाहा दरवेश' और 'खालिकबारी' विशेष महत्वपूर्ण है। तुर्की, अरबी, फारसी और हिन्दी का पर्याय कोष नामक ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध है। उनके साहित्य में हिन्दु मुस्लिम एकता का पहला प्रयास मिलता है। अनेक भाषाओं का प्रयोग करते हुए उन्होंने भाषा संबन्धी एकता का आदर्श भी प्रस्तुत किया है।**

5. **वीरगाथा काव्यों की सामान्य विशेषताएँ क्या-क्या हैं?**

आदिकाल के दूसरे चरण में वीरगाथा काव्यों की रचना हुई है। उनकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1) **संदिग्ध रचनाएँ– प्रायः सभी वीरगाथाओं की प्रामाणिकता संदेह की दृष्टि से देखी जाती है। इनमें निरंतर कई शताब्दियों तक परिवर्तन और परिवर्धन होते रहे हैं।**

2) **ऐतिहासिकता का अभाव– वीरगाथाओं के प्रसिद्ध चरित नायक का वर्णन शुद्ध इतिहास की कसौटी पर पूरा नहीं उतरता। इनमें इतिहास की अपेक्षा कल्पना का बाहुल्य है।**
3) **युद्ध वर्णन– युद्धों का वर्णन वीरगाथाओं का प्रमुख विषय है और यह सचीव बन पडा है। क्योंकि चारण कवि लेखनी के साथ तलवार भी पकडते थे।**
4) **संकुचित राष्ट्रीयता– चारण कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा का मुक्तकंठ से गान किया है। उस समय राष्ट्र शब्द से समूचा भारत का द्योतन नहीं बल्कि अपने-अपने प्रदेश एवं राज्य को ही ग्रहण किया गया।**
5) **वीर और श्रृंगार रस– वीरगाथाओं में वीर तथा श्रृंगार का अद्भुत सम्मिश्रण है। वीर रस का इतना सुन्दर परिपाक हुआ कि परवर्ती हिन्दी साहित्य में वीररस का इतना पुष्ट रूप नहीं है। युद्धों का मूल कारण नारी को कल्पित कर लिया गया। अतः श्रृंगार रस का भी इसमें जमकर वर्णन है।**
6) **प्रकृति-चित्रण– वीरगाथा काव्यों में प्रकृति का आलंबन और उद्दीपन दोनों रूपों का चित्रण हैं।**
7) **रासो शब्द–वीरगाथाओं के नाम के साथ रासो शब्द जुडा हुआ है जो काव्य शब्द का पर्यायवाची है। मूल रूप से रासक एक छन्द है जिसका प्रयोग अपभ्रंश साहित्य में संदेश रासक आदि में मिलता है।**
8) **काव्य के दो रूप– वीरगाथाएँ मुक्तक और प्रबन्ध दोनों रूपों में मिलती है। इन दोनों के अतिरिक्त उस साहित्य में दूसरा कोई रूप नहीं है।**
9) **जन जीवन से संपर्क नहीं– वीरगाथाओं में सामन्ती जीवन का चित्रण होने के कारण जन जीवन के साथ संबन्ध ही नहीं।**
10) **छन्द की विविधता– छन्दों का जितना विविध प्रयोग वीरगाथाओं में हुआ है, उतना उसके पूर्ववर्ती साहित्य में नहीं हुआ।**
11) **डिंगल और पिंगल भाषा– वीरगाथा काल की साहित्यिक राजस्थानी भाषा को डिंगल भाषा कहते हैं। यह वीरत्व के स्वर केलिए बहुत उपयुक्त भाषा है। उस समय की अपभ्रंश मिश्रित साहित्यिक ब्रज पिंगल कहा जाता है।**

UNIT - 3

भक्तिकाल और सन्त काव्य परंपरा

1) **भक्तिकाल में किन-किन रूपों में भक्ति का प्रचार हुआ?**
   ज्ञानाश्रयी भक्ति, प्रेमाश्रयी भक्ति, राम भक्ति, कृष्ण भक्ति आदि रूपों में।
2) **भक्तिकाल को कहाँ से कहाँ तक माना है?**
   चौदहवीं सदी के मध्य से सत्रहवीं सदी के मध्य तक माना है। शुक्लजी ने 1375 से 1700 तक का काल भक्तिकाल माना है।
3) **भक्तिकाल की विभिन्न परिस्थितियाँ किसप्रकार थी?**
   भक्तिकाल की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ प्रमुख हैं।

राजनीतिक परिस्थिति :- **राजनीतिक दृष्टि से भक्तिकाल को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। 1375 से 1583 तक के प्रथम भाग में दिल्ली पर तुग्लक और लोदी वंश के सुलतानों का शासन था। 1583 से 1700 तक के समय में मुगल वंश के बाबर, हुमयूँ, जहाँगीर, शाहजहाँ आदि का शासन था। यहाँ के देशी शासक लगातार इसका विरोध करते रहे। प्रारंभ के मुसलमान आक्रमणकारी लोगों पर कठोर अत्याचार करते थे तो अकबर जैसे शासक ने सहिष्णुता और उदारता दिखायी।**

सामाजिक परिस्थिति :- **भक्तिकाल में हिन्दुओं और मुसलमानों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदान-प्रदान शुरू हुआ। पहले हिन्दुओं और मुसलमानों में जो भेदभाव था, वह समाप्त होने लगा। धर्म, साहित्य, चित्रकला, वास्तुकला आदि क्षेत्रों में आदान-प्रदान होता था। उस समय हिन्दु- मुस्लिम विवाह भी देखने को मिलता है। प्रजा के सुख-दुख का ध्यान बादशाह रखते थे। गुजरात और दक्षिण में अकाल पडने पर, शाहजहाँ ने अनाज मुफ्त बाँट दिया। अधिकांश हिन्दू मुसल्मान बनने लगे। इस समय हिन्दुओं की आर्थिक दशा बुरी थी।**

धार्मिक परिस्थिति :- **भक्तिकाल में बौध धर्म की विकृत परंपरा के सिद्धों ने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये। बाद में नाथ संप्रदाय के लोगों ने सिद्धों की भक्ति को परिष्कृत रूप दिया। मध्यकाल में वैष्णव भक्ति की धारा तीव्र रूप से बहने लगी। दक्षिण भारत में इसकी गति तीव्र बनाने की अनुकूल परिस्थितियाँ थी। तमिलनाडु के आलवार संतों ने भक्ति का व्यापक प्रचार किया। लगभग इसी समय शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का प्रचार किया था। इसकी प्रतिक्रिया में अनेक दार्शनिक सिद्धान्त आए। मध्वाचार्य का 'द्वैतवाद', रामानुजाचार्य का 'विशिष्टाद्वैतवाद', निम्पार्काचार्य का 'द्वैताद्वैदवाद', वल्लभाचार्य का 'शुद्धाद्वैतवाद' आदि। बंगाल में महाप्रभु चैतन्य ने कृष्ण भक्ति का व्यापक प्रचार किया। स्वामी रामानंद ने सीता राम की उपासना का प्रचार किया। कुछ निदेशी धार्मिक परिस्थिति भी इस समय मिलती है। मुसलमान कवियों ने सूफी धर्म और अद्वैतवाद को मिलाकर नये भक्ति मार्ग का प्रचार किया।**

4) **भक्तिकालीन साहित्य कितने खण्डों में विभाजित किया गया है?**

भक्तिकाल में भक्ति दो रूप में मिलते हैं – निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। ईश्वर को निर्गुण और निराकार माननेवालों ने ज्ञान तत्व पर ज़्यादा बल दिया। उसकी भक्ति में ब्रह्म, जीव आदि तत्वों का चिन्तन मुख्य रूप से आता है। कबीर जैसे सन्त कवि इसके अन्तर्गत हैं। निर्गुण भक्ति को माननेवाले और कुछ लोगों ने प्रेम तत्व पर ज़्यादा बल दिया जो प्रेमाश्रयी शाखा के अन्तर्गत हैं। सगुण और साकार ईश्वर की उपासना करनेवाले भक्त कवियों के भी दो विभाग हैं – रामभक्त और कृष्णभक्त। तुलसी रामभक्त थे तो सूर कृष्णभक्त थे।

5) **निर्गुण भक्ति काव्य(संत काव्य) की प्रमुख विशेषताएँ क्या- क्या हैं?**

1. **निर्गुण ब्रह्म की उपासना**
2. **बहुदेववाद(अवतारवाद) का विरोध या अद्वैतवाद**
3. **संसार की नश्वरता का वर्णन**
4. **माया का विरोध**
5. **सद्गुरू का महत्व**

6. **जाति-पांत, ऊँच-नीच का विरोध**
7. **धार्मिक बाह्याडम्बरों और कर्मकाण्डों का निषेध**
8. **प्रेमप्रधान मानसिक भक्ति का वर्णन**
9. **रहस्यवादी भावना की अभिव्यक्ति**
10. **नामकरण, आत्मनिवेदन की अभिव्यक्ति**
11. **श्रृंगार और विरह भावना की अभिव्यक्ति**
12. **सामाजिक समरसता और जनजागरण की चेतना**
13. **जनसामान्य की सधुक्कडी भाषा का प्रयोग**
14. **दोहा, पद, मुक्तक आदि काव्य रूपों का प्रयोग।**

6) **संत परंपरा के प्रमुख कवि कौन-कौन हैं?**

<u>नामदेव</u> - नामदेव को संत परंपरा के प्रवर्तक कवि का श्रेय दिया जाता है क्योंकि कबीर के पहले विट्ठल संप्रदाय में निर्गुण उपासना चलती थी और कबीर के पहले नामदेव ने हिन्दी में निर्गुण उपासना से संबन्धित कई बातें लिखी हैं। 'आदि ग्रंथ' उनके द्वारा रचे गये पदों का संकलन है।

<u>कबीरदास</u> - निर्गुण संत कवि कबीर की प्रतिष्ठा एक महान समन्वयकारी विचारक एवं प्रतिभाशाली कवि के रूप में हैं। वे रामानन्द के शिष्य और सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। मध्ययुग के अन्य अनेक भक्त कवियों के समान कबीर का जीवन वृत्त भी अंधकारमय है। कबीर का महत्व इसमें है कि एक युगद्रष्टा और तत्वदर्शी कवि के रूप में स्वानुभूति पर आधारित प्रेम-प्रधान भक्ति को सर्वसाधारण के लिए जनभाषा में प्रस्तुत किया। साथ ही सामाजिक दृष्टि से धर्म, सम्प्रदाय, जाति, ऊँच-नीच का खण्डन कर सामाजिक समरसता केलिए जन-जागरण का कार्य किया। कबीर एकेश्वरवादी है। किन्तु उनका एकेश्वरवाद मुस्लिम एकेश्वरवाद से भिन्न है। कबीर द्वारा प्रतिपादित ईश्वर व्यापक है, वह समस्त संसार में रम रहा है। कबीर ने भक्ति और प्रेम के सहारे ब्रह्म से तादात्म्य करना चाहा है और वही शुद्ध भावनात्मक रहस्यवाद की सृष्टि हो जाती है। नाथ पंथियों के समान कबीर ने इन्द्रिय साधना, प्राणसाधना और मन साधना पर भी बल दिया है। कबीर ने हिन्दु और मुसलमानों की साधना की जटिल क्रियाओं, आडम्बरों, अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का कडा विरोध किया। 'बीजक' कबीर की प्रामाणिक रचना मानी गयी है। इसमें कबीर के उपदेशों का, उनके शिष्यों द्वारा संकलन है। बीजक के तीन भाग हैं – साखी, सबद, रमैनी।

<u>रैदास</u>– काशी में जन्मे रैदास का संत कवियों में सम्माननीय स्थान है। रैदास रामानन्द के शिष्य परंपरा में थे। कबीर में ओज, अक्खडता और प्रखरता थी तो रैदास शान्ति, संयम और विनम्रता के प्रतीक थे। वे जाति के चमार थे। रैदास का प्रभाव राजस्थान में अधिक है। मीराबाई ने भी गुरू के रूप में रैदास का उल्लेख किया है। उनकी भाषा ब्रज है जिसमें अवधी, राजस्थानी, खडीबोली और उर्दू-फारसी शब्दों का मिश्रण हैं।

<u>नामदेव</u>– सिख-धर्म के प्रवर्तक नामदेव का जन्म 1469ई में पंजाब के तलवंडी में हुआ था। नानक के काव्य में कबीर के समान ही गुरु महिमा, जाति पांत का विरोध, एकेश्वर वाद, सत्य, अहिंसा और स्वानुभूति पर बल दिया गया है। नानक की रचनाएँ 'गुरुग्रन्थ साहिब' में संकलित है। गुरु नानक की वाणी में एक अद्भुत प्रेरणादायिनी शक्ति है जो किसी अन्य मध्ययुगीन संत की वाणी में अनुपलब्ध है।

<u>दादूदयाल</u>– दादू पंथ के प्रवर्तक संत दादूदयाल का जन्म 1544ई में अहमदाबाद में हुआ था। कबीर उनके आदर्श थे। ये स्वभाव से बडे दयालू थे, अतः दादू दयाल कहलाये। इन्होंने ब्रह्म या परब्रह्म नाम का कोई

सम्प्रदाय चलाया जो दादू सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। 'हरेडबाणी' के नाम से उनकी रचनाओं का संग्रह प्रसिद्ध है। दादू की रचनाओं की संख्या बीस हज़ार कही जाती है।

संत काव्य धारा के अन्य कवियों में सुन्दरदास(1596**ई**), **मलूकदास**(1574**ई**), **दयाबाई**(1683**ई**), **सहजोबाई**(1683**ई**) **आदि उल्लेखनीय हैं।**

7) **"कबीर हिन्दी के रहस्यवादी कवि है" समर्थन कीजिए**?

कबीरहिन्दी साहित्य के आदि रहस्यवादी कवि माने जाते हैं। रहस्यवाद ब्रह्म से आत्मा के तादात्म्य का प्रकाशन है। रहस्यवाद की दो अवस्थाएँ हैं – 1) **भावात्मक रहस्यवाद** 2) **साधनात्मक रहस्यवाद। कबीर में रहस्यवाद के दोनों रूपों के दर्शन होते हैं। प्रथम अवस्था में परमात्मा की दिव्यज्योति के दर्शन से आत्मा आकर्षित होती है। कबीर अपने प्रियतम के अलौकिक सौन्दर्य पर मुग्ध है। द्वितीय अवस्था में परमात्मा से मिलने की आतुरता प्रकट की जाती है। कबीर ने मिलन की आतुरता का जिस कलात्मकता से और विरह वेदना का जिस मार्मिकता से वर्णन किया है, वह हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। उदा** –

"आँखडियां झाई पडी, पंथ निहारी निहारी,
जीभडियाँ छाल पड्या राम पुकारी पुकारी।"

कबीर के रहस्यवाद में आत्मा और परमात्मा का ऐक्य भी है। उदा –

"लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गई लाल।"

कबीर के रहस्यवाद पर शंकर के अद्वैतवाद का भी प्रभाव है।

UNIT - 4

हिन्दी सूफी काव्य या प्रेमाख्यानक काव्य

1. **सूफी या प्रेमाख्यानक काव्य से क्या तात्पर्य है**?

हिन्दी सूफी काव्य-धारा निर्गुण भक्ति काव्य की प्रमुख काव्य धारा है। जिसे प्रेमाख्यान काव्य, प्रेममार्गी शाखा, प्रेम काव्य भी कहते हैं। इसका वैचारिक आधार सूफी दर्शन है। सूफियों ने भारतीय कथाओं पर आधारित लौकिक प्रेम कथाओं द्वारा अलौकिक प्रेम का आभास दिया है। ये लौकिक प्रेम कथाएँ कल्पित भी है और ऐतिहासिक भी। सूफी काव्य वैचारिक दृष्टि से सूफी दर्शन से प्रभावित होते हुए भी पूर्ण रूप से भारतीय परंपरा के काव्य है।

2. **हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ क्या-क्या हैं**?
    1) **प्रेम तत्व की प्रधानता**
    2) **लौकिक प्रेम कथाओं का आधार**
    3) **लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना**
    4) **प्रकृति का विस्तृत वर्णन**
    5) **नायिका के सौन्दर्य वर्णन में नखशिख वर्णन**
    6) **प्रबन्धात्मक काव्य रूप**

7) **श्रृंगार के संयोग-वियोग पक्ष का विस्तार से अंकन**
8) **अवधी भाषा का प्रयोग**
9) **इतिवृत्तात्मक काव्य शैली का प्रयोग**
10) **चरित्र-चित्रण में मानव और मानवेतर –दो प्रकार के चरित्रों की सृष्टि है।**

3. **हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य का परिचय दीजिए?**

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से सूफी काव्य प्रवृत्ति के सर्वप्रथम कवि के रूप में मुल्ला दाऊद का नाम आता है। उनका 'चन्दायन'(1379ई.) सूफी काव्य धारा का प्रथम काव्य है। यह नायक लोरिक और चंदा के प्रणय पर आधारित प्रेमकथा है। चान्दायन नायिका प्रधान काव्य है।

कुतुबन–कुतुबन सोलहवीं शताब्दी के हैं। कुतुबन की 'मृगावती' हिन्दी की एक महत्वपूर्ण रचना है। इसमें चंदगिरी के राजा गणपतदेव के कुमार राजकुंवर तथा मृगावती की कथा को प्रस्तुत किया गया है।

मंझन– मंझनकृत 'मधुमालती' में कनेसर के राजा के पुत्र मनोहर और महासागर की राजकुमारी मधुमालती की प्रेम कहानी है। अन्य प्रेमाख्यानों के समान इसमें भी नायक के योगी वेश में आने, किसी सुन्दरी को बचाने आदि रूढ़ियों का निर्वाह हुआ है।

उसमान–'चित्रावली' की रचना उसमान ने 1623ई. में की। इसमें नेपाल नरेश के पुत्र सुजान और रूपनगर की राजकुमारी चित्रावली की प्रेम कहानी है।

जानकवि– सर्वाधिक प्रेमकाव्य लिखने का श्रेय जानकवि को है। उनका वास्तविक नाम न्यामत रवां था। उन्होंने भारतीय प्रेम कथाओं के साथ फारसी प्रेमकथाओं की ओर भी ध्यान दिया है।

मल्लिक मुहम्मद जायसी– प्रेमाश्रयी शाखा के सबसे विख्यात कवि जायसी है। 'पद्मावत' उनका महाकाव्य है। इसके अतिरिक्त जायसी ने 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'चित्रलेखा', 'कहरानामा' और 'मसलानामा' आदि रचनाएँ लिखीं। जायसी की कीर्ति का मुख्य कारण उनका पद्मावत है। इसमें जायसी ने सिंहलद्वीप के राजा गन्धर्वसेन की पुत्री पद्मावती और चितौड के राजा रत्नसेन की प्रेमकथा प्रस्तुत की है। पद्मावती अत्यंत सुन्दरी थी और उसके योग्य वर कहीं न मिलता था। उसके पास हीरामन एक तोता था। रत्नसेन ने इस तोते के मूँह से पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन सुना। उसने पद्मावती से मिलने केलिए निकल पडा और गन्धर्वसेन को पराजित कर पद्मावती से शादी की। दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन पद्मावती के सौन्दर्य के बारे में सुनकर मुग्ध होकर चितौड पर चढ़ाई करता है। हर वक्त जीत रत्नसेन की होती है। लेकिन उसने धोखा देकर रत्नसेन को बन्दी बनाया और दिल्ली पहूँचाया तो पद्मावती आकर कूटनीतिक चाल से रत्नसेन को मुक्त कराती है। अन्त में कुंभलनेर के राजा से युद्ध करते हुए रत्नसेन की मृत्यु हुई और दोनों रानियाँ पति के साथ सती हो जाती है।

यह एक श्रेष्ठ प्रेमाख्यानक काव्य है जिसमें खण्डकाव्य के सभी गुण विद्यमान है। इसमें जीवन के विभिन्न पक्षों का विस्तृत वर्णन है। इसमें जायसी का विरह वर्णन अत्यन्त श्रेष्ठ है। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है। श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का मर्मस्पर्शी चित्रण इसमें मिलता है। पद्मावत को

प्रतीकात्मक महाकाव्य भी कहा जाता है, क्योंकि उसके सभी पात्र दार्शनिक तत्वों के प्रतीक हैं। रत्नसेन - आत्मा, पद्मावती - परमात्मा, हीरामन तोता – गुरु और अलाउद्दीन – शैतान के प्रतीक हैं। पद्मावत भारत के ही नहीं विश्व के महाकाव्यों में एक है।

UNIT - 5

सगुण भक्ति काव्य और रामभक्ति शाखा

1) **सगुण भक्ति काव्य क्या है?**
   सगुण भक्ति में ईश्वर या परमात्मा के साकार रूप की उपासना होती है। इसपर आधारित काव्य को सगुण भक्ति काव्य कहते हैं।
2) **सगुण भक्ति काव्य की शाखाएँ क्या-क्या हैं?**
   सगुण भक्ति काव्य की दो शाखाएँ हैं – रामभक्ति शाखा और कृष्णभक्ति शाखा। रामभक्ति शाखा में अवतार-पुरुष राम को उपास्य देव स्वीकार कर रचना की गयी है तो कृष्णभक्ति शाखा में कृष्ण के लोकरंजक रूप को उपास्य देव स्वीकार कर रचना की गयी है।
3) **रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि और रचनाएँ क्या-क्या है?**
   <u>स्वामी दयानन्द</u>– उत्तर भारत में रामभक्ति के आचार्य के रूप में स्वामी दयानन्द आते हैं। राम के लोकरक्षक रूप की उपासना करने का श्रेय स्वामी दयानन्द को है। 'वैष्णव मताब्द भास्कर' और 'श्री रामार्जुन पद्धति' इनके विख्यात ग्रन्थ हैं।
   <u>अग्रदास</u>– ये रामानन्द शिष्य परंपरा में प्रमुख थे। रामभक्ति शाखा में रसिक भावना का समावेश इन्होंने किया। 'रामभजन मंजरी', 'अष्टयाम' आदि इनकी रचनाएँ हैं।
   <u>नाभादास</u>– ये तुलसीदास के समकालीन और अग्रदास के मुख्य शिष्य थे। भक्तमाल, रामाष्टयाम आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

ईश्वरदास– इनकी प्रमुख रचनाएँ 'भरत विलाप' और 'अंगदपैज' हैं।

तुलसीदास– इस परंपरा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। 'रामचरित मानस' इनके सर्वश्रेष्ठ कृति है।

4) **"तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि है"– समर्थन कीजिए ?**

रामभक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में तुलसीदास के नाम ही आते हैं। उनकी प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी। उनकी कृतियों में जीवन का सर्वांगपूर्ण चित्रण सरल और अकृत्रिम रूप में प्रस्तुत है। उनकी रचनाओं में विराट समन्वय की भावना है जो दार्शनिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक तौर पर बाँट सकते हैं। उनके समय में काव्य भाषा के दो रूप प्रचलित थे। उन्होंने दोनों ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं में काव्य सृष्टि की। साथ-साथ मुक्तक और प्रबन्ध दोनों रूपों में उन्होंने काव्य रचना की। उनके समय के पाँचों शैलियों- छप्पय पद्धति, गीत पद्धति, कवित्त-रवैया पद्धति, दोहा पद्धति, प्रबन्ध पद्धति का भी प्रयोग किया है। द्वैत और अद्वैत वादों का मिश्रण तुलसीदास के राम में मिलेंगे। सगुण और निर्णन मतवालों के बीच जो झगडा चल रहा था, उन लोगों को ऐसा एक राम का रूप देने से तुलसीदास दोनों के बीच समन्वय लाने में एक हद तक सफल रहे। दार्शनिक क्षेत्र में द्वैत और अद्वैत का समन्वय करने पर सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र में ज्ञान और भक्ति के समन्वय की रास्ता भी खुल गयी। ज्ञानमार्ग और भक्तिमार्ग का समन्वय करके निर्गुण और सगुण में एकता स्थापित कर, शिव और विष्णु को सम स्थान देकर तथा अन्य मतावलंबियों को उदारता की दृष्टि से देखकर उन्होंने अपने समय की धार्मिक समस्या को हल किया। भक्ति के क्षेत्र में भेद भाव समाप्त करने केलिए 'रामचरितमानस' में राम और अन्य देवताओं का संबन्ध स्पष्ट किया है। तुलसी ने सामाजिक समन्वय की साधना में एक आदर्श समाज की प्रतिष्ठा की है जिसमें समाज के भिन्न भिन्न अंग अपने वर्ण और आश्रम की मर्यादा का पालन करते हुए लोकहित की सामान्य साधना में रत रहते हैं। तुलसी निर्विवाद रूप से हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि है। डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने ठीक ही कहा है कि – हिन्दी रामभक्ति धारा में अनेक कवि हुए, किन्तु रामभक्ति धारा का साहित्यिक महत्व अकेले तुलसीदास के कारण हैं।

5) **तुलसीदास के प्रमुख ग्रन्थ और उनकी विशेषताएँ लिखिए?**

तुलसीदास के बारह प्रमुख ग्रन्थ हैं-

1) **रामलला नहछू– यह तुलसी की प्ररंभिक रचना है। अवधी में लिखी यह रचना काव्य शैली की दृष्टि से कमज़ोर है। किन्तु लोक काव्य परंपरा के अधिक निकट है जिसमें नेग पानेवाली स्त्रियों के हाव-भाव और कटाक्ष का वर्णन है।**

2) **रामाज्ञा प्रश्न– यह शुभ-अशुभ फल विचार से संबन्धित रचना है। इसके साथ राम कथा के प्रसंग भी है। प्ररंभिक रचना है।**

3) **जानकीमंगल– इसमें राम-सीता के विवाह का विस्तार से वर्णन किया गया है। यह स्त्रोत शैली में लिखा गया खण्ड काव्य है।**

4) **रामचरितमानस– तुलसीदास की समन्वय भावना का मुख्य आधार 'रामचरितमानस' है जिसमें उन्होंने राम और शिव दोनों को एक दूसरे का भक्त दिखाकर वैष्णव और शैव सम्प्रदाय को एक भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया है।**

5) **पार्वतीमंगल– यह एक मंगल काव्य है जिसमें पार्वती के जन्म से शिव से विवाह तक की कथा है और यह एक खण्डकाव्य है।**

6) **जानकीमंगल– इसमें राम-जानकी के विवाह का सुन्दर चित्रण है और यह भी एक सुन्दर खण्डकाव्य है।**

7) **गीतावली**– **इसमें रामचरितमानस की तरह सात काण्ड हैं, जिसमें राम के जीवन के मुख्य प्रसंगों का वर्णन है।**

8) **कृष्णगीतावली**– **इसमें कृष्ण की बाललीला से लेकर उद्धव-संवाद तक के कथा प्रसंगों का गीत विधा में वर्णन किया गया है।**

9) **विनयपत्रिका**– **रामचरितमानस के बाद तुलसी की रचनाओँ में 'विनयपत्रिका' का विशिष्ट महत्व है। इसमें भक्ति विनय के** 279 **छन्द हैं। भाषा साहित्यिक ब्रज है।**

10) **बरवै रामायण** – **इसे संक्षिप्त रामायण कहा जाता है। इसमें जिस उन्मुक्त भाव से सीता के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है, उसे देखकर कुछ लोग इसे तुलसी की रचना न मानते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि तुलसी ने यह रचना मुख्यतः अलंकार कौशल के प्रदर्शन के उद्देश्य से लिखी है।**

11) **दोहावली** – **अवधी भाषा की यह रचना तुलसी का संकलन माना जा सकता है, स्वतंत्र रचना नहीं।**

12) **कवितावली**– **तुलसी के आत्म चरित वर्णन की दृष्टि से यह एक प्रामाणिक रचना है, जिसमें तुलसी ने अपने समय के अकाल, महामारी और शारीरिक पीडा के साथ निजी जीवन के अनुभवों का वर्णन किया है।**

UNIT – 6

सगुणभक्ति काव्य – कृष्ण भक्ति शाखा

1) **कृष्ण भक्ति शाखा के बारे में आप क्या जानते हैं?**

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के अंतिम चरण में कृष्ण भक्ति साहित्य का विकास हुआ। निर्गुण पंथी कठोर साधना रीतियाँ आम लोगों को आसान नहीं लगा। इसलिए भारतीय पुराण और इतिहास में सर्वाधिक वर्णित श्रीकृष्ण की ओर लोग आकृष्ट हुए। इस शाखा के कवियों ने कृष्ण के लोकरंजक रूप को लेकर हिन्दी में सुन्दर काव्य लिखे। आचार्य वल्लभ के सूरदास जैसे आठ शिष्यों द्वारा कृष्ण भक्ति का बहुत अधिक प्रचार हुआ। उनकी कृतियाँ कृष्ण भक्ति साहित्य के रूप में प्रसिद्ध हुई। हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति का आन्दोलन चलाने का श्रेय वल्लभाचार्य को है। कृष्ण भक्ति साहित्य में कृष्ण प्रेम ही मुख्य विषय है।

2) **मध्यकाल में प्रचलित विभिन्न प्रमुख संप्रदाय कौन- कौन से हैं?**

मध्यकाल में स्वामी रामानुज 'विशिष्टाद्वैत' के आधार पर लोगों को आध्यात्मिक साधना का उपदेश देते थे। उन्होंने 'श्री सम्प्रदाय' का प्रवर्तन किया। रामानन्द ने 'रामानन्दी सम्प्रदाय' के रूप में भक्ति का उदार रूप दिखाया। 'पुष्टिमार्ग' के प्रवर्तक वल्लभाचार्य 'शुद्धाद्वैतवाद' पर आधारित सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे थे। बंगाल के महान आचार्य चैतन्य महाप्रभु वल्लभ के समकालीन थे। उन्होंने वैष्णव भक्ति को बंगाल में प्रचार किया। स्वामी हितहरिवंशजी ने 'राधावल्लभी संप्रदाय' का प्रवर्तन किया। इसमें कृष्ण की अपेक्षा राधा की पूजा और भक्ति महत्वपूर्ण है। स्वामी हरिदासी ने 'हरिदासी' अथवा 'सखी संप्रदाय' के द्वारा भक्ति का प्रचार किया। वे राधा और कृष्ण की उपासना करते थे। विष्णु गोस्वामी ने 'विष्णु संप्रदाय' चलाया जो कृष्ण भक्ति पर आधारित है। निंबार्क आचार्र का 'निंबार्क संप्रदाय' और माध्वाचार्य का 'माध्व संप्रदाय' भी कृष्ण भक्ति पर

आधारित है। इन सभी का आरंभ रामानुजाचार्य से हुआ था जिन्होंने विष्णु या नारायण की भक्ति पर बल दिया।

3) **पुष्टि मार्ग क्या है?**

कृष्ण भक्ति का हिन्दी साहित्य में जो रूप मिलता है, वह शुद्धाद्वैतवाद पर आधारित है। आचार्य वल्लभ का दर्शन शुद्धाद्वैतवाद है। दर्शन के क्षेत्र में जो शुद्धाद्वैत है, वही साधना के क्षेत्र में पुष्टिमार्ग है। यही कृष्ण भक्ति का दार्शनिक आधार है। शुद्धाद्वैत में यह माना जाता है कि जगत सत्य है। जीव और जगत भी ब्रह्म का अंश होने के कारण सत्य है। साधना के द्वारा जीव को आनन्द प्राप्त होता है। पुष्टि का अर्थ है अनुग्रह। पुष्टिमार्ग में भगवान की कृपा पर सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। पुष्टिमार्ग में तीन प्रकार के जीव माने जाते हैं – पुष्टि जीव, मर्यादा-जीव और प्रवाह-जीव। इनमें सबसे प्रमुख पुष्टि जीव हैं क्योंकि भगवान की कृपा पाकर वे उसके साथ नित्य लीला करते हैं। पुष्टिमार्गियों के विचार में श्रीकृष्ण ब्रह्म है। वे अपने भक्तों के साथ लीला किया करते हैं। पुष्टिमार्ग की भक्ति प्रेम लक्षणा भक्ति है।

4) **अष्टछाप किसे कहते हैं?**

पुष्टिमार्ग के साम्प्रदायिक विचार और अनुभूतियाँ हिन्दी के कुछ कवियों की कृतियों में मिलती हैं। इनको 'अष्टछाप' कहते हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने अष्टछाप की स्थापना की थी।उन्होंने वल्लभ की मृत्यु के बाद उनके चार शिष्यों और अपने चार शिष्यों को मिलाकर भक्तों की मण्डली बनायी। यह अष्टछाप के नाम से प्रसिद्ध है। इनमें आठ कवि हैं – कुंभनदास, सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी आदि।

5) **कृष्ण भक्ति कवियों की प्रमुख रचनाएँ क्या-क्या हैं?**

1) **सूरदास – सूरसागर, साहित्यलहरी, सूरसारावली।**
2) **कुंभनदास – रागकल्प्दुम, रागरत्नाकर।**
3) **कृष्णदास – फुटकर पदसंग्रह।**
4) **परमानन्ददास – परमानन्दसागर, दानलीला, ध्रुवचरित।**
5) **नन्ददास – अनेकार्थमंजरी, रूपमंजरी, रसमंजरी, विरहमंजरी, रुक्मणी मंगल, भँवरगीत, सुदामाचरित, रासपंचाध्यायी, सिद्धान्त पंचाध्यायी।**
6) **चतुर्भुजदास – चतुर्भुजकीर्तन संग्रह, कीर्तनावली, दानलीला।**
7) **गोविन्दस्वामी – गोविन्द स्वामी के पद।**
8) **छीतस्वामी – 200 पदों का संकलन**

6) **"सूरदास कृष्णभक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि है"– समर्थन कीजिए?**

कृष्ण भक्त कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोच्च है। वे वल्लभाचार्य के परम शिष्य और अष्टछाप के सर्वोच्च कवि है। सूरदास के अनेक रचनाओं में 'सूरसागर' ही उनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार है। इसकी रचना भागवत के बारहवें स्कन्ध के आधार पर हुई है। सूरसागर गेय मुक्तक काव्य है। उसकी पद रचना अत्यंत प्रौढ़ और अनुशासित है। सूर की काव्य कला और काव्य संवेदना का उत्कर्ष सूरसागर के पूर्वार्द्ध भाग में कृष्ण की

बालरूप वर्णन, मुरली स्तुति, राधा मिलन, कृष्ण विवाह, भ्रमरगीत आदि प्रसंगों में देखा जा सकता है। कृष्ण की बाल लीला वर्णन में सूर वात्सल्य के सम्राट कहे गए है। बाल मनोविज्ञान का कोई पक्ष उनके अन्तचक्षु से अनदेखा नहीं है। इसीप्रकार श्रीकृष्ण का सौन्दर्य वर्णन भी अद्‌वितीय है। सूरसागर में पुष्टिमार्गीय भक्ति को ही ग्रहण किया है। सूरसागर की भाषा ब्रज है जो माधुर्य गुण से ओत-प्रोत है। ब्रजभाषा को साहित्यिक गरिमा प्रधान करने का श्रेय सूर को ही जाता है। रस की दृष्टि से सूरसागर में मुख्यतः तीन रस हैं – शान्त, श्रृंगार और वात्सल्य। इसमें वात्सल्य रस का विस्तृत वर्णन है। गुलाबराय ने कहा है –"सूर का वात्सल्य रस-वर्णन बाल मनोविज्ञान का माथुर्यपूर्ण अध्ययन है। श्रृंगार के समस्त पश्रों का वर्णन सूरदास ने किया है। संयोग के पदों में श्रृंगार की मादकता है। वियोग के भीतर तीन दशाओं का स्पर्श किया है – मान, प्रवास और करुणात्मक स्थिति। प्रवास की स्थिति भ्रमरगीत में वर्णित है। यह सूर की मौलिक प्रतिभा का दृष्टान्त है।"

UNIT 7

®úÒÊiÉEòÉ±É

1. ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ {ÉÊ®úÎºlÉÊiÉªÉÉÄ Eèò°ÉÒ lÉÒ?

®úÒÊiÉEòÉ±É EòÒ º¨ÉªÉ º¨ÉÒ¨ÉÉ ¨ÉÉä]äõ iÉÉè®ú {É®ú ¶ÉÉ½þVÉ½þÉÄ Eäò ´Éè¦É´É{ÉÚhÉÇ ¶ÉÉºÉxÉ EòÒ º¨ÉÉÎ{iÉ +Éè®ú +Éè®ÆúMÉVÉä¤É Eäò |É¦ÉÉ´É{ÉÚhÉÇ ¶ÉÉºÉxÉ Eäò +É®Æú¦É ºÉä ±ÉäEò®ú |ÉlÉ¨É º´ÉÉvÉÒxÉiÉÉºÉÆOÉÉ¨É iÉEò ¨ÉÉxÉÒ VÉÉiÉÒ ½èþ ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò oùÎ¹]õ ºÉä ®úÒÊiÉEòÉ±É ¨ÉÖMÉ±ÉÉå Eäò ¶ÉÉºÉxÉ ´Éè¦É´É Eäò SÉ®ú¨ÉÉäiEò¹ÉÇ Eäò ºÉÉlÉ ½þÒ =kÉ®úÉäkÉ®ú ¿þÉºÉ +Éè®ú {ÉiÉxÉ EòÉ EòÉ±É ½èþ* ¶ÉúÉ½þVÉ½þÉÄ Eäò ¶ÉÉºÉxÉ ¨Éå ¨ÉÖMÉ±É ´Éè¦É´É +{ÉxÉÒ SÉ®ú¨Éþ ºÉÒ¨ÉÉ {É®ú lÉÉ* iÉÉVÉ¨É½þ±É +Éè®ú ¨ÉªÉÚ®ú ËºÉ½þÉºÉxÉ ¤ÉxÉ SÉÖEòÉ lÉÉ* ¶ÉÉ½þVÉ½þÉÄ Eäò ¤ÉÉnù ºÉkÉÉ ºÉÆPÉ¹ÉÇ ºÉä +¶ÉÉÎxiÉ EòÉ nùÉè®ú ¶ÉÖ¯û ½Öþ+É* +ÆOÉäWÉÉå Eäò VÉ¨ÉxÉä Eäò ¤ÉÉnù

¨ÉÖMÉ±É ¶ÉÉºÉxÉ EòÉ±É Ê´É±ÉÉºÉ EòÉ +xiÉ ½þÉä MÉªÉÉ*

ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò oùÎ¹]õ ºÉä ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÉä PÉÉä®ú +vÉ:{ÉiÉxÉ EòÉ ªÉÖMÉ Eò½þÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* ºÉÉ¨ÉxiÉ´ÉÉnùÒ |É¦ÉÉ´É SÉÉ®úÉå +Éè®ú lÉÉ* ¤ÉÉnù¶ÉÉ½þ, +¨ÉÒ®ú +Éè®ú ºÉÉ¨ÉxiÉÉå EòÉä JÉÖ¶É Eò®úxÉä EäòÊ±ÉB ºÉä`ö-ºÉÉ½þEòÉ®ú, ´ªÉÉ{ÉÉ®úÒ, ¸ÉÊ¨ÉEò-ÊEòºÉÉxÉ +ÉÊnù EòÉ ¶ÉÉä¹ÉhÉ Eò®úiÉä lÉä* +EòÉ±É +Éè®ú nÖÌ¦ÉIÉ ¨Éå ¦ÉÒ +É¨É VÉxÉiÉÉ ½þÒ jÉºiÉ ½þÉäiÉÒ lÉÒ* xÉÉ®úÒ Eäò |ÉÊiÉ ¦ÉÉäMÉ-Ê´É±ÉÉºÉ EòÒ oùÊ¹]õ |ÉvÉÉxÉ lÉÒ* EÖò±ÉÉ-Ê¨É±ÉÉÉEò®ú ºÉ¨ÉÉVÉ ¨Éå ¦ÉÉäMÉ-Ê´É±ÉÉºÉ EòÒ |É´ÉÞÊkÉ ¨ÉÖJªÉ lÉÒ*

®úÒÊiÉEòÉÊ±ÉxÉ ºÉ¨ÉªÉ ºÉÆºEÞòÊiÉ +Éè®ú ºÉ¦ªÉiÉÉ EòÒ oùÎ¹]õõ ºÉä ¿þÉºÉ EòÉ ªÉÖMÉ ½èþ* xÉèÊiÉEò ¤ÉxvÉxÉ føÒ±Éä {Éb÷ SÉÖEäò lÉä +Éè®ú +xÉÖÊnùxÉ ¤ÉÉèÊrùEò ¿þÉºÉ ½þÉä ®ú½þÉ lÉÉ* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå +xvÉÊ´É¶´ÉÉºÉÉå ¯ûÊføªÉÉä +Éè®ú ¤ÉÉÁÉb÷¦¤É®úÉå xÉä vÉ¨ÉÇ EòÉ ºlÉÉxÉ OÉ½þhÉ ÊEòªÉÉ lÉÉ* ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò oùÎ¹]õ ºÉä ªÉ½þ ªÉÖMÉ {ÉªÉÉÇ{iÉ ºÉ¨ÉÖrù lÉÉ CªÉÉåÊEò ºÉÉÊ½þiªÉ +Éè®ú Ê´ÉÊ´ÉvÉ Eò±ÉÉ+Éå EòÉä ®úÉVÉÉä+Éå EòÉ ºÉÆ®úIÉhÉ |ÉÉ{iÉ lÉÉ* ºÉ©ÉÉ]õ +Éè®ú ®úÉévéé º´ÉªÉÆ ¦ÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ-Eò±ÉÉ |Éä¨ÉÒ lÉä*

2. ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÒ |É¨ÉÖJÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ CªÉÉ CªÉÉ ½èþ?

(1)®úÒÊiÉÊxÉ°ü{ÉhÉ

®úÒÊiÉÊxÉ°ü{ÉhÉ EòÉ +lÉÇ ½èÞ ±ÉlÉhÉOÉxlÉ EòÉ ÊxÉ¨ÉÉÇhÉ* ®úÒÊiÉ¨ÉÖHò EòÊ´ÉªÉÉå EòÉä UôÉäb÷Eò®ú |ÉÉªÉ: =ºÉ EòÉ±É Eäò ºÉ¦ÉÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ±ÉlÉhÉOÉxlÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* =xÉEòÉ =qäù¶ªÉ EòÉ´ªÉ ®úÊºÉEòÉå EòÉä EòÊ´É Ê¶ÉlÉÉ näùxÉä Eäò ºÉÉlÉ ½þÒ =xÉEòÉ ¨ÉxÉÉä®ÆúVÉxÉ Eò®úxÉÉ ¦ÉÒ lÉÉ* ºÉÆºEÞòiÉ Eäò EòÉ´ªÉ¶ÉÉºjÉ OÉxlÉÉå EòÉä +ÉvÉÉ®ú ¤ÉxÉÉEò®ú EòÉ´ªÉÆÉMÉÉå Eäò ±ÉlÉhÉ ÊnùB MÉB iÉlÉÉ ºÉ®ú±É =nùÉ½þ®úhÉ ¦ÉÒ ÊnùB MÉB* ±ÉlÉhÉ OÉxlÉÉå Eäò EòÊ´É +ÉSÉÉªÉÇ EòÊ´É Eò½þ±ÉÉB*

(2) ¸ÉÆÞMÉÉÊ®úEòiÉÉ –®úÒÊiÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ |ÉÉhÉiÉi´É ¸ÉÞÆMÉÉÊ®úEòiÉÉ ½èÞ* <ºÉ¨Éå xÉÉªÉEò-xÉÉÊªÉEòÉ ¦Éänù, xÉJÉÊ¶ÉJÉ ´ÉhÉÇxÉ iÉlÉÉ xÉÉªÉEò-xÉÉªÉÒEòÉ Eäò ½þÉ´É¦ÉÉ´ÉÉå EòÉ Ê´ÉºiÉÉ®ú ´ÉhÉÇxÉ +ÉÊnù +ÉiÉä ½éÞ* ÞÉÉä®ú ¸ÉÞÆMÉÉÊ®úEòiÉÉ Eäò EòÉ®úhÉ Ê´É±ÉÉÊºÉiÉÉ{ÉÚhÉÇ =x¨ÉÖHò |Éä¨É EòÉ ´ÉhÉÇxÉ ½Öþ+É*

(3)+É±ÉÆEòÉÊ®úEòiÉÉ – +±ÉÆEòÉ®ú ¶ÉÉºjÉ Eäò YÉÉxÉ Eäò Ê¤ÉxÉÉ =ºÉ ºÉ¨ÉªÉ Eäò EòÊ´É EòÉä ºÉ¨¨ÉÉxÉ xÉ½þÓ Ê¨É±ÉiÉÉ lÉÉ* <ºÉÊ±ÉB +É±ÉÆEòÉÊ®úEòiÉÉ <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå JÉÚ¤É ¿Úò±ÉÒ ¿ò±ÉÒ* +±ÉÆEòÉ®ú ºÉÉvÉxÉ ºÉä ºÉÉvªÉ ¤ÉxÉ MÉªÉä* =ºÉEäò ¿Úò±Éº´É°ü{É EòÉ´ªÉ EòÉ +ÉxiÉÊ®úEò {ÉlÉ ÊxÉ¤É Ç±É {Éb÷ MÉªÉÉ*

(4)¦ÉÊHò +Éè®ú xÉÒÊiÉ –®úÒÊiÉEòÉ±É ¨Éå ¦ÉÊHò iÉlÉÉ xÉÒÊiÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ {ÉÆÊHòªÉÉÄ ªÉjÉ-iÉjÉ

Ê¤ÉJÉ®úÒ ½ÖÞ<Ç Ê¨É±É VÉÉiÉÒ ½èÞ* ®úÒÊiÉEòÊ´É³ÉÉå EòÒ ¦ÉÊHò ¨Éå ¦ÉÒ ¸ÉÆÞMÉÉÊ®úEòiÉÉ EòÉ +Æ¶É ½èÞ*

(5)¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÒ |ÉvÉÉxÉiÉÉ – ¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ <ºÉ ³ÉÖMÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉ ºÉÉÊ½ÞÎi³ÉEò ¦ÉÉ¹ÉÉ lÉÒ* ³É½Þ ¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÒ SÉ®ú¨ÉÉäzÉiÉÒ EòÉ EòÉ±É ½èÞ* ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÉä ¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ º´ÉhÉÇ³ÉÖMÉ Eò½ÞÉ VÉÉ ºÉEòiÉÉ ½èÞ*

(6)+É±ÉÆ¤ÉxÉ °ü{É ¨Éå |ÉEÞòÊiÉ–ÊSÉjÉhÉ

®úÒÊiÉEòÉ´³É ¨Éå |ÉEÞòÊiÉ EòÉ ÊSÉjÉhÉ +É±ÉÆ¦¤ÉxÉ °ü{É ¨Éå ½ÖÞ+É* |ÉEÞòÊiÉ EòÉ +É¸É³É °ü{É ¨Éå +lÉ´ÉÉ º´ÉiÉÆjÉ °ü{É ¨Éå ¤É½ÚÞiÉ ½ÞÒ Eò¨É ÊSÉjÉhÉ ½ÖÞ+É ½èÞ* |ÉEÞòÊiÉ EòÉ ÊSÉjÉhÉ xÉÉ³ÉEò +É®ú xÉÉÊ³ÉEòÉ EòÒ ¨ÉÉxÉÉÊºÉEò nù¶ÉÉ Eäò +xÉÖEÚò±É ½ÞÒ ÊEò³ÉÉ MÉ³ÉÉ ½èÞ*

(7)®úÒÊiÉ¨ÉÖHò EòÊ´ÉiÉÉ– ®úÒÊiÉEòÉ±É ¨Éå EÖòUô EòÊ´É³ÉÉå xÉä ®úÒÊiÉ °üÊgø³ÉÉå EòÉä i³ÉÉMÉEòÉ®ú ®úÒÊiÉ¨ÉÖHò EòÊ´ÉiÉÉ Ê±ÉJÉÒ ÊVÉºÉ¨Éå +xiÉº¿ÚìiÉ EòÒ |Éä®úhÉ lÉÒ* ®úÒÊiÉ¨ÉÖHò EòÊ´ÉiÉÉ ½ÞÒ ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÒ ¶ÉÖrùEòÊ´ÉiÉÉ Eò½ÞÒ VÉÉ ºÉEòiÉÒ ½èÞ*

3. ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÒ Ê´ÉÊ´ÉvÉ EòÉ´³É vÉÉ®úÉBÄ C³ÉÉ–C³ÉÉ ½èÞ?

®úÒÊiÉEòÉ±É ¨Éå ¨ÉÖJ³É °ü{É ºÉä iÉÒxÉ EòÉ´³É vÉÉ®úÉBÄ ½éÞ– (1)®úÒÊiÉ Ê°Érù (2)®úÒÊiÉ¤Érù (3)®úÒÊiÉ¨ÉÖHò* ®úÒÊiÉ¤Érù EòÉ´³ÉvÉÉ®úÉ ¨Éå ®ú°É, +±ÉÆEòÉ®ú, UÆônù

+ÉÊnù {É®ú ®úÒÊiÉ ÊxÉ°ü{ÉhÉ OÉxlÉÉå +lÉÉÇiÉ ±ÉlÉhÉOÉxlÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ ½Öþ<Ç* <xÉEäò EòÊ´É +ÉSÉÉªÉÇ EòÊ´É Eò½þ±ÉÉB ÊVÉxÉEòÉ =qäù¶ªÉ EòÊ´É Ê¶ÉlÉÉ lÉÉ* Eäò¶É´ÉnùÉºÉ <ºÉ {É®ÆÚ{É®úÉ Eäò |É´ÉiÉÇEò +ÉSÉÉªÉÇ EòÊ´É ½èþ* ¨ÉÊiÉ®úÉ¨É, Ê¦ÉJÉÉÊ®únùÉºÉ, ¦ÉÚ¹ÉhÉ, M´ÉÉ±É, {Énù¨ÉÉEò®ú, ¤ÉäxÉÒ |É´ÉÒxÉ, ®úºÉ±ÉÒxÉ <ºÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´É ½éþþ* ®úÒÊiÉ¤Érù EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ®úÒÊiÉ ÊxÉ°ü{ÉhÉ ¨Éå ºÉÆºEÞòiÉ EòÉ´ªÉ¶ÉÉºjÉ EòÉä +ÉvÉÉ®ú ¤ÉxÉÉªÉÉ ½èþ* ®úÒÊiÉÊºÉrù EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ®úÒÊiÉ ÊxÉ°ü{ÉhÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ ±ÉlÉhÉOÉxlÉ xÉ½þÓ Ê±ÉJÉä, ÊEòxiÉÖ ±ÉlÉhÉOÉxlÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú =iEÞò¹]õ EòÉ´ªÉ EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* Ê¤É½þÉ®úÒ <ºÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò ºÉ´ÉÇ¸Éä¹`ö EòÊ´É ½èþ* ºÉäxÉÉ{ÉiÉÒ, ®úºÉÉÊxÉÊvÉ, ÊuùVÉnäù´É +ÉÊnù <ºÉ ¸ÉähÉÒ Eäò EòÊ´É ½èþ* ®úÒÊiÉ¨ÉÖHò EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò EòÊ´ÉªÉÉå xÉä EòÉ´ªÉ ±ÉlÉhÉÉå ºÉä +±ÉMÉ +Éi¨ÉÉxÉÖ¦ÉÚÊiÉ{É®úEò º´ÉSUôxnù ¦ÉÉ´ÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* +iÉ: <ºÉä º´ÉSUôxnùEòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ ¦ÉÒ Eò½þÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* PÉxÉÉxÉxnù <ºÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò ºÉ´ÉÇ¸Éä¹`ö EòÊ´É ½èþ* PÉxÉÉxÉxnù <ºÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò ºÉ´ÉÇ¸Éä¹`ö EòÊ´É ½èþ* +É±É¨É, ¤ÉÉävÉÉ, `öÉEÖò®ú +ÉÊnù +xªÉ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ EòÊ´É ½éþ*

UNIT - 8

+ÉvÉÖÊxÉEòEòÉ±É – MÉtºÉÉÊ½þiªÉ

1. Ê½þxnùÒ ¨Éå MÉtùºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ÊEòºÉ |ÉEòÉ®ú ½Öþ+É?

Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò +ÉvÉÖÊxÉEò EòÉ±É ¨Éå ½þÒ MÉt EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+É* ±ÉäÊEòxÉ =ºÉEäò {É½þ±Éä Eäò ªÉÖMÉÉäÆ ¨Éå ¦ÉÒ MÉtù ¨Éå ®úSÉxÉÉBÄ ½þÉä ®ú½þÒ lÉÒ* ¨ÉÖJªÉ °ü{É ºÉä {ÉÚ´ÉÇ ªÉÖMÉÉå Eäò MÉtù Eäò iÉÒxÉ °ü{É ¨ÉÉxÉä MÉªÉä ½éþ –(1)¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ MÉt (2)®úÉVÉºlÉÉxÉÒ MÉt (3)JÉþ÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ MÉtù* ¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ MÉt EòÒ Gò¨É¤Érù {É®Æú{É®úÉ xÉ ½þÉäxÉä Eäò EòÉ®úhÉ =ºÉEòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ ºÉÖºÉÆMÉÊ`öiÉ +Éè®ú ¨ÉÆVÉÒ ½Öþ<Ç xÉ½þÓ ½èþ* ®úÉVÉºlÉÉxÉÒ MÉtù EòÉ +É®ÆÚ¦É* 12 ´ÉÒ ¶ÉiÉÉ¤nùÒ ºÉä ¨ÉÉxÉÉ MÉªÉÉ ½èþ* ±ÉäÊEòxÉ ®úÉVÉºlÉÉxÉÒ MÉtù EòÒ ¦ÉÒ +{ÉxÉÒ ºÉÒ¨ÉÉBÄ lÉÒ ÊEò ´É½þ ºÉÆºEÞòiÉ EòÒ ºÉ¨ÉÉºÉªÉÖHò ¶Éè±ÉÒ +Éè®ú +{ÉSÉÆ¶É ºÉä |É¦ÉÉÊ´ÉiÉ ½èþ* ¤ÉÉnù ¨Éå ´É½þ JÉþ÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ Eäò ÊxÉEò]õ +ÉiÉÉ MÉªÉÉ* JÉþ÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ MÉt Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå |Éäº É +Éä®ú {ÉjÉEòÉÊ®úiÉÉ, <ÇºÉÉ<Ç Ê¨É¶ÉxÉ®úÒ, ¿òÉä]Çõõ Ê´ÉÊ±ÉªÉ¨É EòÉì±ÉäVÉ iÉlÉÉ xÉ´ÉVÉÉMÉ®úhÉ EòÉ±É ¨Éå ºlÉÉÊ{ÉiÉ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò ºÉÆºlÉÉ+Éä EòÉ Ê´É¶Éä¹É ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ*

=zÉÒºÉ´ÉÓ ºÉnùÒ Eäò +É®ÆúÉ¦É ¨Éå ´ÉÉºiÉÊ´ÉEò °ü{É ºÉä JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ MÉt EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ ½Öþ+É* <ºÉ ºÉ¨ÉªÉ Ê½þxnùÒ MÉtù Eäò IÉäjÉ ¨Éå BEòÉBEò SÉÉ®ú =SSÉEòÉä]õÒ Eäò MÉt ±ÉäJÉEò +´ÉiÉÊ®úiÉ ½ÖþB <Æ¶ÉÉ +±±ÉÉJÉÉÄ, ¨ÉÖÆ¶ÉÒ ºÉnùÉºÉÖJÉ±ÉÉ±É, ±É±±ÉÖ±ÉÉ±É iÉlÉÉ ºÉnù±ÉÊ¨É¸É*

<Æ¶ÉÉ +±±ÉÉJÉÉÄ- ªÉä Ênù±±ÉÒ ¨Éå ®ú½þiÉä lÉä* ªÉä =nÖÇù Eäò |ÉÊºÉrù EòÊ´É lÉä* ±ÉäÊEòxÉ =x½þÉåxÉä +{ÉxÉÒ =nùªÉ¦ÉÉxÉ SÉÊ®úiÉ ªÉÉ ®úÉxÉÒ EäòiÉÉEòÒ EòÒ Eò½þÉxÉÒ EòÒ ®úSÉxÉÉ Ê´É¶ÉÖrù Ê½þxnù´ÉÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå EòÒ ½èþ* Ê½þxnùÒ Eäò {É½þ±Éä Eò½þÉxÉÒEòÉ®ú ½þÉäxÉä EòÉ ¸ÉäªÉ =xÉEòÉä Ê¨É±ÉÉ ½èþ* JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ ¨Éå +¨ÉÒ®ú JÉÖºÉ®úÉä EòÉ VÉÉä ºlÉÉxÉ ½èþ ´É½þÒ ºlÉÉxÉ JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ MÉt Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ ¨Éå <Æ¶ÉÉ +±±ÉÉJÉÉ EòÉä ½èþ*

¨ÉÖÆ¶ÉÒ ºÉnùÉºÉÖJÉ±ÉÉ±É –ªÉä Ênù±±ÉÒ Eäò ÊxÉ´ÉÉºÉÒ lÉä +Éè®ú EÆòò{ÉxÉÒ EòÉ xÉÉèEò®úÒ Eò®úiÉä lÉä* =x½þÉåxÉä ¸ÉÒ¨ÉnùÂ ¦ÉÉMÉ´ÉiÉ EòÉ +xÉÖ´ÉÉnù "ºÉÖJÉ ºÉÉMÉ®ú' xÉÉ¨É ºÉä ÊEòªÉÉ ½èþ* JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ EòÉ {ÉÊ®ú¨ÉÉÌVÉiÉ °ü{É <ºÉ¨Éå Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ*

±É±±ÉÖ±ÉÉ±É– ªÉä +ÉOÉÉ Eäò ÊxÉ´ÉÉºÉÒ lÉä +Éè®ú ¡òÉä]ÇõÊ´ÉÊ±ÉªÉ¨É EòÉì±ÉäVÉ Eäò +vªÉÉ{ÉEò lÉä* "ËºÉ½þÉºÉxÉ ¤ÉkÉÒºÉÒ' ¤ÉèiÉÉ±É {ÉSSÉÒºÉÒ' VÉèºÉä MªÉÉ®ú½þ OÉxlÉ =x½þÉåxÉä Ê±ÉJÉä ½èþ* ¦ÉÉMÉ´ÉiÉ Eäò nù¶É¨É ºEòxvÉ Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú "|Éä¨É

ºÉÉMÉ®ú' xÉÉ¨ÉEò ®úSÉxÉÉ EòÉ ÊxÉ¨ÉÉÇhÉ =x½þÉåxÉä ÊEòªÉÉ VÉÉä Ê½þxnùÒ MÉt Eäòù lÉäjÉ ¨Éå Ê´ÉÊ¶É¹]õ ½èþ* ¥ÉVÉÊ¨ÉÊ¸ÉiÉ JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ EòÉ |ÉªÉÉäMÉ <ºÉ¨Éå ½èþ*

ºÉnù±É Ê¨É¸É – Ê¤É½þÉ®ú Eäò ÊxÉ´ÉÉºÉÒ ºÉnù±ÉÉÊ¨É¸É ¦ÉÒ ¿òÉä]Çõ Ê´ÉÊ±ÉªÉ¨É EòÉÄ±ÉäVÉ ¨Éå EòÉ¨É Eò®úiÉä lÉä* "SÉxpùÉ´ÉiÉÒ' ®úÉ¨ÉSÉÊ®újÉ +ÉÊnù +É{ÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½èþ* ªÉVÉÖ´Éænù Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú "Eò`öÉä{ÉÊxÉ¹Énù' ¨Éå ´ÉìhÉiÉ xÉÊSÉEäòiÉÉ EòÒ Eò½þÉxÉÒ EòÉ JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ MÉtù ¨Éå °ü{ÉÉxiÉ®ú ½èþ "SÉxpùÉ´ÉiÉÒ'* "®úÉ¨ÉSÉÊ®úiÉ' "+vªÉÉi¨É ®úÉ¨ÉÉªÉhÉ' EòÉ JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ +xÉÖ´ÉÉnù ½èþ*

JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä VÉxÉ¨É näùxÉä EòÉ ¸ÉäªÉ <x½þÓ SÉÉ®úÉå EòÉä ½þÒ Ê¨É±ÉÉ ½èþ* <xÉ SÉÉä®úÉå ¨Éå ºÉä MÉtù Eäò |É´ÉiÉÇxÉ EòÉ ¸ÉäªÉ ÊEòºÉEòÉä Ênùª ÉÉ VÉÉªÉ <ºÉEäò ¤ÉÉ®äú ¨Éå ¶ÉÖC±ÉÉVÉÒ xÉä ªÉÉå Eò½þÉ ½èþ - ""+ÉvÉÖÊxÉEò Ê½þxnùÒ EòÉ {ÉÚ®úÉ +É¦ÉÉºÉ ¨ÉÖÆ¶ÉÒ ºÉnùÉºÉÖJÉ +Éè®ú ºÉnù±ÉÉÊ¨É¸É EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå ½þÒ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ*"

2. Ê½þxnùÒ MÉtù Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå <ÇºÉÉ<ªÉÉå EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ?

Ê½þxnùÒ MÉt EòÉä Ê´ÉEòÊºÉiÉ Eò®úxÉä ¨Éå <ÇºÉÉ<Ç {ÉÉnùÊ®úªÉÉä xÉä ¤É½ÖþiÉ ¤Éb÷É ªÉÉäMÉnùÉxÉ Ênùª ÉÉ* JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ ºÉÉvÉÉ®úhÉ VÉxÉiÉÉ EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ lÉÒ* <ºÉÊ±ÉB =x½þÉåxÉä +{ÉxÉä vÉ¨ÉÇ OÉxlÉÉä Eäò

+xÉÖ´ÉÉnù, ´ªÉÉJªÉÉxÉ, ±ÉäJÉ iÉlÉÉ {ÉÉ`ö¬{ÉÖºiÉEåò Ê½þxnùÒ ¨Éå |ɺiÉÖiÉ EòÒ* {É®úÉälÉ °ü{É ºÉä Ê½þxnùÒ MÉtù Eäò Ê´ÉEòɺÉ ¨Éå ªÉ½þ ºÉ½þÉªÉEò ½Öþ+É* =x½þÉåxÉä ªÉ½þÉÄ Eò<Ç ¨ÉÖpùùhÉÉ±ÉªÉ ºlÉÉÊ{ÉiÉ ÊEòªÉä ÊVÉxɺÉä +xÉäEò {ÉÖºiÉEåò +Éè®ú {ÉjÉ-{ÉÊjÉEòÉBÄ |ÉEòÉʶÉiÉ ½Öþ<Ç* "¤ÉÉ<ʤÉ±É' EòÉ Ê½þxnùÒ ¨Éå +xÉÖ´ÉÉnù ÊEòªÉÉ +Éè®ú +É¨É ±ÉÉäMÉÉå ¨Éå ¤ÉÉÄ]õÉ* <ǺÉÉ<Ç Ê¨É¶ÉxÉÊ®úªÉÉå xÉä näù¶É Eäò Ê´ÉʦÉxxÉ ¦ÉÉMÉÉå ¨Éå {ÉÞlÉÉEò {ÉÞlÉÉEò ºÉÆºlÉÉ+Éå EòÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ EòÒ* <xÉ ºÉÆºlÉÉ+Éå xÉä vÉ¨ÉÇ EòÒ ={ÉÉºÉxÉÉ +Éè®ú ʺÉrùÉxiÉÉå ºÉä ºÉ¨¤ÉÎxvÉiÉ +xÉäEò OÉxlÉÉå EòÉ +xÉÖ´ÉÉnù ÊEòªÉÉ* "ÊGòʶSɪÉxÉ Ê±É]õ®úú®úÒ ºÉÉäºÉÉªÉ]õÒ', ÊGòʶSɪÉxÉ ´ÉxÉÉÇEÖò±É®ú BVÉÖEäò¶ÉxÉ ºÉÉä¨ÉɪÉ]õÒ +ÉÊnù ºÉÆºlÉÉ+Éå xÉä MÉtù Eäò Ê´ÉEòɺÉ ¨Éå ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ÊEòªÉÉ* <ǺÉÉ<ªÉÉå xÉä Ê´ÉtÉ±ÉªÉÉå EòÒ Ê¶ÉIÉÉ EäòÊ±ÉB ¦ÉÚMÉÉä±É, <ÊiÉ½þɺÉ º´ÉɺlªÉ +ÉÊnù Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú OÉxlÉÉå EòÉ |ÉEòɶÉxÉ ÊEòªÉÉ* +|ÉiªÉIÉ°ü{É ºÉä Ê½þxnùÒ MÉtù Ê´ÉEòʺÉiÉ +Éè®ú {ÉÊ®ú¨ÉÉÌVÉiÉ ½þÉäiÉÉ VÉÉ ®ú½þÉ lÉÉ* =xÉEäò uùÉ®úÉ näù¶É Eäò Ê´ÉʦÉxxÉ +ÆSÉ±ÉÉå ¨Éå Ê¶ÉIÉÉ |ɺÉÉ®ú EäòÊ±ÉB ¤É½Öþi ºÉä ºEÚò±É JÉÉä±Éä MÉB* Ê´ÉrùÉ±ÉªÉÉå ¨Éå VÉxɦÉɹÉÉ+Éå Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä Ê¶ÉIÉÉ nùÒ VÉÉiÉÒ lÉÒ* {ÉÉnùÊ®úªÉÉå uùÉ®úÉ ÊEòªÉä MɪÉä <xÉ

EòÉªÉÕ ºÉä näù¶ÉÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ+Éå EòÉ ¨É½þi´É ¤ÉgøÉ +Éè®ú JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ Ê½þxnùÒ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+É* xÉÉMÉ®úÒ Ê±É{ÉÒ ¨Éå ºÉÖxnù®ú]õÉ<{É ¦ÉÒ <ÇºÉÉ<Ç vÉ¨ÉÇ Eäò |ÉSÉÉ®ú Eäò ¿ò±Éº´É°ü{É Ê´ÉEòºÉÒiÉ ½Öþ+É?

3) JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå ¿òÉä]Çõ Ê´ÉÊ±ÉªÉ¨É EòÉÄ±ÉäVÉ EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ?

ºÉxÉÂ 1900<Ç ¨Éå ¨ÉÉÊEò´ÉÇºÉ ´Éä±ÉäVÉ±ÉÒ xÉä ¿òÉä]Çõ Ê´ÉÊ±ÉªÉ¨É EòÉÄ±ÉäVÉ EòÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ EòÒ* EÆò{ÉxÉÒ Eäò ÊºÉÊ´É±É ºÉ´ÉÇ]Âõ ºÉ EòÉä iÉèªÉÉ®ú Eò®úxÉä EäòÊ±ÉB <ºÉEòÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ EòÒ lÉÒ* <ºÉ EòÉÄ±ÉäVÉ ¨Éå +®ú¤ÉÒ, ¿òÉ®úºÉÒ, ºÉÆºEÞòiÉ, Ê½þxnÖùºiÉÉxÉÒ, ¤ÉÆMÉ±ÉÉ, iÉä±ÉÖMÉÖ, +lÉÇ¶ÉÉºjÉ, MÉÊhÉiÉ +ÉÊnù Ê´É¹ÉªÉÉå EòÒ =SSÉÊ¶ÉlÉÉ EòÒ ´ªÉ´ÉºlÉÉ EòÒ MÉªÉÒ lÉÒ* <ºÉ EòÉÄ±ÉäVÉ EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉxÉÒÊiÉ <Çº]õ <îxb÷ªÉÉ EÆò{ÉxÉÒ EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉxÉÒÊiÉ ºÉä +Ê¦ÉxxÉ ®ú½þÒ ½èþ* Ê½þxnùÒ JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå EòÉÄ±ÉäVÉ Eäò ±É±±ÉÖ±ÉÉ±É, ºÉnù±ÉÊ¨É¸É, MÉÆMÉ|ÉºÉÉnù ¶ÉÖC±É, xÉ®úÉËºÉ½þ, ºÉîSSÉnùÉxÉxnù, JªÉÉ±ÉÒ®úÉ¨É, nùÒxÉ¤ÉxvÉÖ, ¶Éä¹É¶ÉÉºjÉÒ +ÉÊnù {ÉÆÊb÷iÉÉå EòÉ xÉÉ¨É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* <x½þÉåxÉä ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå ºÉ®ú±ÉiÉÉ ºÉ®úºÉiÉÉ, ¨ÉÉvÉÖªÉÇ BÆ´É +ÉäVÉ ±ÉÉxÉä EòÒ EòÉäÊ¶É¶É EòÒ* ±É±±ÉÚ±ÉÉ±É EòÒ "|Éä¨É ºÉÉMÉ®ú' Ê´É¶Éä¹É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* EòÉÄ±ÉäVÉ Eäò ´ÉÊ®ú¹`ö +vªÉÉ{ÉEòÉå xÉä näù¶É ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå {ÉÉ`ö¬{ÉÖºiÉEåò, EòÉä¶É

+Éè®ú ´ªÉÉEò®úhÉ iÉèªÉÉ®ú Eò®úxÉä ±ÉMÉä iÉÉä ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ+Éå EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ¦ÉÒ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ*

4) JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå +ÉªÉÇºÉ¨ÉÉVÉ, ¥ÉÀºÉ¨ÉÉVÉ +Éè®ú xÉÉMÉ®úÒ |ÉSÉÉÊ®úhÉÒ ºÉ¦ÉÉ EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ?

Ê½þxnùÒ MÉt Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå +ÉªÉÇºÉ¨ÉÉVÉ EòÉ ¦ÉÒ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ* º´ÉÉ¨ÉÒ nùªÉÉxÉÉxÉnùVÉÒ +ÉªÉÇ ºÉ¨ÉÉVÉ Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä Ê½þxnÖù+Éå EòÉä ºÉÆPÉÊ]õiÉ Eò®úxÉä EòÉ |ÉªÉixÉ ÊEòªÉÉ* MÉÖVÉ®úÉiÉÒ ½þÉäiÉä ½ÖþB ¦ÉÒ =x½þÉåxÉä Ê½þxnùÒ EòÉä |ÉSÉÉ®ú EòÉ ¨ÉÉvªÉ¨É ¤ÉxÉÉªÉÉ* =x½þÉåxÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå "ºÉiªÉÉÉlÉÇ |ÉEòÉ¶É' xÉÉ¨ÉEò OÉxlÉ Ê±ÉJÉÉ* +ÉªÉÇºÉ¨ÉÉVÉ xÉä º´É¦ÉÉ¹ÉÉ, º´ÉvÉ¨ÉÇ, º´Énäù¶É BÆ´É º´É®úÉVªÉ EäòÊ±ÉB ´ªÉÉ{ÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉ ÊEòªÉÉ* nùªÉÉxÉÉxÉnùVÉÒ +{ÉxÉÒ ¦ÉÉ¹ÉhÉ Ê½þxnùÒ ¨Éå näùiÉä lÉä* +ÉªÉÇ ºÉ¨ÉÉVÉ Eäò ºÉnùºªÉÉå EäòÊ±ÉB Ê½þxnùÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÒ VÉÉxÉEòÉ®úÒ +ÊxÉ´ÉÉªÉÇ lÉÉ* Ê½þxnùÒ |ÉSÉÉ®ú EäòÊ±ÉB =x½þÉåxÉä ºÉÉ{iÉÉÊ½þEò ºÉiºÉÆMÉ EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ Ê½þxnùÒ ¤ÉxÉÉªÉÒ* Ê½þxnùÒ {ÉÖºiÉEòÉå BÆ´É {ÉjÉ-{ÉÊjÉEòÉ+Éå Eäò |ÉEòÉ¶ÉxÉ =x½þÉåxÉä ÊEòªÉä*

®úÉ¹]ÅõÒªÉ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ EòÉä VÉÉMÉÞxÉ Eò®úxÉä +Éè®ú ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò SÉäiÉxÉÉ EòÉä MÉÊiÉ¶ÉÒ±É Eò®úxÉä EäòÊ±ÉB 1828<Ç ¨Éå Eò±ÉEòkÉÉ ¨Éå ¥ÉÀºÉ¨ÉÉVÉ EòÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ

½Öþ<Ç* <ºÉEäòÊ±ÉB =xÉEòÉä +ÉÊJÉ±É ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÆ{ÉEÇò ¦ÉÉ¹ÉÉ Ê½þxnùÒ EòÉ +É¸ÉÉªÉ ±ÉäxÉÉ {Éb÷É* ®úÉVÉ®úÉ¨É¨ÉÉä½þxÉ ®úÉªÉ º´ÉªÉÆ Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê±ÉJÉiÉä lÉä +Éè®ú nÚùºÉ®úÉå EòÉä |ÉÉäiºÉÉÊ½þiÉ Eò®úiÉä lÉä* ºÉxÉ 1926 ¨Éå "¤ÉÆMÉnÚùiÉ' xÉÉ¨ÉEò {ÉjÉ =x½þÉåxÉä ÊxÉEòÉ±ÉÉ ÊVÉºÉ¨Éå BEò {ÉÞ¹`ö JÉÊb÷¤ÉÉä±ÉÒ EäòÊ±ÉB ÊnùªÉÉ MÉªÉÉ lÉÉ* =xÉEäò +xÉÖªÉÉÊªÉªÉÉå xÉä ¦ÉÒ =xÉEòÉ ¨ÉÉMÉÇ +{ÉxÉÉ Ê½þxnùÒ Eäò ´ªÉÉ{ÉEò |ÉSÉÉ®ú ÊEòªÉÉ*

®úÉ¹]Åõ¦ÉÉ¹ÉÉ Ê½þxnùÒ Eäò näù¶É´ªÉÉ{ÉÒ |ÉSÉÉ®ú Eäò =qäù¶ªÉ ºÉä ºÉxÉ 1863 ¨Éå xÉÉMÉ®úÒ |ÉSÉÉÊ®úhÉÒ ºÉ¦ÉÉ EòÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ EòÉ¶ÉÒ ¨Éå ½Öþ<Ç* ¤ÉÉ¤ÉÖ ¶ªÉÉ¨É ºÉÖxnù®únùÉºÉ, {ÉÆ.®úÉ¨ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É VÉèºÉä Ê´ÉuùÉxÉÉå Eäò ºÉÆ®úlÉhÉ ¨Éå {É±Éä ªÉ½þ ºÉ¦ÉÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ Eäò |ÉSÉÉ®ú |ÉºÉÉ®ú Eò®úiÉä ®ú½äþ* Ê½þxnùÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ iÉlÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ ±ÉäJÉxÉ, Eäò¶É ÊxÉ¨ÉÉÇhÉ, |ÉÉSÉÒxÉ {ÉÖºiÉEòÉå EòÒ ½þºiÉÊ±ÉÊJÉiÉ |ÉÊiÉªÉÉå EòÒ JÉÉäVÉ +ÉÊnù ¨Éå ºÉ¦ÉÉ vªÉÉxÉ ÊnùªÉÉ* xÉMÉ®úÒ |ÉSÉÉÊ®úhÉÒ {ÉÊjÉEò iÉiEòÉÊ±ÉxÉ {ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå |É¨ÉÖJÉ ºlÉÉxÉ ÊxÉ¦ÉÉxÉä´ÉÉ±ÉÉ lÉÉ* "{ÉÞI´ÉÒ®úÉVÉ®úÉºÉÉä', "¤ÉÒºÉ±Énäù´É®úÉºÉÉä' VÉèºÉä Eò<Ç OÉÆlÉÉå EòÉ |ÉEòÉ¶ÉxÉ ºÉ¦ÉÉ xÉä ÊEòªÉÉ*

<ºÉ|ÉÉEòÉ®ú Ê½þxnùÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ Eäò |ÉSÉÉ®ú ¨Éå ºÉ¦ÉÉ +{ÉxÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ näùiÉÉ ®ú½þÉ*

5)JÉþ÷Ò¤ÉÉ±ÉÒ MÉtù Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù +Éè®ú Êuù´ÉänùÒVÉÒ EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ?

VÉ¤É ¦ÉÉ®úiÉ ¨Éå +ÉªÉÉÇ ºÉ¨ÉÉVÉ ºÉÉÆºEþÒÊiÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉ SÉ±É ®ú½þÉ lÉÉ, iÉEò ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ½þÊ®ú¶ÉSÉxpù Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå xÉªÉÒ GòÉÆÊiÉ EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ Eò®ú ®ú½äþ lÉä* 1850 +Éè®ú 1885<Ç. Eäò ¤ÉÒSÉ Eäò +{ÉxÉä VÉÒ´ÉxÉ EòÉ±É ¨Éå =x½þÉåxÉä Ê½þxnùÒ Eäò IÉäjÉ ¨Éå +nÂù¦ÉÖiÉ EòÉªÉÇ ÊEòªÉÉ* BEò +Éè®ú =x½þÉåxÉä ÊxÉ¤ÉxvÉ, ºÉ¨ÉÉ±ÉÉäSÉxÉÉ, xÉÉ]õEò, ºÉºÉ¨ÉÉ®úhÉ, ªÉÉjÉÉ´ÉhÉÇxÉ, <ÊiÉ½þÉºÉ +ÉÊnù +xÉäEò MÉt °ü{ÉÉå EòÒ |É´ÉiÉÇxÉ ÊEòªÉÉ iÉÉä nÚùºÉ®úÒ +Éè®ú =x½þÉåxÉä MÉtù ¶Éè±ÉÒ EòÉä {ÉÊ®ú¹EþÒiÉ BÆ´É {ÉÊ®ú¨ÉÉÌVÉiÉ ÊEòªÉÉ* =xÉEòÒ MÉt ¶Éè±ÉÒ Ê½þxnùÒ EòÒ ¨ÉÚ±É |É´ÉÞÊkÉ Eäò +xÉÖEÚò±É ½èþ* ºÉÆºEþÒiÉ Eäò iÉiºÉ¨É +Éè®ú iÉnÂù¦É´É ¶É¤nùÉå iÉlÉÉ =nÖÇù Eäò ¶É¤nùÉå EòÉ |ÉªÉÉäMÉ =x½þÉåxÉä =ÊSÉiÉ °ü{É ¨Éå ÊEòªÉÉ ½èþ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ¨Éå MÉt EòÒ ´ªÉÉEò®úhÉ ¶ÉÖÊrù {É®ú Eò¨É vªÉÉxÉ ÊnùªÉÉ MÉªÉÉ lÉÉ* =ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå ´ªÉÆMªÉÉi¨ÉEò ¶Éè±ÉÒ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ VªÉÉnùÉ ½Öþ+É*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù Eäò ¤ÉÉnù ¨É½þÉ´ÉÒ®ú |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ +Éè®ú =xÉEäò

ºÉ½þªÉÉäÊMÉªÉÉå xÉä MÉtù EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ Eò®úÉªÉÉ* =xÉEòÉ EòÉ±É 1864 +Éè®ú 1938 Eäò ¤ÉÒSÉ lÉÉ* "ºÉ®úº´ÉiÉÒ' {ÉÊjÉEòÉ EòÉ ºÉ¨{ÉÉnùxÉ Eò®úiÉä ½ÖþB ¨É½þÉ´É©®ú |ÉºÉÉnùVÉÒ xÉä Ê½þxnùÒ Eäò {Étù +Éè®ú MÉtù nùÉäxÉå lÉäjÉÉå EòÒ EòÊ¨ÉªÉÉÄ nÚù®ú Eò®úxÉä EòÉ |ÉªÉÉºÉ ÊEòªÉÉ* Ê½þxnùÒ MÉqù EòÉä =x½þÉåxÉä {ÉÊ®ú¹EÞòiÉ BÆ´É ºÉ¶ÉHò °ü{É |ÉnùÉxÉ ÊEòªÉÉ* MÉtù Eäò Ê´É¹ÉªÉ lÉäjÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ +Éè®ú +xªÉ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ °ü{ÉÉå Eäò Ê´ÉEòÉºÉ EäòÊ±ÉB =x½þÉåxÉä +{ÉxÉä ªÉÖMÉ Eäò ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå EòÉä |ÉäÊ®úiÉ ÊEòªÉÉ* =x½þÉåxÉä º´ÉªÉÆ ¦ÉÒ ºÉÉÊ½þÎiªÉEò, ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò, BäÊiÉ½þÉÊ½þEò +ÉÊnù Ê´É¹ÉªÉÉå EòÉä +{ÉxÉä ÊxÉ¤ÉxvÉÉå ¨Éå |ÉºiÉÖiÉ Eò®úEäò Ê´É¹ÉªÉ–Ê´ÉºiÉÉ®ú BÆ´É MÉtù ¶Éè±ÉÒ EòÉ +Énäù¶É |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ* Êuù´ÉänùÒ Eäò ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ MÉt±ÉäJÉEòÉå ¨Éå b÷É.¶ªÉÉ¨ÉºÉÖxnù®únùÉºÉ, SÉxnùvÉ®ú¶É¨ÉÇ MÉÖ±Éä®úÒ, {ÉnÂù¨ÉÉËºÉ½þ ¶É¨ÉÉÇ, Ê¨É¸É¤ÉxvÉÖ, +ªÉÉävªÉÉËºÉ½þ ={ÉÉvªÉÉªÉ +ÉÊnù Eäò xÉÉ¨É º¨É®úhÉÒªÉ ½éþþ*

UNIT 9

ÊxÉ¤ÉxvÉ

1. Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ÊEòºÉ|ÉEòÉ®ú ½Öþ+É?

Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ ´ÉºiÉÖiÉ: =zÉÒºÉ´ÉÓ ºÉnùÒ EòÒ näùxÉ ½èþ* Ê½þxnùÒ Eäò {É½þ±Éä ÊxÉ¤ÉxvÉ Eäò °ü{É ¨Éå ®úÉVÉÉ Ê¶É´É|ÉºÉÉnù ÊºÉiÉÉ®äú Ê½þxnù Eäò ®úÉVÉÉ¦ÉÉäVÉ EòÉ ºÉ{ÉxÉÉ (1839<Ç) EòÉä º´ÉÒEòÉ®ú ÊEòªÉÉ VÉÉ ºÉEòiÉÉ ½èþ* ±ÉäÊEòxÉ =xÉEäò uùÉ®úÉ Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ EòÒ EòÉä<Ç ºÉÖÊxÉÎ¶SÉiÉ {É®Æú{É®ú ºlÉÉÊ{ÉiÉ xÉ½þÓ ½Öþ<Ç* ±ÉäÊEòxÉ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ½þÊ®ú¶SÉxpù +Éè®ú =xÉEäò ºÉ½þªÉÉäÊMÉªÉÉå xÉä Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉÉå EòÒ ºÉÖ´ªÉ´ÉÎºlÉiÉ {É®Æú{É®úÉ EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ ÊEòªÉÉ*

Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ EòÉä ¨ÉÖJªÉiÉ: SÉÉ®ú ªÉÖMÉÉå ¨Éå Ê´É¦ÉHò ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ - ¦ÉÉ®úiÉäxnÖùªÉÖMÉ, Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ, ¶ÉÖC±É ªÉÖMÉ, ¶ÉÖC±ÉÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ(1857-1900<Ç)

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Eäò ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®ú näù¶É EòÒ ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò, ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò +Éè®ú ºÉÉÆºEþÞòÊiÉEò SÉäiÉxÉÉ EòÉä ºÉÖ¨ÉÖÊSÉiÉ Ênù¶ÉÉ ¨Éå +ÉMÉÉä ¤ÉgøÉ ®ú½äþ lÉä* <x½þÉåxÉä +{ÉxÉÒ {ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò Ê´É¹ÉªÉÉå, ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉ +Éè®ú +xÉäEò +xªÉ Ê´É¹ÉªÉÉå EòÒ SÉSÉÉÇ ÊxÉ¤ÉxvÉ Eäò °ü{É ¨Éå EòÒ* ªÉÖMÉÒxÉ ºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå EòÉ Ê´É´ÉäSÉxÉ Eò®úxÉä ¨Éå ªÉä ÊxÉ¤ÉxvÉ ¤É½ÖþiÉ ºÉ¡ò±É ½Öþ B* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú ½éþ - ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ½þÊ®ú¶SÉxpù, ¤ÉÉ±ÉEßò¹hÉ ¦É]Âõ]õ, |ÉiÉÉ{ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É, ¤ÉÉ±É¨ÉÖEÖòxnù MÉÖ{iÉ,

®úÉvÉÉSÉ®úhÉ MÉÉäº´ÉÉ¨ÉÒ, ¤ÉÉnù®úÒxÉÉ®úÉªÉhÉ SÉÉèvÉ®úÒ |ÉäàÉvÉxÉ, ±ÉÉ±ÉÉ ¸ÉÒÊxÉ´ÉÉºÉ nùÉºÉ, `öÉEÖò®ú VÉMÉ¨ÉÉä½þxÉ ËºÉ½þ +ÉÊnù*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ½þÊ®ú¶SÉxpù ºÉ´ÉÇiÉÉäx¨ÉÖJÉÒ |ÉÊiÉ¦ÉÉ ºÉÆ{ÉxxÉ Ê½þxnùÒ Eäò |ÉlÉ¨É ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú ½èþ* =x½þÉåxÉä vÉ¨ÉÇ, ºÉ¨ÉÉVÉ, ®úÉVÉxÉÒÊiÉ, +É±ÉÉäSÉxÉÉ, ´ªÉÆMªÉ Ê´ÉxÉÉänù +ÉÊnù ºÉ¦ÉÒ Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú ºÉ¡ò±É ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä ½èþ* ¨ÉÉèÊ±ÉEòiÉÉ +Éè®ú ´ªÉÆMªÉÉi¨ÉEòiÉÉ <xÉEäò ÊxÉ¤ÉxvÉÉäÆ Eäò Ê´ÉÊ¶É¹]õ MÉÖhÉ ½éþ* ´ªÉÉJªÉÉi¨ÉEò +Éè®ú Ê´ÉSÉÉ®úÉi¨ÉEò ¶Éè±ÉÒ ¨Éå =xÉEäò ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä MÉªÉä ½èþ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Eäò ºÉ´ÉÇ¸Éä¹`ö ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú Eäò °ü{É ¨Éå ¦É]Âõ]õVÉÒ EòÉ ºlÉÉxÉ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* =x½þÉåxÉä ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò, ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò xÉèÊiÉEò, ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEò +Éè®ú ºÉÉÊ½þÎiªÉEò Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä ½èþ* =x½þÉåxÉä ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù EòÒ ´ªÉÉJªÉÉi¨ÉEò +Éè®ú Ê´ÉSÉÉ®úÉi¨ÉEò ¶Éè±ÉÒ EòÉä Ê´ÉEòÊºÉiÉ ÊEòªÉÉ*

Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ –(1900-1920<Ç)

+ÉSÉÉªÉÇ ¨É½þÉ´ÉÒ®ú |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ xÉä "ºÉ®úº´ÉiÉÒ' {ÉÊjÉEòÉ Eäò ºÉÉlÉ ºÉÉlÉ Ê½þxnùÒ Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä xÉªÉÒ Ênù¶ÉÉ nùÒ* =xÉEòÉ {É½þ±ÉÉ EòÉªÉÇ iÉiEòÉ±ÉÒxÉ ±ÉäJÉEòÉå EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉä {ÉÊ®ú¨ÉÉÌVÉiÉ Eò®úEäò ´ªÉÉEò®úhÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ ¦ÉÚ±ÉÉå EòÉä nÚù®ú Eò®úxÉÉ lÉÉ*

Êuù´ÉänùÒVÉÒ xÉä ÊxÉ¤ÉxvÉÉå ¨Éå Ê´ÉSÉÉ®úÉå EòÉä |É¨ÉÖJÉiÉÉ nùÒ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå EòÒ ºÉÒ ®úÉäSÉEòiÉÉ Êuù´ÉänùÒVÉÒ Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå ¨Éå |ÉÉ{iÉ xÉ½þÓ* ºÉ®úº´ÉiÉÒ {ÉÊjÉEòÉ Eäò |ÉEòÉ¶ÉxÉ ºÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå ºÉÉÊ½þÎiªÉEò {ÉÊjÉEòÉ+Éå EòÒ |É´ÉiÉÇxÉ ½Öþ+É +Éè®ú iÉ¤É ºÉä ÊxÉ¤ÉxvÉÉå ¨Éå ºÉÉÊ½þÎiªÉEòiÉÉ +ÉÊvÉEò +ÉxÉä ±ÉMÉÉ* Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ Eäò +xªÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú ¤ÉÉ¤ÉÚ ¶ªÉÉ¨É ºÉÖxnù®únùÉºÉ +ÉiÉä ½èþ* ´Éä =SSÉEòÉä]õÒ Eäò +É±ÉÉäSÉEò +Éè®ú ºÉ¡ò±É ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú ½èþ, =xÉEäò +±ÉÉ´ÉÉ ¨ÉÉvÉ´É |ÉºÉÉnù Ê¨É¸É MÉÉäÊ´Éxnù xÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É, ºÉ®únùÉ®ú {ÉÚhÉÇ ËºÉ½þ, {ÉnÂù¨ÉËºÉ½þ ¶É¨ÉÇ +ÉÊnù +ÉiÉä ½èþ* Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉÒxÉ ÊxÉ¤ÉxvÉÉå Eäò Ê´É¹ÉªÉ ´ÉèÊ´ÉvªÉ Eäò ºlÉÉxÉ {É®ú MÉÉÆ¦ÉÒªÉÇ +É MÉªÉÉ, <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå xÉä nÚùºÉ®úÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ+Éå Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå EòÉ +xÉÖ´ÉÉnù Eò®úxÉä EòÒ {É®Æú{É®úÉ SÉ±ÉÉªÉÒ*

¶ÉÖC±ÉªÉÖMÉ (1920-1940<Ç)

+ÉSÉÉªÉÇ ®úÉ¨ÉSÉxpù ¶ÉÖC±É Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå Eäò ºÉÉlÉ Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå BEò xÉªÉÉ ¨ÉÉäc÷ +É MÉªÉÉ* ¶ÉÖC±ÉVÉÒ xÉä +{ÉxÉÒ "ÊSÉxiÉÉ¨ÉÊhÉ' uùÉ®úÉ {ÉÉ`öEòÉå Eäò ºÉÉ¨ÉxÉä xÉªÉä Ê´ÉSÉÉ®ú, xÉªÉÒ ¶Éè±ÉÒ |ÉºiÉÖiÉ EòÒ* Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ {É®Æú{É®úÉ ¨Éå ¶ÉÖC±ÉVÉÒ EòÉ ºlÉÉxÉ ºÉ¤ÉºÉä =ÄSÉÉ ½èþ*

=x½þÉåxÉä ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEò, ºÉÉÊ½þÎiªÉEò, ºÉèrùÉÎxiÉEò +ÉÊnù ºÉ¦ÉÒ |ÉEòÉ®ú Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä*

¶ÉÖC±ÉªÉÖMÉ Eäò +xªÉ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú ½éþ – ¤ÉÉ¤ÉÚ MÉÖ±ÉÉ¤É®úÉªÉ, {ÉnÖù¨É±ÉÉ±É {ÉÖxxÉÉ±ÉÉ±É ¤ÉJ¶ÉÒ, ¨ÉÉJÉxÉ±ÉÉ±ÉSÉiÉÖ´Éænù Ò, ¶ÉÉÆÊiÉÊ|ÉªÉ Êuù´ÉänùÒ, ®úÉªÉEÞò¹hÉnùÉºÉ +ÉÊnù* ¶ÉÖC±ÉªÉÖMÉ Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå ¨Éå Ê´É¹ÉªÉ ´ÉèÊ´ÉvªÉ, MÉÆ¦ÉÒ®úiÉÉ iÉlÉÉ ºÉÚI¨ÉiÉÉ Ê¨É±ÉiÉÒ ½èþ* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå ¤ÉÉ¤ÉÚMÉÖ±ÉÉ¤É®úÉªÉ +{ÉxÉä ºÉÉÊ½þÎiªÉEò ¨ÉxÉÉä´ÉèZÉÉxÉÒEò, ºÉÆº¨É®úhÉÉi¨ÉEò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå EäòÊ±ÉB iÉlÉÉ ¶ÉÉÆÊiÉÊ|ÉªÉ Êuù´ÉänùÒ +{ÉxÉä ¦ÉÉ´ÉxÉÉi¨ÉEò ÊxÉ¤ÉxvÉÉå EäòÊ±ÉB |ÉÊºÉrù ½èþ* ¸ÉÒ. ¤ÉxÉÉ®úºÉÒ nùÉºÉ SÉiÉÖ´Éænù Ò, b÷É. vÉÒ®äúxpù´É¨ÉÉÇ, ®úÉ½ÖÞ±É ºÉÉÆEÞòiªÉÉªÉxÉ, b÷É. ®úPÉÖ´ÉÒ®ú Ëº½þ, {ÉÉhbä÷ªÉ ¤ÉäSÉxÉ¶É¨ÉÇ =OÉ +ÉÊnù ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå xÉä VÉÒ´ÉxÉ SÉÊ®úiÉÉi¨ÉEò Ê´ÉSÉÉ®úÉi¨ÉEò, BäÊiÉ½þÉºÉÒEò nùÉ¶ÉÇÊxÉEò, ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò iÉlÉÉ vÉÉì¨ÉEò Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉEò®ú Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +{ÉÚ´ÉÇ ªÉÉäMÉ Ênùª ÉÉ*

¶ÉÖC±ÉkÉ®ú ªÉÖMÉ –(1940Eäò ¤ÉÉnù)

¶ÉÖC±ÉVÉÒ Eäò {É®ú´ÉiÉÔ ªÉÖMÉ ¨Éå +ÉSÉÉªÉÇ ½þWÉÉ®Òú|ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ, xÉxnùnÖù±ÉÉ®äú ´ÉÉVÉ{ÉäªÉÒ, b÷É. xÉMÉäxpù, b÷É. ®úÉ¨ÉÊ´É±ÉÉºÉ ¶É¨ÉÉÇ, ®úÉ¨ÉvÉÉÉ®úËºÉ½þ Ênùx ÉEò®ú, b÷É. ¦ÉMÉÒ®úlÉ Ê¨É¸É, +YÉäªÉ, Ê´ÉvªÉÉÊxÉ´ÉÉºÉ

Ê¨É¸É, ½þÊ®ú¶ÉÆEò®ú {É®úºÉÉ<Ç, |É¦ÉÉEò®ú¨ÉÉSÉ´Éä, Ê¶É´ÉnùÉxÉËºÉ½þ SÉÉè½þÉxÉ, vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ +ÉÊnù +xÉäEò ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå xÉä Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä ºÉ¨ÉÞrù Eò®ú ÊnùªÉÉ* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå ¨Éå +ÉSÉÉªÉÇ ½þWÉÉ®Òú |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ EòÉ xÉÉ¨É ºÉ¤ÉºÉä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÆºEÞòÊiÉ, ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÉÊ½þiªÉ BÆ´É {É®Æú{É®úÉMÉiÉ YÉÉxÉ-Ê´ÉYÉÉxÉ Eäò ºÉÉIÉ +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ {ÉÊ®úÎºIÉÊiÉªÉÉå BÆ´É ºÉ¨É¤ªÉÉ+Éå EòÉ ¦ÉÒ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ =x½þÉåxÉä ÊEòªÉÉ ½èþ*

+ÉSÉÉªÉÇ xÉxnùnÖù±ÉÉ®äú ´ÉÉVÉ{ÉäªÉÒ xÉä ¨ÉÖJªÉiÉ: +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä ½éþ* Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ ¤ÉÒºÉ´ÉÓ ¶ÉiÉÉ¤nùÒ, "+ÉvÉÖÊxÉEòºÉÉÊ½þiªÉ', "xÉªÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ xÉªÉä |É¶xÉ' +ÉÊnù =xÉEäò |ÉÊºÉrù ÊxÉ¤ÉxvÉ ºÉÆOÉ½þ ½èþ* b÷É. xÉMÉäxpù xÉä ºÉÉÊ½þiªÉ BÆ´É Eò±ÉÉ ºÉ¨¤ÉvÉÒ =iEÞò¹]õ ÊxÉ¤ÉxvÉÉå Eäò uùÉ®úÉ Ê´ÉSÉÉ®úÉi¨ÉEòiÉÉ +Éè®ú ´ÉèªÉÊHòEòiÉÉ nùÉäxÉÉå EòÉ ºÉ¨Éx´ÉªÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* Eò½þÉxÉÒEòÉ®ú VÉèxÉäxpùEÖò¨ÉÉ®ú xÉä +{ÉxÉä ÊxÉ¤ÉxvÉÉå ¨Éå nùÉ¶ÉÇÊxÉEò, ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉxÉÒEò, ºÉÉÊ½þÎiªÉEò +ÉÊnù Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú Ê´ÉSÉÉ®ú |ÉEò]õ ÊEòªÉä ½èþ* EòÊ´É ½þÉäiÉä ½ÖþB ¦ÉÒ ÊnùxÉEò®úVÉÒ xÉä Eò<Ç ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä ÊVÉxÉ¨Éå =xÉEòÒ ¨ÉÉxÉ´ÉÒªÉ +ÉºIÉÉ +Éè®ú ÊSÉxiÉxÉ IÉ¨ÉiÉÉ º{É¹]õ ½Öþ<Ç ½èþ* EòÊ´É +YÉäªÉ Eäò "+Éi¨ÉxÉä{Énù', "ÊjÉ¶ÉÆEÖò', "Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ BEò +ÉvÉÖÊxÉEò

{ÉÊ®úoù¶ªÉ' +ÉÊnù ÊxÉ¤ÉxvÉ ºÉÆOÉ½þ =xÉEäò +xÉÖ¦É´ÉÉå EòÉ ½þÒ ´ÉèSÉÉÊ®úEò Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ½èþ* b÷É. MÉhÉ{ÉÊiÉ SÉxpùMÉÖ{iÉ xÉä MÉ½þ®äú ºÉÉÊ½þÎliªÉEò ÊSÉxiÉxÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä ½éþ*

|É¦ÉÉEò®ú ¨ÉÉSÉ´Éä, Ê´ÉtùÉÊxÉ´ÉÉºÉ Ê¨É¸É, EÚò¤Éä®úxÉÉlÉ ®úÉªÉ, Ê¶É´É|ÉºÉÉnù ËºÉ½þ, vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú¦ÉÉ®úiÉÒ, `öÉEÚò®ú|ÉºÉÉnù ËºÉ½þ +ÉÊnù xÉä ±ÉÊ±ÉiÉ ÊxÉ¤ÉxvÉÉå Eäò lÉäjÉ EòÉä º´ÉÒEòÉ®ú Eò®úEäò =ºÉ Ê´ÉvÉÉ EòÉä EòÉ¡òÒ ºÉÆ{ÉxxÉ ÊEòªÉÉ* ½þÉºªÉ ´ªÉÆMªÉ{ÉÚhÉÇ ÊxÉ¤ÉxvÉÉå Eäò lÉäjÉ ¨Éå ¤Ägø¤É ¤ÉxÉÉ®úºÉÒnùÉºÉ, ½þÊ®ú¶ÉÆEò®ú {É®úºÉÉ<Ç, Eäò¶É´ÉSÉxpù´É¨ÉÉÇ, ±ÉI¨ÉÒEòÉxiÉ ´É¨ÉÉÇ, ¦ÉÒ¨ÉºÉäxÉ iªÉÉMÉÒ, ¶É®únù VÉÉä¶ÉÒ, xÉ®äúxpù EòÉä½þ±ÉÒ +ÉÊnù +xÉäEò ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå Eäò xÉÉ¨É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ*

ºÉÉÊ½þiªÉäiÉ®ú ±ÉÊ±ÉiÉ ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉxÉä´ÉÉ±ÉÉå ¨Éå ®úÉ¨É´ÉÞlÉ ¤ÉäxÉÒ{ÉÖ®úÒ |ÉÊºÉrù ½èþ* ¸ÉÒ®úÉ¨É ¶É¨ÉÉÇ Ê¶ÉEòÉ®ú ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò º¸ò±É ±ÉäJÉEò ½èþ* näù´ÉäxpùºÉiªÉÉlÉÔ xÉä ªÉÉjÉÉ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ ºÉÖxnù®ú ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä* ®úÉ½ÖÞ±É ºÉÉÆEÞòiªÉÉªÉxÉ, ¦Énùxi +ÉxÉÆnù EòÉèºÉ±ªÉÉªÉxÉ +ÉÊnù ¦ÉÒ <ºÉ EòÉÊ]õ ¨Éå +ÉiÉä ½éþ* <xÉEäò +±ÉÉ´ÉÉ +xÉäEò ±ÉäJÉEòÉå xÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå ºÉ¨ÉÉVÉ, ºÉÉÊ½þiªÉ, ºÉÆºEÞòÊiÉ, <ÊiÉ½þÉºÉ, ®úÉVÉxÉÒÊiÉ, vÉ¨ÉÇ +ÉÊnù VÉÒ´ÉxÉ Eäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ lÉäjÉÉå EòÉ Ê´É´ÉäSÉxÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä ¸Éä¹`ö ÊxÉ¤ÉxvÉ Ê±ÉJÉä ½éþ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ

ºÉä ±ÉäEÒ®ú +ÉVÉiÉEÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå Gò¨É¶: |ÉÉègøiÉÉ +ÉiÉÒ ®ú½þÒ ½èþ*

UNIT 10

+É±ÉÉäSÉxÉÉ

1) **Ê½þxnùÒ +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ {É®ú Ê´ÉSÉÉ®ú EòÒÊVÉB?**

ÊEòºÉÒ ¦ÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ ®úSÉxÉÉ Eäò Ê´É´ÉäSÉxÉ-Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ªÉÉ ¨ÉÚ±ªÉÉÆEòxÉ EòÉä +lÉ´ÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò ºÉ¨¤ÉxvÉ ¨Éå ÊEòºÉÒ ºÉÉ¨ÉÉxªÉ ÊºÉrùÉxiÉ Eäò |ÉÊiÉ{ÉÉnùxÉ EòÉä +É±ÉÉäSÉxÉÉ ªÉÉ ºÉ¨ÉÒIÉÉ Eò½þiÉä ½éþ* +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ ¨Éå VÉÉä +É±ÉÉäSÉxÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ =ºÉEòÒ ¶ÉÖ¯û+ÉiÉ ºÉSÉ¨ÉÖSÉ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖùªÉÖMÉ ºÉä ½Öþ<Ç*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù xÉä +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ÊnùªÉÉ* =xÉEäò "xÉÉ]õEò' xÉÉ¨ÉEò OÉxlÉ ¨Éå xÉÉ]õ¬¶ÉÉºjÉ ºÉ¨¤ÉÆvÉÒ ºÉèrùÉÎxiÉEò +É±ÉÉäSÉxÉÉ EòÒ MÉªÉÒ ½èþ* <ºÉ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù EòÉ ¨ÉÉè±ÉÒEò ÊSÉxiÉxÉ +Ê¦É´ªÉHiÉ ½Öþ+É ½èþ* =xÉEäò uùÉ®úÉ |É´ÉÌiÉiÉ ºÉ¨ÉÉ±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò EòÉªÉÇ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉxÉä EòÉ ¸ÉäªÉ ¤ÉÉnù®úÒxÉÉ®úÉªÉhÉ SÉÉèvÉ®úÒ |Éä¨ÉPÉxÉ +Éè®ú ¤ÉÉ±ÉEßò¹hÉ ¦É]Âõ]õ EòÉ ½èþ* |Éä¨ÉvÉxÉVÉÒ xÉä +{ÉxÉÒ "+ÉxÉxnù EòÉnùÆÊ¤ÉxÉÒ {ÉÊjÉEòÉ ¨Éå ±ÉÉ±ÉÉ ¸ÉÒÊxÉ´ÉÉºÉ Eäò xÉÉ]õEò' "ºÉÆªÉÉäÊMÉiÉÉ º´ÉªÉÆ´É®ú' iÉlÉÉ ¤ÉÆMÉÊ´ÉVÉäiÉÉ xÉÉ¨ÉEò

EÞòÊiÉ EòÒ Ê´É°iÉÞiÉ +É±ÉÉäSÉxÉÉ EòÒ* ¤ÉÉ±ÉEÞò¹hÉ ¦É]Âõ]õ xÉä Ê½þxnùÒ |ÉnùÒ{É ¨Éå "ºÉÆªÉÉäÊMÉiÉÉ º´ÉªÉÆ´É®ú' EòÒ +É±ÉÉäSÉxÉÉ EòÒ*

Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå +É±ÉÉäSÉxÉÉ EòÉ =ÊSÉiÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+*1930 ¨Éå Êuù´ÉänùÒVÉÒ ºÉ®úº´ÉiÉÒ {ÉjÉÒEòÉ Eäò ºÉ¨{ÉÉnùEò Eäò °ü{É ¨Éå +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +ÉªÉä* "EòÉÊ±ÉnùÉºÉ EòÒ ÊxÉ®ÆúEÖò¶ÉiÉÉ', xÉè¹ÉvÉ SÉÊ®úiÉ SÉSÉÇ +ÉÊnù =xÉEäò +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò OÉxlÉ ½éþ* Êuù´ÉänùÒ Eäò ¤ÉÉnù Ê½þxnùÒ ºÉ¨ÉÒlÉÉ ¨Éå MÉhÉä¶É Ê¤É½þÉ®úÒ Ê¨É¸É, ¶ªÉÉ¨É Ê¤É½þÉ®úÒ Ê¨É¸É +Éè®ú ¶ÉÖEònäù´É Ê¤É½þÉ®úÒ Ê¨É¸É EòÉ |É´Éä¶É ½Öþ+É* =x½þÉåxÉä Ê¨É¸É¤ÉxvÉÖ Eäò xÉÉ¨É ºÉä "Ê½þxnùÒ xÉ´É®úixÉ', "Ê¨É¸É¤ÉxvÉÖ Ê´ÉxÉÉänù' +ÉÊnù OÉxlÉ Ê±ÉJÉä*

Ê½þxnùÒ +É±ÉÉäSÉxÉÉ ¨Éå +ÉSÉÉªÉÇ ®úÉ¨ÉSÉxpù¶ÉÖC±É Eäò +ÉMÉ¨ÉxÉ ºÉä BEò xÉªÉÒ ¶ÉÖ¯û+ÉiÉ ½Öþ<Ç* +ÉSÉÉªÉÇ ¶ÉÖC±ÉVÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ BEò ºÉÖÊxÉÎ¶SÉiÉ ¨ÉÉxÉnùhb÷ +Éè®ú ºÉ¨ÉÒlÉÉ EòÒ BEò Ê´ÉEòÊºÉiÉ {ÉrùÊiÉ ±ÉäEò®ú +´ÉiÉÊ®úiÉ ½ÖþB* =x½þÉåxÉä ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ {É®Æú{É®úÉ Eäò ºÉÉ®úiÉi´É EòÉä xÉªÉä °ü{É ¨Éå |ÉÊiÉÎ¹`öiÉ ÊEòªÉÉ iÉÉä nÚùºÉ®úÒ +Éè®ú {ÉÉ¶SÉÉiªÉ Ê´ÉuùÉxÉÉå EòÉ +ÉxvÉÉxÉÖEò®úhÉ UôÉäb÷Eò®ú =xÉºÉä =ÊSÉiÉ ¤ÉÉiÉå º´ÉÒEòÉ®ú EòÒ* BäÊiÉ½þÉºÉÒEò +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå ¶ÉÖC±ÉVÉÒ EòÉ

ºÉ¤É°Éä ¤Éb÷É ªÉÉäMÉnùÉxÉ =xÉEòÉ Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ <ÊiÉ½þÉºÉ ½èþ* ¶ÉÖC±ÉVÉÒ Eäò ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ +xªÉ +É±ÉÉäSÉEòÉå ¨Éå b÷É. ¶ªÉÉ¨É°ÉÖxnù®únùÉºÉ EòÉ xÉÉ¨É ¤É½ÖþiÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* ºÉÉÊ½þiªÉÉ±ÉÉäSÉxÉ, °ü{ÉEò-®ú½þºªÉ, iÉÖ±É°ÉÒnùÉºÉ +ÉÊnù =xÉEòÒ |ÉÊºÉrù +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò EÞòÊiÉªÉÉÄ ½éþ* {ÉnÖù¨É±ÉÉ±É {ÉÖxxÉÉ±ÉÉ±É ¤ÉJ¶ÉÒ, ÊMÉÊ®úVÉÉnùkÉ ¶ÉÖC±É Ên®Òú¶É, +ÉÆÊ¤ÉEòÉ |É°ÉÉnù ´ÉÉVÉ{ÉäªÉÒ +ÉÊnù +É±ÉÉäSÉEòÉå xÉä ¦ÉÒ ¶ÉÖC±ÉVÉÒ Eäò WÉ¨ÉÉxÉä ¨Éå ºÉ¨ÉÒIÉÉ ¨Éå ºIÉÉxÉ {ÉÉªÉÉ IÉÉ*

2) ¶ÉÖC±ÉÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ ¨Éå Ê½þxnùÒ +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò ÊEòiÉxÉä °ü{É ºÉÉ¨ÉxÉä +ÉªÉä ½éþ?

¶ÉÖC±ÉVÉùÒ Eäò {É®ú´ÉiÉÔ ªÉÖMÉ ¨Éå Ê½þxnùÒ +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå iÉÒxÉ Ê´É¦ÉÉMÉ º{É¹]õ ½ÖþB –(1) ºÉèrùÉÎxiÉEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ (2) BäÊiÉ½þÉºÉÒEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ (3) ´ªÉÉ´É½þÉÊ®úEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ*

ºÉèrùÉÎxiÉEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ – +ÉSÉÉªÉÇ ¶ÉÖC±ÉVÉÒ Eäò ¤ÉÉnù b÷É. MÉÖ±ÉÉ¤É®úÉªÉ, b÷É. xÉMÉäxpù, +ÉSÉÉªÉÇ ¤É±Énäù´É ={ÉÉvªÉÉªÉ, ±ÉI¨ÉÒ xÉÉ®úÉªÉhÉ ºÉÖvÉÉÆ¶ÉÖ +ÉÊnù Eò<Ç +É±ÉÉäSÉEò +ÉªÉä* MÉÖ±ÉÉ¤É®úÉªÉ xÉä EòÉ´ªÉ Eäò °ü{É, ÊºÉrùÉxiÉ +Éè®ú +vªÉªÉxÉ, Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò Ê´É¨É¶ÉÇ, xÉ´É®úºÉ +ÉÊnù OÉxIÉÉå ¨Éå +{ÉxÉÒ xÉÚiÉxÉ ®úÉäSÉEò ¶ÉÉè±ÉÒ EòÉ {ÉÊ®úSÉªÉ ÊnùªÉÉ ½èþ* =x½þÉåxÉä

{ÉÉ¶ÉSÉÉiªÉ +Éè®ú ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ EòÉ´ªÉ Ê°ÉrùÉxiÉÉå Eäò °É¨Éx´ÉªÉ +Éè®ú ´ªÉÉJªÉÉ EòÒ* b÷É. xÉMÉÆxpù EòÉ °lÉÉxÉ °ÉèrùÉÎxiÉEò °É¨ÉÒlÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +iªÉxiÉ =ÄSÉÉ ½èþ* ®úÒÊiÉEòÉ´ªÉ EòÒ ¦ÉÚÊ¨ÉEòÉ xÉMÉäxpù EòÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ OÉxlÉ ½èþ* "xÉÉ]õ¬nù{ÉÇhÉ', "+®ú°iÉÖ EòÉ EòÉ´ªÉ¶ÉÉ°jÉ', "®ú°ÉÊ°ÉrùÉxiÉ', EòÉ´ªÉEò±ÉÉ, EòÉ´ªÉ ¨Éå =nùÉkÉiÉi´É +ÉÊnù =xÉEòÒ EÞòÊiÉªÉÉÄ Ê½þxnùÒ °É¨ÉÒlÉÉ Eäò +¨ÉÚ±ªÉ®úixÉ ½éþ* +ÉSÉÉªÉÇ ¤É±Énäù´É ={ÉÉvªÉÉªÉ, b÷É. ¦ÉMÉÒ®úlÉ Ê¨É¸É, b÷É. +Éä¨É|ÉEòÉ¶É, xÉÊ±ÉxÉ Ê´É±ÉÉäSÉxÉ ¶É¨ÉÉÇ, b÷É. ¶ÉÉÎxiÉº´É°ü{É MÉÖ{iÉ +ÉÊnù xÉä °ÉèrùÉÎxiÉEò °É¨ÉÒlÉÉ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉªÉÉ* b÷É. MÉhÉ{ÉÊiÉSÉxpùMÉÖ{iÉ xÉä "°ÉÉÊ½þiªÉ Ê´ÉYÉÉxÉ' °ÉÉÊ½þiªÉ EòÉ ´ÉèYÉÉÊxÉEò Ê´É´ÉäSÉxÉ +ÉÊnù OÉxlÉÉå ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ BÆ´É {ÉÉ¶SÉÉiªÉ EòÉ´ªÉ¶ÉÉ°jÉ iÉlÉÉ +ÉvÉÖÊxÉEò ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú °ÉÉÊ½þiªÉ EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* <°É|ÉEòÉ®ú Ê½þxnùÒ EòÒ °ÉèrùÉÎxiÉEò °É¨ÉÒlÉÉ ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ BÆ´É {ÉÉ¶SÉÉiªÉ Ê°ÉrùÉxiÉÉå Eäò iÉÖ±ÉxÉÉi¨ÉEò +vªÉªÉxÉ BÆ´É Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ Eäò |Éègø |ÉªÉÉ°É ÊEòªÉä MÉªÉä ½éþ*

BäÊiÉ½þÉ°ÉÒEò °É¨ÉÒlÉÉ:-

BäÊiÉ½þÉ°ÉÒEò °É¨ÉÒlÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +xÉäEò Ê´ÉuùÉxÉÉå xÉä °ÉÉÊ½þiªÉ Eäò <ÊiÉ½þÉ°É EòÉ +vªÉªÉxÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä

º´ÉiÉÆjÉ <ÊiÉ½þÉºÉ OÉxlÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* b÷É.¶ªÉÉ¨ÉºÉÖxnù®únùÉºÉ, +ªÉÉäVªÉÉËºÉ½þ ={ÉÉVªÉÉªÉ, b÷É.®úÉ¨É¶ÉÆEò®ú ¶ÉÖC±É ®ÆúºÉÉ±É +ÉÊnù <ºÉ EòÉäÊ]õ Eäò ½èþ* +SÉÉªÉÇ ½þWÉÉ®úÒ |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ xÉä Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ ¦ÉÚÊ¨ÉEòÉ, "Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ +ÉÊnùEòÉ±É', "Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ =nÂù¦É´É +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ' +ÉÊnù OÉxlÉÉå ¨Éå ¶ÉÖC±ÉVÉÒ EòÒ ¨ÉÉxªÉÉiÉÉ+Éå EòÉä SÉÖxÉÉèiÉÒ näùEò®ú xÉªÉÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉBÄ |ÉºiÉÖiÉ EòÒ* ´Éä ¨ÉÖJªÉiÉ: ¶ÉÖC±ÉVÉÒ EòÒ {ÉrùÊiÉ Eäò +É±ÉÉäSÉEò ½éþ, {É®ú +{ÉxÉä ¨ÉÉxÉ´ÉiÉÉ´ÉÉnùÒ oùÎ¹]õEòÉähÉ iÉlÉÉ BäÊiÉ½þÉÊºÉEò {ÉrùÊiÉ ºÉä ¶ÉÖC±ÉVÉÒ ºÉä +±ÉMÉ ½èþ* BäÊiÉ½þÉÊºÉEò ºÉ¨ÉÒlÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå Êuù´ÉänùÒVÉÒ Eäò ºÉÉlÉ b÷É.®úÉ¨ÉEÖò¨ÉÉ®ú ´É¨ÉÉÇ EòÉ xÉÉ¨É ={±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò <ÊiÉ½þÉºÉ =xÉEòÒ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ EÞòÊiÉ ½èþ* b÷É. MÉhÉ{ÉÊiÉ SÉxpù MÉÖ{iÉ xÉä "Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ ´ÉèYÉÉÊxÉEò <ÊiÉ½þÉºÉ' ¨Éå +iªÉÆiÉ xÉ´ÉÒxÉiÉÉ ÊnùJÉÉiÉä ½ÖþB Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ Eò<Ç {ÉÖ®úÉxÉÒ ¨ÉÉxªÉiÉÉ+Éå EòÉ JÉhb÷xÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* b÷É.xÉMÉäxpù xÉä +{ÉxÉä uùÉ®úÉ ºÉÆ{ÉÉÊnùiÉ "Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ <ÊiÉ½þÉºÉ' ¨Éå MÉhÉ{ÉÊiÉSÉxpù MÉÖ{iÉ Eäò ÊºÉrùÉxiÉÉå EòÉä ºlÉÉxÉ ÊnùªÉÉ ½èþ*

´ªÉÉ´É½þÉÊ®úEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ:- <ºÉ {É®ÆÚ{É®úÉ ¨Éå +ÉSÉÉªÉÇ xÉxnùnÖù±ÉÉ®äú ´ÉÉVÉ{ÉäªÉÒ EòÉ xÉÉ¨É ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä +ÉiÉÉ ½èþ* +{ÉxÉÒ |ÉIÉ¨É ®úSÉxÉÉ Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ ¤ÉÒºÉ´ÉÓ ¶ÉiÉÉ¤nùÒ ¨Éå ´ÉÉVÉ{ÉäªÉÒ xÉä xÉÚiÉxÉ ¨ÉÉèÊ±ÉEò oùÎ¹]õ Eäò ºÉÉIÉ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ÊEòªÉÉ*

´ªÉÉ´É½þÉÊ®úEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä Ê½þxnùÒ Eäò +É±ÉÉäSÉEòÉå ¨Éå BEò Ê´É¦ÉÉMÉ Bäº ÉÉ ½èþ VÉÉä ¨ÉxÉÉäÊ´É¶±Éä¹ÉhÉ +Éè®ú ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ Eäò iÉi´ÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú ºÉ¨ÉÒIÉÉ Eò®úiÉÉ ½èþ* £òÉªÉb÷ +ÉÊnù {ÉÉ¶SÉÉiªÉ ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEòÉå Eäò ÊºÉrùÉxiÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú =x½þÉåxÉä ºÉÉÊ½þÎiªÉEò EÞòÊiÉªÉÉå +Éè®ú EòIÉÉ{ÉÉjÉÉå EòÉ Ê´É´ÉäSÉxÉ ÊEòªÉÉ* Bäº Éä ºÉ¨ÉÒIÉEòÉå ¨Éå b÷É. <±ÉÉSÉxpù VÉÉä¶ÉÒ, +YÉäªÉ +ÉÊnù |É¨ÉÖJÉ ½èþ*

<ºÉ Ê´É¦ÉÉMÉ ¨Éå EÖòUô ºÉ¨ÉÒIÉEò ¨ÉÉCºÉÇ´ÉÉnùÒ ªÉÉ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ oùÎ¹]õEòÉähÉ EòÉä ±ÉäEò®ú ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ ºÉ¨ÉÒIÉÉ ¨Éå ±ÉMÉä ½ÖþB lÉä* <xÉ¨Éå |ÉIÉ¨É ®úÉ¨ÉÊ´É±ÉÉºÉ ¶É¨ÉÉÇ ½éþ* "|ÉMÉÊiÉ +Éè®ú {É®ÆÚ{É®úÉ', "ºÉÆºEÞòÊiÉ +Éè®ú ºÉÉÊ½þiªÉ', "ÊxÉ®úÉ±ÉÉ', |ÉMÉÊiÉ¶ÉÒ±É ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ ºÉ¨ÉºªÉÉBÄ +ÉÊnù ¨Éå =x½þÉåxÉä +{ÉxÉä |ÉMÉÊiÉ¶ÉÒ±É Ê´ÉSÉÉ®úÉå EòÉä ÊxÉ¦ÉÔEò fÆøMÉ ºÉä |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* +¨ÉÖiÉ®úÉªÉ +Éè®ú b÷É.¦ÉMÉ´ÉiÉ¶É®úhÉ ={ÉÉvªÉÉªÉ xÉä

¨ÉÉCºÉÇ´ÉÉnÙù oùÎ¹]õEòÉähÉ EòÉä +ÉvÉÉ®ú ¤ÉxÉÉEò®ú ºÉ¨ÉÒIÉÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå ªÉÉäMÉ ÊnùªÉÉ* b÷É.xÉÉ¨É´É®úËºÉ½þ EòÉ ºIÉÉxÉ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ ºÉ¨ÉÒIÉEòÉå ¨Éå ¤É½ÖþiÉ >ÄőSÉÉ ½èþ* "EòÊ´ÉiÉÉ Eäò xÉªÉä |ÉÊiÉ¨ÉÉxÉ', "nÚùºÉ®úÒ {É®ÆÚ{É®úÉ EòÒ JÉÉäVÉ', "UôÉªÉÉ´ÉÉnù &<ÊiÉ½þÉºÉ +Éè®ú +É±ÉÉäSÉxÉÉ' +ÉÊnù =xÉEòÒ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ EÞòÊiÉªÉÉÄ ½éþ*

Ê½þxnùÒ ¨Éå ºÉÉèxnùªÉÇ¶ÉÉºjÉÒªÉ iÉIÉÉ Ê¨ÉIÉEòÒªÉ {ÉrùÊiÉ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉxÉä´ÉÉ±Éä ºÉ¨ÉÒIÉEòÉå Eäò °ü{É ¨Éå b÷É.®ú¨Éä¶É EÖòxiÉ±É ¨ÉäÞÉ |ÉÊºÉrù ½èþ* Ê½þxnùÒ ¨Éå |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnù +Éè®ú xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉä ±ÉäEò®ú +xÉäEò ºÉ¨ÉÒIÉÉBÄ ÊxÉEò±ÉÓ ÊVÉxÉ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò ºÉ¨ÉÒIÉÉ oùÊ¹]õ ½èþ* iÉÉ®úºÉ{iÉEò, nÚùºÉ®úÉ ºÉ{iÉEò +Éè®ú iÉÒºÉ®úÉ ºÉ{iÉEò Eäò EòÊ´ÉªÉÉå xÉä +{ÉxÉä ´ÉHò´ªÉÉå ¨Éå |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉÊnù EòÊ´ÉiÉÉ iÉIÉÉ ¤Énù±Éä ½ÖþB EòÉ´ªÉ¤ÉÉävÉ Eäò ¤ÉÉ®äú ¨Éå {ÉÊ®úSÉªÉ ÊnùªÉÉ ½èþ* +YÉäªÉ xÉä "ÊjÉ¶ÉÆEÖò', "+Éi¨ÉxÉä{Énù', Ê½þxnù ºÉÉÊ½þiªÉ BEò +ÉvÉÖÊxÉEò {ÉÊ®úoù¶ªÉ +ÉÊnù EÞòÊiÉªÉÉå ¨Éå EòÉ´ªÉ Eäò ºÉÆ¤ÉÆvÉ ¨Éå +{ÉxÉä Ê´ÉSÉÉ®ú ´ªÉHò ÊEòªÉä* "BEò ºÉÉÊ½þÎiªÉEò EòÒ b÷ÉªÉ®úÒ,' xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ +Éi¨ÉºÉÆÞÉ¹ÉÇ +ÉÊnù uùÉ®úÉ ¨ÉÖÊHò¤ÉÉävÉ xÉä +{ÉxÉÒ ºÉ¨ÉÒIÉÉi¨ÉEò oùÊ¹]õ, |ÉEò]õ EòÒ ½èþ* Ê½þxnùÒ Eäò +ÉvÉÖÊxÉEò ºÉÊ¨ÉIÉEòÉå ¨Éå EÖòUô ±ÉÉäMÉÉå

xÉä ¦ÉÊHòEòÉ±ÉÒxÉ ®úSÉxÉÉ+Éå EòÒ ºÉ¨ÉÒIÉÉ Ê±ÉJÉxÉä ¨Éå Ê´É¶Éä¹É ¯ûÊSÉ |ÉEò]õ EòÒ iÉÉä +xªÉ EÖòUô ±ÉÉäMÉÉå xÉä ®úÒÊiÉEòÉ±É EòÉä +{ÉxÉä +vªÉªÉxÉ EòÉ Ê´É¹ÉªÉ ¤ÉxÉÉªÉÉ* Ê½þxnùÒ MÉt Eäò Ê´É´ÉäSÉxÉ ¨Éå ±ÉI¨ÉÒºÉÉMÉ®ú ´ÉÉ¹hÉäªÉ, ®úÉ¨Énù®ú¶É Ê¨É¸É, Ê¶É´ÉxÉÉIÉ +ÉÊnù Ê´É¶Éä¹É ¯ûÊSÉ ®úJÉiÉä lÉä* Ê½þxnùÒ +É±ÉÉäSÉxÉÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå "ºÉ®úº´ÉiÉÒ" "+É±ÉÉäSÉxÉÉ', "xÉ<Ç vÉÉ®úÉ,' "Eò±{ÉxÉÉ', "vÉ¨ÉÇªÉÖMÉ', "xÉ<Ç EòÊ´ÉiÉÉ', "ºÉ¨ÉÒIÉÉ', "ºÉÉÊ®úEòÉ', "Eò½þÉxÉÒ' +ÉÊnù {ÉÊjÉEòÉ+Éå xÉä ¤Éb÷Ò ¨Énùnù EòÒ ½èþ*

UNIT 11

Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ

1. **Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Eäò =nù¦É´É +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ {É®ú Ê´ÉSÉÉ®ú EòÒÊVÉB?**

={ÉxªÉÉºÉ MÉtºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ ¨É½þi´É{ÉÖhÉÇ +ÆMÉ ½èþ VÉÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå {ÉÉ¶ÉSÉÉiªÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò |É¦ÉÉ´É ºÉä, +ÉvÉÖÊxÉEò EòÉ±É ¨Éå, {É±±ÉÊ´ÉiÉ ½Öþ+É* 1882<Ç. ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ¸ÉÒÊxÉ´ÉÉºÉ nùÉºÉ EòÉ ={ÉxªÉÉºÉ "{É®úÒlÉÉ MÉÖ¯û' Ê½þxnùÒ EòÉ {É½þ±ÉÉ ={ÉxªÉÉºÉ ¨ÉÉxÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* ¦ÉÉ®úiÉ ¨Éå +ÆOÉäWÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò ºÉÆ{ÉEÇò ºÉä =zÉÒºÉ´ÉÓ ºÉnùÒ ¨Éå ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+É* +ÆOÉÉäVÉÒ Eäò ºÉÆ{ÉEÇò ºÉä ¤ÉMÉ±ÉÉ ¨Éå {É½þ±Éä ={ÉxªÉÉºÉ ®úÊSÉiÉ ½ÖþB* ¤ÉÆMÉ±ÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò ¤ÉËEò¨É SÉxpù, ®úÉºxÉ, ®úÊ´Éxpù +ÉÊnù Eäò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ |Éä®úhÉÉ ºÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå ¦ÉÒ ={ÉxªÉÉºÉ ®úSÉxÉÉ ¶ÉÖ¯û ½Öþ<Ç* Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ EòÉ +vªÉªÉxÉ |Éä¨ÉSÉÆnù EòÉä Eäòxpù ¤ÉxÉÉEò®ú ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* =xÉEäò {É½þ±Éä Eäò |ÉÉ®ÆúÊ¦ÉEò ªÉÖMÉÉå EòÉä {ÉÚ´ÉÇ |Éä¨ÉSÉÆnùù – ªÉÖMÉ +Éè®ú =xÉEäò ¤ÉÉnù EòÉ ªÉÖMÉ |Éä¨ÉSÉÆnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ ¨ÉÉxÉÉ MÉªÉÉ ½èþ*

|Éä¨ÉSÉxnù {ÉÚ´ÉÇ ={ÉxªÉÉºÉ

|Éä¨ÉSÉxnù Eäò {ÉÚ´ÉÇ Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ – ªÉÉjÉ ¨Éå nùÉä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ {Éb÷É´É {Éb÷iÉä ½éþ – (1) ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÚMÉ, (2)Êuùù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÚMÉ – ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ EòÉ =nÂù¦É´É EòÉ±É ½èþ* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò ±ÉäJÉEòÉå {É®ú +ÆOÉäWÉÒ ´É ¤ÉÆMÉ±ÉÉ ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÉ {ÉªÉÉÇ{iÉ |É¦ÉÉ´É {Éb÷É lÉÉ* ´ÉºiÉÖiÉ: ¤ÉÆMÉ±ÉÉ ={ÉxªÉÉºÉÉå ºÉä ½þÒ Ê½þxnùÒ Eäò |ÉÉ®úÎ¨¦ÉEò ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®úÉä EòÉä ®úSÉxÉÉ ºÉÆºEòÉ®ú +Éè®ú |Éä®úhÉÉ |ÉÉ{iÉ ½Öþ<Ç lÉÒ* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ¨ÉÖJªÉiÉ: iÉÒxÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ oùÎ¹]õMÉÉäSÉ®ú ½þÉäiÉÒ ½éþ–

1. ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ* +ÊvÉùEòÉÆ¶É ={ÉxªÉÉºÉ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ºÉÖvÉÉ®ú EòÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ EòÉä ±ÉäEò®ú ½éþ, VÉÉä ´ÉºiÉÖiÉ: =ºÉ ªÉÖMÉ Eäò ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉÉå Eäò |É¦ÉÉ´É Eäò EòÉ®úhÉ =i{ÉzÉ lÉÒ* ºÉ¦ÉÒ ={ÉxªÉÉºÉ =qäù¶ªÉ{É®úEò ½èþ* +ÊvÉEòÉÆ¶É ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ±ÉäJÉEòÉå xÉä |ÉÉ®ú¨¦É ¨Éå ½þÒ +{ÉxÉÉ =nÂùnäù¶ªÉ |ÉEò]õ Eò®ú Ênùª ÉÉ ½èþ* ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò EÖò®úÒÊiÉªÉÉå EòÉä ºÉÉ¨ÉxÉä ±ÉÉEò®ú =xÉEòÉ Ê´É®úÉävÉ Eò®úxÉÉ +Éè®ú +Énù¶ÉÇ {ÉÊ®ú´ÉÉ®ú ´É ºÉ¨ÉÉVÉ EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÉ ºÉÆnäù¶É näùxÉÉ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÉ ¨ÉÖJªÉ ±ÉlªÉ ®ú½þÉ ½èþ* ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ <ºÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ vÉÉ®úÉ EòÉ ¸ÉÒMÉhÉä¶É "{É®úÒlÉÉ MÉÖ¯û' ºÉä ½þÉäiÉÉ ½èþ* ¤ÉÉ±ÉEÞò¹hÉ ¦É]Âõ]õ, ¸ÉÒÊxÉ´ÉÉºÉ nùÉºÉ, ÊEò¶ÉÉäÊ®ú±ÉÉ±É MÉÉäº´ÉÉ¨ÉÒ, ®úÉvÉÉEÞò¹hÉ nùÉºÉ,

±ÉVVÉÉ®úÉ¨É ¶É¨ÉÇ <ºÉ vÉÉ®úÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ ±ÉäJÉEò ½épÞ*

2. ¦ÉÉ®úiÉäxnÖùªÉÖMÉÒxÉ ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ nÖùºÉ®úÒ |É´ÉÞiÉÒ ½èÞ ÊiÉ±É º¨ÉÒ–+ªªÉÉ®úÒ, VÉÉºÉÚºÉÒ iÉlÉÉ ®úÉä¨ÉÉxÉÒ ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ – {É®Æú{É®úÉ EòÒ ¶ÉÖ¯û+ÉiÉ ÊVÉºÉEòÉ Ê´ÉEòÉºÉ +ÉMÉÉä SÉ±ÉEò®ú Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå ½ÞÉäiÉÉ ½èÞ* näù´ÉEòÒxÉxnùxÉ JÉjÉÒ, MÉÉä{ÉxÉ ®úÉ¨É MÉ½Þ¨É®úÒ iÉlÉÉ `öÉEÖò®ú VÉMÉ ¨ÉÉ½ÞxÉ ËºÉ½Þ Eäò ={ÉxªÉÉºÉÉå xÉä ºÉÉ¨ÉÉxªÉ {ÉÉ`öEòÉå ¨Éå JÉÚ¤É ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉiÉÉ ½ÞÉÊºÉ±É EòÒ*

3. iÉÒºÉ®úÒ |É´ÉÞÊkÉ ½èÞ – +ÉxÉÚÊnùiÉ ={ÉxªÉÉºÉ* <ºÉ¨Éå |ÉÉªÉ: ¤ÉÆÊEò¨ÉSÉxpù SÉÉ]õVÉÔ, ®ú¨Éä¶ÉSÉxpù nùkÉ, iÉÉ®úEòxÉÉlÉ MÉÉÆMÉÖ±ÉÒ Eäò ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ ¤ÉÆMÉ±ÉÉ ={ÉxªÉÉºÉÉå Eäò +xÉÖ´ÉÉnù ½ÖÞB* <ºÉEäò ºÉÉlÉ ½ÞÒ +ÆOÉäVÉÒ, ¨É®úÉ`öÒ +Éè®ú =nÇù Eäò ={ÉxªÉÉºÉÉå Eäò ¦ÉÒ +xÉÖ´ÉÉnù ½ÖÞB*

Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ

<ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå VÉ½ÞÉÆ ÊiÉ±É º¨ÉÒ +ªªÉÉ®úÒ +Éè®ú VÉÉºÉÚºÉÒ ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éä +{ÉÚ´ÉÇ ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉiÉÉ ½ÞÉÊºÉ±É EòÒ ´É½ÞÒ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò VÉÒ´ÉxÉ Eäò ªÉlÉÉlÉÇ EòÉä ±ÉäEò®ú MÉ¨¦ÉÒ®ú ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ Eò¨É ½ÞÒ ½ÖÞ<Ç* Eò½ÞxÉÉ xÉ ½ÞÉäMÉ EòÒ Ê½ÞxnùÒ EòÉ {ÉÉ`öEò EòÉèiÉÚ½Þ±É, ®ú½Þºªé +Éè®ú ®úÉä¨ÉÉÆSÉ ºÉä {ÉÚhÉÇ ={ÉxªÉÉºÉÉå

EòÉä {ÉgøöxÉä Eäò Ê±ÉB ±ÉÉäMÉÉå xÉä Ê½þxnùÒ ºÉÒJÉÒ lÉÒ* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå ¦ÉÒ ºÉ¨ÉÉVÉ ºÉÖvÉÉ®ú EòÉ ±ÉlªÉ ±ÉäEò®ú +Énù¶ÉÇ´ÉÉnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉä MÉªÉä*

|Éä¨ÉSÉxnù +Éè®ú =xÉEòÉ ªÉÖMÉ

={ÉxªÉÉºÉEòÉ®ú Eäò °ü{É ¨Éå |Éä¨ÉSÉxnù EòÉ Ê½þxnùÒ EòlÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå |É´Éä¶É ºÉä´ÉÉºÉnùxÉ Eäò ºÉÉlÉ ½Öþ+É* <ºÉEäò {ÉÚ´ÉÇ ´Éä =nÖÇù ¨Éå Ê±ÉJÉä lÉä* |Éä¨ÉSÉxnù xÉä {É½þ±ÉÒ ¤ÉÉ®ú ={ÉxªÉÉºÉ EòÉä ¨ÉxÉÉä®ÆúVÉxÉ Eäò ºiÉ®ú ºÉä >ð{É®ú =`öÉEò®ú VÉÒ´ÉxÉ Eäò ªÉlÉÉlÉÇ ºÉä VÉÉäb÷xÉä EòÒ ºÉÉlÉÇEò {É½þ±É EòÒ* =x½þÉåxÉä +{ÉxÉä ºÉ¨ÉÉVÉ +Éè®ú ªÉÖMÉ Eäò ªÉlÉÉlÉÇ EòÉä {É½þSÉÉxÉÉ +Éè®ú =ºÉä +{ÉxÉä ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ °ü{ÉÉå ¨Éå +Ê¦É´ªÉÊHò nùÒ* Ê¥ÉÊ]õ¶ÉEòÉ±É ¨Éå VÉ¨ÉÓnùÉ®ú-{ÉÚÄVÉÒ{ÉÊiÉªÉÉå uùÉ®úÉ ÊEòºÉÉxÉÉå EòÉ ¶ÉÉä¹ÉhÉ ´É +º{ÉÞ¶ªÉiÉÉ, ¨ÉvªÉ´ÉMÉÇ EòÒ EÖÆò`öÉBÄ +ÉÊnù EòÉ |É¦ÉÉ´É{ÉÚhÉÇ ÊSÉjÉhÉ =xÉEäò ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ½Öþ+É ½èþ*

+{ÉxÉä ¨ÉÉxÉ´ÉÒªÉ oùÎ¹]õEòÉähÉ Eäò EòÉ®úhÉ |Éä¨ÉSÉxnù Eäò |ÉÉªÉ: ºÉ¦ÉÒ ={ÉxªÉÉºÉ +Én¶ÉÉæx¨ÉÖJÉ ªÉlÉÉlÉÇ oùÎ¹]õ ºÉä |ÉäÊ®úiÉ ½èþ* ªÉlÉÉlÉÇ ÊSÉjÉhÉ Eäò °ü{É ¨Éå VÉ½þÉÄ =x½þÉåxÉä +{ÉxÉä ºÉ¨ÉªÉ EòÒ ºÉ¨É°ªÉÉ+Éå EòÉä =`öÉªÉÉ ½èþ, ´É½þÒ +Énù¶ÉÇ Eäò °ü{É ¨Éå =xÉEòÉ ºÉ¨ÉÉvÉÉxÉ ¦ÉÒ ÊnùªÉÉ

½èÞ, ÊEòxiÉÖ "MÉÉänùÉxÉ' iÉEò +ÉiÉä–+ÉiÉä |Éä¨ÉSÉxnù EòÒ ªÉlÉÉlÉÇ oùÎ¹]õ Ê¤É±EÖò±É º{É¹]õ ½ÞÉä VÉÉiÉÒ ½èÞ* "MÉÉänùÉxÉ' EòÉä OÉÉ¨ÉÒhÉ VÉÒ´ÉxÉ EòÉ ¨É½ÞÉEòÉ´ªÉ Eò½ÞÉ MÉªÉÉ ½èÞ* Ê¶É±{É +Éè®ú ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä ¦ÉÒ |Éä¨ÉSÉxnù xÉä Ê½ÞxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ EòÉä Ê´ÉÊ¶É¹]õ MÉ®úÒ¨ÉÉ |ÉnùÉxÉ EòÒ*

|Éä¨ÉSÉxnù ªÉÖMÉ Eäò ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®úÉå ¨Éå =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®ú ÊxÉ"'ÉÊ±ÉÊJÉiÉ ½éÞ – Ê´É•É¨¦É®úxÉÉlÉ EòÉèÊ¶ÉEò +ÉSÉÉªÉÇ SÉiÉÖ®úºÉäxÉ ¶ÉÉºjÉÒ, |ÉiÉÉ{ÉxÉÉ®úÉ{ÉhÉ ¸ÉÒ´ÉÉºiÉ´É +ÉÊnù ½éÞÞ* |Éä¨ÉSÉxnù Eäò ºÉ¨ÉEòÉÊ±ÉxÉÉå ¨Éå UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´É VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnù xÉä ¦ÉÒ "EÆEòEòÉ±É' (1929)"ÊiÉiÉ±ÉÒ' (1934) ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* |Éä¨ÉSÉxnù ªÉÖMÉ ¨Éå ={ÉxªÉÉºÉ EòÉä xÉ<Ç Ênù¶ÉÉ näùxÉä EòÉ EòÉ¨É VÉèxÉäxpù xÉä ÊEòªÉÉ* "{É®úJÉ' (1929), "ºÉÖxÉÒiÉÉ' (1935)+Éè®ú "iªÉÉMÉ{ÉjÉ'(1937) ={ÉxªÉÉºÉÉå ºÉä VÉèxÉäxpù xÉä +{ÉxÉÒ +É±ÉMÉ {É½ÞSÉÉxÉ ¤ÉxÉÉ<Ç*

´ÉÞxnùÉ´ÉxÉ±ÉÉ±É ´É¨ÉÇ xÉä BäÊiÉ½ÞÉÊºÉEò ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉä* ®úÉ½ÖÞ±É ºÉÉÆEÞòiªÉÉªÉxÉ xÉä ¦ÉÒ "Ê´Éº¨ÉÞiÉÒ Eäò MÉ¦ÉÇ ¨Éå +Éè®ú "ºÉÉäxÉä EòÒ nùÉªÉ' VÉèºÉä BäÊiÉ½ÞÉºÉÒEò °ü¨ÉÉxÉÒ ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉä* º´ÉSUôxnùiÉÉ´ÉÉnù {ÉrùÊiÉ Eäò |Éä¨ÉºÉÚSÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ºÉÚªÉÇEòÉxiÉ ÊjÉ{ÉÉ`öÒ "ÊxÉ®úÉ±ÉÉ' nÂù´ÉÉ®úÉ "+ÉlÉ®úÉ' (1931), "+ªÉEòÉ'

(1935)। "|É¦ÉÉ´ÉiÉÒ' (1936) +Éè®ú "ÊxÉ°ü{É¨ÉÉ' (1936) =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éÞ* +ÉMÉä SÉ±ÉEò®ú ÊxÉ®úÉ±ÉÉ xÉä ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò ªÉlÉÉlÉÇ{É®úEò Ê´É¶Éä¹ÉEò®ú nùÊ±ÉiÉ ºÉ¨ÉÉVÉ {É®ú EäòÎxpùiÉ ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ*

|Éä¨ÉSÉxnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ

|Éä¨ÉSÉxnù Eäò ¤ÉÉnù Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Eò<Ç ¨ÉÉäb÷Éå ºÉä MÉÖWÉ®úxÉä ±ÉMÉ* 1950 iÉEò Eäò |ÉÉ®ÆúÊ¦ÉEò nù¶ÉEòÉå ¨Éå £òªÉb÷ +Éè®ú ¨ÉÉEòºÉÇ EòÒ Ê´ÉSÉÉ®ú vÉÉ®úÉ EòÉ |É¦ÉÉ´É ®ú½þÉ, 1960 iÉEò Eäò nÖùº É®äú SÉ®úhÉ ¨Éå |ÉªÉÉäMÉÉi¨ÉEò Ê´É¶Éä¹ÉiÉÉBÄ nùì¶ÉiÉ ½Öþ<Ç lÉÒ* +Éè®ú ºÉÉ`öÉäkÉ®úÒ ={ÉxªÉÉºÉ ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEòiÉÉ´ÉÉnùÒ Ê´ÉSÉÉ®ú vÉÉ®úÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉiÉÉ Ê¨É±ÉiÉÒ ½èþ*

|Éä¨ÉSÉxnùÉäiÉ®ú ªÉÖMÉ Eäò {É½þ±Éä nù¶ÉEò ¨Éå £òÉªÉb÷ ºÉä |É¦ÉÉÊ´ÉiÉ ½þÉäEò®ú ÊVÉºÉ ¨ÉxÉÉäÊ´É¶±Éä¹ÉhÉÉi¨ÉEò EòlÉÉºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ MÉªÉÒ =ºÉEòÒ {ÉÞ¹`ö¦ÉÚʨÉ VÉèxÉäxpù Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ|Éä¨ÉSÉÆxnù ªÉÖMÉ ¨Éå ½þÒ iÉèªÉÉ®ú ½Öþ<Ç lÉÒ* "{É®úJÉ', "ºÉÖÊxÉiÉÉ', "iªÉÉMÉ{ÉjÉ' +ÉÊnù =xÉEäò |ÉÉ®ÆúÊ¦ÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ´ªÉÊHò Eäò ¨ÉxÉ EòÒ ¶ÉÆEòÉ+Éå, MÉÖÎilÉªÉÉå +Éè®ú =±ÉZÉxÉÉå EòÉ ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

<ºÉÒ {É®ÆÚ{É®úÉ ¨Éå ¸ÉÒ +ÉYÉäªÉ EòÉ xÉÉ¨É +ÉiÉÉ ½èþ ÊVÉx½þÉåxÉä ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ ºÉä ºÉÆ¤ÉÎxvÉiÉ Ê´É¹ÉªÉÉå

{É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ Eò<Ç ¸Éä¹`ö ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉEò®ú Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Eäò lÉäjÉ EòÉä xÉªÉÒ Ênù¶ÉÉ nùÒ* =xÉEäò "¶ÉäJÉ®ú BEò VÉÒ´ÉxÉÒ', "xÉnùÒ Eäò uùÒ{É', "+{ÉxÉä +{ÉxÉä +VÉxÉ¤ÉÒ', +ÉÊnù ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ´ªÉÊHò Eäò +xiÉ¨ÉÇxÉ Eäò ºÉÆPÉ¹ÉÉæ iÉlÉÉ ªÉÉèxÉ ºÉ¨É¤ªÉÉ+Éå EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ½Öþ+É ½èþ* +VÉäªÉ EòÉ |ÉlÉ¨É ={ÉxªÉÉºÉ ½èþ "¶ÉäJÉ®ú BEò VÉÒ´ÉxÉÒ'* ªÉ½þ VÉÒ´ÉxÉÒ Eäò °ü{É ¨Éå Ê±ÉJÉÉ MÉªÉÉ |ÉªÉÉäMÉÉi¨ÉEò ={ÉxªÉÉºÉ ½èþ* ªÉ½þ VÉÒ´ÉxÉÒ =ºÉ ¨ÉxÉÖ¹ªÉ EòÒ ½èþ VÉÉä +{ÉxÉä ¦ÉÒiÉ®ú ½þ®ú lÉhÉ +xÉäEò ¨ÉxÉÖ¹ªÉÉå EòÉä VÉÒiÉÉ ½èþ* Ê¶É±{É EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä <ºÉ¨Éå {ÉÉjÉ ¶ÉÉè±ÉÒ, º´É{xÉ ¶Éè±ÉÒ, b÷ÉªÉ®úÒ ¶Éè±ÉÒ +ÉÊnù EòÉ |ÉªÉÉäMÉ ½Öþ+É ½èþ* ¨ÉxÉÉäÊ´É¶±Éä¹ÉhÉ{É®úEò ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉxÉä´ÉÉ±Éä ±ÉäJÉEòÉå ¨Éå <±ÉÉSÉxpù VÉÉä¶ÉÒ EòÉ xÉÉ¨É ¦ÉÒ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ*

<ºÉÒ VÉ¨ÉÉxÉä ¨Éå Eò<Ç BäºÉä ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉä MÉªÉä ÊVÉxÉ¨Éå ºÉ¨ÉÉVÉ´ÉÉnùÒ oùÎ¹]õEòÉhÉ EòÒ |ÉvÉÉxÉiÉÉ ®ú½þÒ* ªÉ½þ ºÉ¨ÉÉVÉ´ÉÉnùÒ où¹]õÒ ¨ÉÉEòºÉÇ Eäò ÊºÉrùÉxiÉÉå {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ lÉÉ* BäºÉä ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ {É®Æú{É®úÉ EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ ªÉ¶É{ÉÉ±É xÉä ÊEòªÉÉ* ªÉ¶É{ÉÉ±É EòÉ |ÉÉ®ÆúÊ¦ÉEò VÉÒ´ÉxÉ GòÉÎxiÉEòÉ®úÒ nù±É ºÉä ºÉÆ¤ÉxvÉ lÉÉ* <ºÉÊ±ÉB =xÉ{É®ú ¨ÉÉEòºÉÇ´ÉÉnùÒ Ê´ÉSÉÉ®ú VÉÉ®úÉ EòÉ MÉ½þ®úÉ |É¦ÉÉ´É {Éb÷É lÉÉ*

<xÉEòÉ "ZÉÖ`öÉ ºÉSÉ' ¨É½þÉEòÉ´ªÉÉi¨ÉEò ={ÉxªÉÉºÉ ½èþ, ÊVÉºÉ¨Éå Ê´É¶ÉÉ±É ¿ò±ÉEò {É®ú VÉÒ´ÉxÉ EòÒ VÉÊ]õ±É ºÉ¨ÉÆºªÉÉ+Éå +Éè®ú °ü{ÉÉå EòÉä |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

|Éä¨ÉSÉxnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ ¨Éå EÖòUô ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®úÉå xÉä BäÊiÉ½þÉÊºÉEò Ê´É¹ÉªÉ ±ÉäEò®ú ºÉÖxnù®ú ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* |Éä¨ÉSÉxnù Eäò ¤ÉÉnù +ÉSÉÉªÉÇ ½þWÉÉ®úÒ |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ ºÉä ®úÊSÉiÉ "¤ÉÉhÉ¦É]Âõ]õ EòÒ +Éi¨ÉEòlÉÉ' "SÉÉ°üSÉxpù±ÉäJÉ', "{ÉÖxÉxÉÇ´ÉÉ' +ÉÊnù BäÊiÉ½þÉÊºÉEò ={ÉxªÉÉºÉ EòlªÉ iÉlÉÉ Ê¶É±{É EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä ¤É½ÖþiÉ |É¦ÉÉ´ÉÉi¨ÉEò ½þÉä MÉªÉä ½éþ* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå Ê´É¶Éä¹ÉEò®ú 1950 Eäò ¤ÉÉnù +ÉÆSÉÊ±ÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ ¤Éb÷Ò ºÉÆJªÉÉ ¨Éå ½þÉäxÉä ±ÉMÉÒ* ªÉä ={ÉxªÉÉºÉ BEò +Éà®ú ´ÉèªÉÊHòEò ½èþ iÉÉä nÖùºÉ®úÒ +Éà®ú ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ¦ÉÒ ½èþ* <xÉ¨Éå º´ÉÉiÉÆjªÉÉäkÉ®ú ¦ÉÉ®úiÉ Eäò xÉªÉä {ÉÊ®ú´Éä¶ÉÉå +Éè®ú ºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå ºÉä VÉÖZÉxÉä EòÉ ´ÉÉiÉÉ´É®úhÉ {ÉÉªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* +ÉÆSÉÊ±ÉEò ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®úÉå EòÒ EòÉäÊ]õ ¨Éå {É½þ±Éä xÉÉMÉVÉÖÇxÉ EòÉ xÉÉ¨É +ÉiÉÉ ½èþ* ¿òhÉÒ•É®úxÉÉlÉ ®äúhÉÖ Eäò ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå ºÉ½þÒ +lÉÕ ¨Éå +ÉÄSÉÊ±ÉEòiÉÉ =¦É®ú +ÉªÉÒ ½èþ* "¨Éè±ÉÉÉ +ÉÄSÉ±É', "{É®úiÉÒ {ÉÊ®úEòlÉÉ' +ÉÊnù ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå OÉÉ¨ÉÉÆSÉ±ÉÉå Eäò VÉÒ´ÉxÉ +Éè®ú ºÉÆºEÞòÊiÉ EòÉ VÉÒ´ÉxiÉ ÊSÉjÉhÉ

Ê¨É±ÉiÉÉ ½èÞ* näù´Éäxpù ºÉÉiªÉÉlÉÔ EòÉ "Eò`ö{ÉÖiÉ±ÉÒ', =nùªÉ¶ÉÆEò®ú ¦É]Âõ]õ EòÉ "ºÉÉMÉ®ú ±É½Þ®åú +Éè®ú "¨ÉxÉÖ¹ªÉ", ®úÉÆMÉäªÉ ®úÉÞÉ´É Eäòò "EòÉEòÉ', "Eò¤É iÉEò {ÉÖEòÉ°Äü', ®úÉ¨Énù®ú¶É Ê¨É¸É EòÉ "{ÉÉxÉÒ EòÒ |ÉÉSÉÒ®ú', Ê½Þ¨ÉÉ¶ÉÖ ¸ÉÒ´ÉÉºiÉ´É EòÉ "®úlÉ Eäò {ÉÊ½ÞªÉä' – ªÉä ºÉ¤É +{ÉxÉä gÆøùMÉ ºÉä |É¦ÉÉ´É¶ÉÉ±ÉÒ OÉÉ¨ÉÉÆSÉ±ÉÒªÉ ={ÉxªÉÉºÉ ½éÞÞ*

EòÊ´ÉiÉÉ Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ ={ÉxªÉÉºÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå ¦ÉÒ Eò<Ç ±ÉäJÉEòÉå xÉä Ê¶É±{É BÆ´É ¶Éè±ÉÒ oùÎ¹]õò ºÉä xÉÚiÉxÉ |ÉªÉÉäMÉ ÊEòªÉä* {ÉÚ´ÉÇ´ÉiÉÔ ªÉÖMÉÉå Eäò ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå Eò½ÞÉxÉÒ +Éè®ú SÉÊ®újÉ {É®ú ¨É½Þi´É Ênùª ÉÉ VÉÉiÉÉ lÉÉ* ±ÉäÊEòxÉ +ÉMÉÉä SÉ±ÉEò®ú EòlÉÉ iÉi´É lÉÒhÉ ½ÞÉä MÉªÉÉ* |ÉiÉÒEò,]õÉ<Ç¨É-Ê¶É}]õ +ÉÊnù Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå xÉªÉä Ê¶É±{É Eäò nù¶ÉÇxÉ ½ÖÞB* |É¦ÉÉEò®ú ¨ÉÉSÉ´Éä Eäò "{É®úxiÉÖ', "ºÉÉÄªÉÉ', "uùÉ¦ÉÉ' +ÉnùÒ ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå Ê¶É±{É EòÒ oùÞÎ¹]õ ºÉä xÉ´ÉÒxÉ |ÉªÉÉäMÉ ÊEòªÉä MÉªÉä ½éÞ* ¦ÉÉ®úiÉÒ xÉä "ºÉÖ®úVÉ EòÉ ºÉÉiÉ´ÉÉÄ PÉÉäb÷É' ¨Éå +±ÉMÉ +±ÉMÉ ´ªÉÊHòªÉÉå EòÒ Eò½ÞÉÊxÉªÉÉå EòÉä BEò ºÉÚjÉ ¨Éå Ê{É®úÉäªÉÉ ½èÞ* ºÉ´ÉÇ•É®ú nùªÉÉ±É ºÉEòºÉäxÉÉ xÉä SÉäiÉxÉÉ-|É´ÉÉ½Þ ¶Éè±ÉÒ +Éè®ú ÊºÉxÉäÊ®úªÉÉå]äõEòxÉÒEò EòÉ |ÉªÉÉäMÉ Eò®úiÉä ½ÖB BEò |ÉÊiÉEòÉi¨ÉEò ={ÉxªÉÉºÉ Eäò °ü{É ¨Éå "ºÉÉäªÉÉ ½ÖÞ+É VÉ±É'

EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ ½èþ* xÉ®äú¶É ¨Éä½þxÉÉ xÉä "bÖ÷¤ÉiÉäò ¨ÉºiÉÚ±É', "BEò {ÉlÉ ¤ÉxvÉÖ lÉÉ* +ÉÊnù ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå Ê´É¹ÉªÉ BÆ´É ¶Éè±ÉÒ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ xɪÉä |ɪÉÉäMÉ ÊEòªÉä ½éþ*

+ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ Eäò ªÉÆjÉÒEò®úhÉ, +ÉÎºiÉi´É´ÉÉnùÒ ÊSÉxiÉxÉ, ¨ÉÖ±ªÉ ¶ÉÉä¹ÉhÉ +ÉÊnù Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉxÉä´ÉÉ±ÉÉå ¨Éå ¸ÉÒ. ¨ÉÉä½þxÉ ®úÉEäò¶É EòÉ xÉÉ¨É |ÉÊºÉrù ½èþ* ®úÉEäò¶É Eäò "+xvÉäää®äú ¤Éxnù Eò¨É®äú' ¨Éå |Éä¨É EòÒ ¨ÉÚ±ªÉ ½þÒxÉiÉÉ, +Éè®ú "xÉ +ÉxÉä´ÉÉ±ÉÉ Eò±É' ¨Éå ´ªÉÊHò ¨ÉxÉ EòÒ ÊxɹÉävÉÉi¨ÉEò ÎºlÉÊiÉ EòÉ ÊSÉjÉhÉ ½Öþ+É ½èþ* "+ÆvÉäù®äú ¤Éxnù Eò¨É®äú' ®úÉEäò¶É EòÉ {É½þ±ÉÉ +Éè®ú ºÉ¤ÉºÉä +ÊvÉEò SÉÌSÉiÉ ={ÉxªÉÉºÉ ½èþ* ÊxÉ¨ÉÇ±É ´É¨ÉÇ Eäò "´Éä ÊnùxÉ', "±ÉÉxÉ]õÒxÉ EòÒ UôiÉ', BEò ÊSÉlÉb÷É ºÉÖJÉ' +ÉÊnù ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå {ÉÊ®ú´ÉÉÊ®úEò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ ÊxÉ®úlÉÇEòiÉÉ BÆ´É ´ªÉÊHò EòÒ Ê´É´É¶ÉiÉÉ EòÉ ÊSÉjÉhÉ +ÉvÉÖÊxÉEò ¤ÉÉävÉ Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú ÊEòªÉÉ ½èþ* EÞò¹hÉ ºÉÉä¤ÉiÉÒ, ={ÉÉÊ|ɪÉÆ´ÉnùÉ +ÉÊnù ¨ÉÊ½þ±ÉÉ ±ÉäÊJÉEòÉ+Éå xÉä ¦ÉÒ +ÉvÉÖÊxÉEò ¤ÉÉävÉ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ Eò<Ç ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå VÉÒ´ÉxÉ EòÒ Ê®úHòiÉÉ, +VÉxɤÉÒ{ÉxÉ +ÉÊnù EòÉ ºÉ¡ò±É ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

+ÉvÉÖÊxÉEò ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ EòÉäÊ]õ ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò SÉäiÉxÉÉ ºÉä +xÉÖ|ÉÉÊhÉiÉ EÖòUô ºÉÖxnù®ú ={ÉxªÉÉºÉ |ÉÉ{iÉ ½èþ ÊVÉxÉ¨Éå

º´ÉÉiÉÆjªÉÉäkÉ®ú ¦ÉÉ®úiÉ EòÒ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò +Éè®ú ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò Ê´ÉºÉÆMÉÊiÉªÉÉå EòÉ +ÆEòxÉ Eò®úEäò =xÉ{É®ú iÉÒJÉÉ ´ªÉMªÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ ½èþ* b÷É. ®úÉ¨Énù®ú¶É Ê¨É¸É EòÉ "±ÉÉ±É {ÉÒ±ÉÒ VÉ¨ÉÒ', ®ú¨Éä¶É SÉxpù ¶ÉÉ½þ EòÉ "MÉÉä¤É®ú MÉhÉä¶É', +¨ÉÞiÉ®úÉªÉ EòÉ "vÉÖ+ÉÄ', ¶Éè±É¶É ¨ÉÊ]õªÉÉxÉÒ EòÉ "UôÉä]äõ UôÉä]äõ {ÉIÉÒ', ÊMÉÊ®ú®úÉVÉ ÊEò¶ÉÉä®ú EòÉ "<xpù ºÉÖxÉä' <xÉ ºÉ¦ÉÒ ={ÉxªÉÉºÉÉå ¨Éå OÉ¨ÉÒhÉ iÉIÉÉ ¶É½þ®úÒ ÊVÉxnùMÉÒ +Éè®ú ¨ÉvªÉ´ÉMÉÔªÉ ±ÉÉäMÉÉå EòÒ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò BÆ´É +ÉIÉÇEò ÎºIÉÊiÉªÉÉå EòÉ ÊSÉjÉhÉ ¨ÉÉì¨ÉEò gÆøùMÉ ºÉä ½Öþ+É ½èþ*

ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò SÉäiÉxÉÉ EòÉä +ÉvÉÉÊ®úiÉ Eò®úEäò ¦ÉÒ EÖòUô ¸Éä¹`ö ={ÉxªÉÉºÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ <ºÉ VÉ¨ÉÉxÉÂ ¨Éå ½Öþ<Ç* b÷É. ½þVÉÉ®úÒ |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ Eäò "+xÉÉ¨ÉnùÉºÉ EòÉ {ÉÉälÉÉ' ¨Éå |ÉÉSÉÒxÉ ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÆºEÞòÊiÉ EòÉ ºÉVÉÒ´É ÊSÉjÉhÉ Ê¨ÉxÉiÉÉ ½èþ* xÉ®äúxpù EòÉä½þ±ÉÒ xÉä {É®Æú{É®úÉMÉiÉ ®úÉ¨ÉEòlÉÉ EòÉä +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ Eäò +xÉÖEÖò±É |ÉºiÉÖiÉ Eò®úEäò ={ÉxªÉÉºÉ Ê±ÉJÉÉ* ={ÉªÉÖHò ±ÉäJÉEòÉå Eäò +±ÉÉ´ÉÉ +Éè®ú ¦ÉÒ Eò<Ç ±ÉäJÉEò iÉIÉÉ ±ÉäÊJÉEòÉBÄ Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* Ê´ÉÊ{ÉxÉ SÉiÉÖ´ÉænùÒ, MÉÉäÊ´Éxnù Ê¨É¸É, näù´É®úÉVÉ, ®ú¨ÉÉEòÉxiÉ, b÷É. ½äþ¨É®úÉVÉ "ÊxÉ¨ÉÇ¨É', ¨ÉxÉÉä½þ®ú ¶ªÉÉ¨É VÉÉä¶ÉÒ, b÷Ò.

ºÉÖ¶ÉÒ±ÉEÖò¨ÉÉ®ú "¿Öò±±Éä', Eäò¶É´É |ÉºÉÉnù' Ê¨É¸É, ¦ÉÒ¹¨É ºÉÉÊ½þxÉÒ +ÉÊnù Eò<Ç ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®úÉå xÉä Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Eäò lÉäjÉ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉxÉä ¨Éå ªÉÉäMÉ ÊnùªÉÉ ½èþ* +ÉVÉ EòÉ Ê½þxnùÒ ={ÉxªÉÉºÉ Eò<Ç Ênù¶ÉÉ+Éå ¨Éå +ÉMÉÉä EòÒ +Éè®ú ¤Éfø ®ú½þÉ ½èþ*

UNIT 12

Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ

1. +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ ¨Éå Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ÊEòºÉ |ÉEòÉ®ú ½Öþ+É?

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ºÉä ±ÉäEò®ú ½þÒ Ê½þxnùÒ ¨Éå xÉÉ]õEò–ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ ºÉ½þÒ Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+É* ±ÉäÊEòxÉ xÉÉ]õEò EòÉ =nÂù¦É´É Ê½þxnùÒ ¨Éå ¤É½ÖþiÉ {É½þ±Éä ½Öþ+É lÉÉ* Ê½þxnùÒ ¨Éå xÉÉ]õEò ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ ´ÉÉºiÉÊ´ÉEò +É®ÆÚ¦É +ÉvÉÖxÉÒEò EòÉ±É ºÉä ½þÉäiÉÉ ½èþ* Ê½þxnùÒ Eäò xÉÉ]õEò ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä iÉÒxÉ JÉhb÷Éå ¨Éå Ê´É¦ÉÉÊVÉiÉ Eò®úEäò, =ºÉEäò <ÊiÉ½þÉºÉ EòÉ +vªÉªÉxÉ ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* 1857 ºÉä 1900<Ç iÉEò Eäò ªÉÖMÉ EòÉä ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù–ªÉÖMÉ, 1900-1930iÉEò EòÉ ºÉ¨ÉªÉ |ÉºÉÉnù ªÉÖMÉ +Éè®ú 1930 ºÉä +¤É iÉEò EòÉ EòÉ±É |ÉºÉÉnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ ¨ÉÉxÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù +Éè®ú =xÉEäò ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ xÉÉ]õEòEòÉ®úÉå xÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå +xÉäEò

¸Éä¹`ö xÉÉ]õEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* º´ÉªÉÆ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù xÉä +{ÉxÉä Ê{ÉiÉÉ ¤ÉÉ¤ÉÖ MÉÉä{ÉÉ±É SÉxpù nÂù´ÉÉ®úÉ ®úÊSÉiÉ xÉ½Öþ¹É xÉÉ]õEò EòÉä Ê½þxnùÒ EòÉ |ÉlÉ¨É xÉÉ]õEò ¨ÉÉxÉÉ ½èþ* ÊEòxiÉÖ =xÉEòÉ ´É½þ {ÉnÂùªÉ¤Érù xÉÉ]õEò +ÉvÉÖÊxÉEò xÉÉ]õEò Eäò ±ÉIÉhÉÉå EòÒ {ÉÚÌiÉ xÉ½þÒ Eò®úiÉÉ*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ½þÊ®ú¶SÉxpù ½þÒ BäºÉä xÉÉ]õEòEòÉ®ú ½èþ ÊVÉx½þÉåxÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä xÉÉ]õEòÒªÉ MÉÖhÉÉå ºÉä ªÉÖHò xÉÉ]õEò EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù xÉä +xÉÚÊnùiÉ +Éè®ú ¨ÉÉèÊ±ÉEò ºÉ¤É Ê¨É±ÉÉEò®ú ºÉjÉ½þ xÉÉ]õEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* =x½þÉåxÉä ºÉÆºEÞòiÉ, ¤ÉÆMÉÉ±ÉÉ +Éè®ú +ÆOÉäVÉÒ xÉÉ]õEòÉå EòÉ MÉ½þ®úÉ +ÉvªÉªÉxÉ ÊEòªÉÉ lÉÉ* =x½þÉåxÉä "Ê´ÉtÉºÉÖnù®ú' xÉÉ¨ÉEò ¤ÉÆMÉÉ±ÉÒ xÉÉ]õEò EòÉ Ê½þxnùÒ ¨Éå +xÉÖ´ÉÉnù ÊEòªÉÉ* =ºÉEäò ¤ÉÉnù +xÉäEò ¤ÉÆMÉÉ±ÉÒ xÉÉ]õEòÉå Eäò +xÉÖ´ÉÉnù ½ÖþB* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù Eäò Ê¨ÉjÉ ¤ÉÉ±Éä·É®ú |ÉºÉÉnù xÉä ¶ÉäEòÎº{ÉªÉ®ú Eäò "Merchant of Venice' EòÉ +xÉÖ´ÉÉnù ÊEòªÉÉ VÉÉä º´ÉªÉÆ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù nÂù´ÉÉ®úÉ ºÉÆ¶ÉÉäÊvÉiÉ ½þÉäEò®ú "nÖù±ÉÇ¦É ¤ÉxvÉÖ Eäò xÉÉ¨É ºÉä |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖþB+É* ¶ÉäEòÎº{ÉªÉ®ú Eäò +xªÉ +xÉäEò xÉÉ]õEòÉå EòÉ ¦ÉÒ =ºÉ EòÉ±É ¨Éå +xÉÖ´ÉÉnù ½ÖþB+É* =x½þÉåxÉä {ÉÉ¶SÉÉiªÉ +Éè®ú {ÉÚ´ÉÔ xÉÉ]õ¬ ¶ÉèÊ±ÉªÉÉå EòÉ =ÊSÉiÉ ºÉ¨Éx´ÉªÉ Eò®úxÉä EòÉ |ÉªÉÉºÉ

ÊEò³ÉÉ* =xÉEäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå ºÉÆºEÞòiÉ xÉÉ]õEòÉå EòÒ ¦ÉÒ VÉÊ]õ±ÉiÉÉ xÉ½þÓ* ¤ÉÆMÉÉ±ÉÒ xÉÉ]õEòÉå Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ +ÉvÉÖÊxÉEòiÉÉ EòÒ +ÊiÉ¶É³ÉiÉÉ ¦ÉÒ xÉ½þÒ* =x½þÉåxÉä ¤ÉÒSÉ EòÉ ®úÉºiÉÉ +{ÉxÉÉ³ÉÉ* ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò, BäÊiÉ½þÉÊºÉEò, vÉÉì¨ÉEò, {ÉÉè®úÉÊhÉEò, +ÉÊnù Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ lÉäjÉÉå ºÉä Ê´É¹É³É ºÉÆSÉÉ®ú Eò®úEäò =x½þÉåxÉä xÉÉ]õEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ*

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù EòÒ xÉÉ]õEò ºÉÆ¤ÉxvÉÒ ={É±É¤vÉÒ ªÉ½þ ½èþ ÊEò =x½þÓó ºÉä ±ÉäEò®ú ºÉÉÊ½þi³ÉEòÉ®úÉå xÉä xÉÉ]õEòÉå EòÒ {É®Æú{É®úÉ ¶ÉÖ¯û EòÒ* ®ÆúMÉ ¨ÉÆSÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä =xÉEäò xÉÉ]õEò ¤É½ÖþiÉ ºÉ¿ò±É ½èþ* ¤Énù®úÒxÉÉ®úÉ®úhÉ SÉÉèvÉ®úÒ xÉä SÉÉ®ú xÉÉ]õEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* =xÉEäò xÉÉ]õEòÉå {É®ú ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù EòÉ º{É¹]õ |É¦ÉÉ´É ±ÉÊlÉiÉ ½èþ* ¤ÉÉ±ÉEÞò¹hÉ ¦É]Âõ]õ xÉä ±ÉMÉ¦ÉMÉ BEò nùVÉÇxÉ ¨ÉÉèÊ±ÉEò iÉlÉÉ +xÉÚÊnùiÉ xÉÉ]õEò |ÉºiÉÖiÉ ÊEò³Éä ½éþ* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò +x³É ®úSÉxÉÉEòÉ®ú ¸ÉÒ. näù´ÉEòÒòxÉÆnùxÉ JÉjÉÒ xÉä {ÉÉè®úÉÊhÉEò xÉÉ]õEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* +ÆÊ¤ÉEòÉnùkÉ ´³ÉÉºÉ xÉä ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò xÉÉ]õEò Ê±ÉJÉä* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉÒxÉ xÉÉ]õEò {ÉÉè®úÉÊhÉEò, BäÊiÉ½þÉÊºÉEò, EòÉ±{ÉÊxÉEò +ÉÊnù Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ Ê´É¹É³ÉÉå {É®ú Ê±ÉJÉä MÉ³Éä* +ÊvÉEòÉÆ¶É xÉÉ]õEò +Énù¶ÉÇ´ÉÉnùÒù lÉä, VÉÉä VÉxÉiÉÉ ¨Éå =nùÉkÉ iÉi´ÉÉå Eäò |ÉSÉÉ®ú EòÉä ±ÉlªÉ

Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä lÉä* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Eäò {É¶SÉÉiÉ EÖòUô ºÉ¨ÉªÉ iÉEò xÉÉ]õEòÉå EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ¯ûEò MÉªÉÉ*

|ÉºÉÉnù ªÉÖMÉ

Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò Eäò lÉäjÉ ¨Éå VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnù Eäò ºÉÉlÉ +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ EòÒ ¶ÉÖ¯û+ÉiÉ ½þÉäiÉÒ ½èþ* =xÉEäò ªÉÖMÉ ¨Éå xÉÉ]õEòÉå EòÉ SÉ®ú¨ÉÉäiEò¹ÉÇ ½ÖÞ+É* =x½þÉåxÉä xÉ Eäò´É±É xÉªÉÒ ¶Éè±ÉÒ +{ÉxÉÉªÉÒ, ¤ÉÎ±Eò {ÉÚ´ÉÇªÉÖMÉÒxÉ xÉÉ]õEòÉå EòÉ ¶ÉÞÆMÉÉ®ú ÊEòªÉÉ* ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEòÉå ¨Éå {ÉÉjÉÉå Eäò +xiÉuÇùxuù EòÉ Eò±ÉÉi¨ÉEò ÊSÉjÉhÉ |ÉºÉÉnù xÉä ÊEòªÉÉ* =xÉEäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå nùÉ¶ÉÇÊxÉEòiÉÉ EòÒ UôÉªÉÉ ¿èòxÉÒ ½ÖÞ<Ç ½èþ* =xÉEäò xÉÉ]õEò xÉ iÉÉä ºÉÖJÉÉxiÉ ½èþ, xÉ nÖù:JÉÉxiÉ, ´Éä |ÉºÉÉnùxiÉ ¨ÉÉxÉä VÉÉiÉä ½èþ* =xÉEäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ xÉÉ]õEòÉå ¨Éå BäÊiÉ½þÒÊºÉEò xÉÉ]õEòÉå EòÒ ºÉÆJªÉÉ VªÉÉnùÉ ½èþ* BäÊiÉ½þÉÊºÉEò ½þÉäiÉä ½ÖÞB ¦ÉÒ ´Éä ºÉ¨ÉºªÉÉ ¨ÉÚ±ÉEò ½èþ* "ºÉÉVÉ¸ÉÒ, "Ê´É¶ÉÉJÉ', "ºEòxnù MÉÖ{iÉ', "+VÉÉiÉ ¶ÉjÉÖ', "SÉxpùMÉÖ{iÉ', "wÉÖ´Éº´ÉÉÊ¨ÉxÉÒ', =xÉEäò |É¨ÉÖJÉ BäiÉÒ½þÉÊºÉEò xÉÉ]õEò ½èþ* "VÉxÉ¨ÉäVÉªÉ EòÉ xÉÉMÉªÉYÉ' =xÉEòÉ {ÉÉè®úÉÊhÉEò xÉÉ]õEò ½èþ* ¤ÉÉèrùEòÉ±É, +ÉªÉÇEòÉ±É, iÉlÉÉ MÉÖ{iÉEòÉ±É EòÉ +ÉvÉÉ®ú Ê±ÉB ½ÖÞB ¦ÉÒ |ÉºÉÉnù Eäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå ´ÉiÉÇ¨ÉÉxÉEòÉ±ÉÒxÉ ºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå EòÉä

Ê¨É±ÉÉªÉÉ MÉªÉÉ ½èÞ* |ÉºÉÉnù Eäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå <ÊiÉ½þÉºÉ +Éè®ú Eò±{ÉxÉÉ EòÉ ºÉÖxnù®ú ºÉ¨Éx´ÉªÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èÞ*

|ÉºÉÉnùVÉÒ xÉä +{ÉxÉä {ÉÉjÉÉå Eäò ÊSÉjÉhÉ ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÆºEÞòÊiÉ Eäò iÉÒuÉ +ÉOÉ½þ, ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ EòÉ +ÉvÉÉ®ú +Éè®ú nùÉ¶ÉÇÊxÉEò ÊxÉªÉÉäVÉxÉÉ EòÉ {ÉÉ±ÉxÉ ÊEòªÉÉ ½èÞ* xÉÉ®úÒúÊSÉjÉhÉ ¨Éå ´Éä +ÉÊvÉEò ºÉ¿ò±É ½ÖÞB ½éÞ* MÉÒiÉ ªÉÉäVÉxÉÉ Eäò EòÉ®úhÉ =xÉEäò xÉÃÉ]õEò Ê´É¶Éä¹É +ÉEò¹ÉÇEò ½èÞ* |ÉºÉÉnùVÉÒ Eäò xÉÉ]õEòÉå Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò ºÉÉÊ½þiªÉ xÉä +xÉÚÊnùiÉ xÉÉ]õEòÉå Eäò EòÉ±É EòÉä UôÉäb÷Eò®ú |ÉÉèfø, ¨ÉÉèÊ±ÉEò xÉÉ]õEòÉå Eäò ªÉÖMÉ ¨Éå |É´Éä¶É ÊEòªÉÉ* |ÉºÉÉnùVÉÒ Eäò ªÉÖMÉ ¨Éå +xªÉ Eò<Ç xÉÉ]õEòEòÉ®úÉå xÉä ºÉÉÊ½þÎiªÉEò ¨ÉÚ±ªÉ ºÉä ºÉÆ{ÉxxÉ xÉÉ]õEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ* ºÉÖnù¶ÉÇxÉ, VÉMÉxxÉÉlÉ |ÉºÉÉnù Ê¨ÉÊ±Éxnùù, MÉÉäÊ´Éxnù´É±±É¦É {ÉxxÉ +ÉÊnù |ÉºÉÉnù Eäò ºÉ¨ÉEòÉÊ±ÉxÉ ¸Éä¹`öõ xÉÉ]õEòEòÉ®ú ½éÞ*

|ÉºÉÉnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ

|ÉºÉÉnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ ¨Éå BäÊiÉ½þÉÊºÉEò xÉÉ]õEòÉå EòÒ {É®Æú{É®úÉ EòÉ {ÉªÉÉÇ{iÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½ÖÞ+É* <ºÉ lÉäjÉ ¨Éå ½þÊ®úEÞò¹hÉ |Éä¨ÉÒ, ´ÉÞxnùÉ´ÉxÉ±ÉÉ±É ´É¨ÉÉÇ, MÉÉäÊ´Éxnù ´É±±É¦É {ÉÆiÉ, SÉxnùMÉÖ{iÉ Ê´ÉtÉ±ÉÆEòÉ®ú, ºÉä`ö MÉÉäÊ´Éxnùnù ÉºÉ, =nùªÉ¶ÉÆEò®ú ¦É]Âõ]õ +ÉÊnù xÉÉ]õEòEòÉ®úÉå

xÉä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ªÉÉäMÉ ÊnùªÉÉ* SÉiÉÖ®úºÉäxÉ ¶ÉÉºjÉÒ, ºÉnÂùMÉÖ¯û ¶É®úhÉ +É´ÉºlÉÒ, ®úÉ¨É´ÉÞlÉ ¤ÉäÊxÉ{ÉÖ®úÒ, MÉÉäEÞò±ÉSÉxpù ¶ÉÉ¨ÉÇ, {ÉÉhbä÷ªÉ ¤ÉäSÉxÉ ¶É¨ÉÇ =OÉ, ®úÉÆMÉäªÉ ®úÉÞÉ´É +ÉÊnù +xÉäEò xÉÉ]õEòEòÉ®úÉå xÉä {ÉÉè®úÉÊhÉEò xÉÉ]õEòÉå Eäò lÉäjÉÉå EòÉä +ÉMÉää ¤ÉgøÉªÉÉ*

xÉÉ]õEòÉå Eäò lÉäjÉ ¨Éå ±ÉI¨ÉÒxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É xÉä +{ÉxÉä ºÉ¨ÉºªÉÉ-xÉÉ]õEòÉå Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ xÉ´ÉÒxÉiÉÉ ={ÉÎºlÉiÉ EòÒ* =x½þÉåxÉä {ÉÚ´ÉÇ Eäò xÉÉ]õEòÉå Eäò ÊxÉªÉ¨ÉÉå EòÉ ÊiÉ®úºEòÉ®ú Eò®ú {ÉÊ¶SÉ¨ÉÒ ÊºÉrùÉxiÉ EòÉä º´ÉÒEòÉ®ú ÊEòªÉÉ* <¤ºÉxÉ +Éè®ú ¹ÉÉì Eäò ¤ÉÖÊrù´ÉÉnùÒ xÉÉ]õEòÉå ºÉä |Éä®úhÉÉ {ÉÉªÉÒ* =x½þÉåxÉä xÉÉ®úÒ EòÒ ÊSÉ®úxiÉxÉ ºÉ¨ÉºªÉÉ EòÉä ±ÉäEò®ú xÉÉ®úÒ +Éè®ú {ÉÖ¯û¹É Eäò ºÉÆ¤ÉxvÉ iÉlÉÉ ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEò ºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå EòÉ Eò±ÉÉi¨ÉEò ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* Ê¨É¸ÉVÉÒ Eäò |ÉÊºÉrù ºÉ¨ÉºªÉÉ¨ÉÚ±ÉEò xÉÉ]õEò ªÉä ½éþþ –"ÊºÉxnÚù®ú EòÒ ½þÉä±ÉÒ', ¨ÉÖÊHò EòÉ ®ú½þºªÉ', "MÉÖÊb÷ªÉÉ EòÉ PÉ®ú', "xÉÉ®únù EòÒ ´ÉÒhÉÉ", "®úÉlÉºÉ EòÉ ¨ÉÆÊnù®ú', "ºÉÆxªÉÉºÉÒ', +ÉÊnù* =xÉEäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå +ÆMÉ Eò¨É ½èþ, {ÉÉjÉ ¦ÉÒ Eò¨É ½éþ* MÉÒiÉÉå EòÒ ={ÉälÉÉ EòÒ MÉªÉÒ* =x½þÉåxÉä ´ªÉÉ´É½þÉÊ®úEò ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ |ÉªÉÉäMÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* Ê¨É¸ÉVÉÒ Eäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå

¤ÉÉèÊrùEò´ÉÉnù, ªÉlÉÉlÉÇ´ÉÉnù +Éè®ú ¿òÉªÉb÷´ÉÉnù |É¨ÉÖJÉiÉÉ ½èÞ*

={ÉäxÞùxÉÉlÉ +¶Eò xÉä +{ÉxÉä xÉÉ]õEòÉå ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò ºÉ¨É°ªÉÉ+Éå EòÉ =nÂùPÉÉ]õxÉ ÊEò ªÉÉ ½èÞ* =x½åÞ +Énù¶ÉÆx¨ÉÖJÉ ªÉlÉÉlÉÇ´ÉÉnùÒ xÉÉ]õEòEòÉ®ú ¨ÉÉxÉxÉÉ =ÊSÉiÉ ½èÞ* ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò xÉÉ]õEòÉå Eäò lÉäjÉ ¨Éä ´ÉÞxnùÉ´ÉxÉ±ÉÉ±É ´É¨ÉÇ EòÉä ¦ÉÒ ºÉ¿ò±ÉiÉÉ |ÉÉ{iÉ ½ÖÞ<Ç* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò |ÉÊºÉnÂùvÉ xÉÉ]õEòEòÉ®ú lÉä Ê´É¹hÉÖ |É¦ÉÉEò®ú*ÊVÉxÉEäò xÉÉ]õEò Ê½ÞxnùÒ ¨Éå ¤É½ÖÞSÉìSÉiÉ ½ÖÞB* =xÉEòÉ "b÷ÉC]õ®' xÉÉ]õEò ¨ÉxÉÉä´ÉèVÉÉÊxÉEò +Éè®ú ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò xÉÉ]õEò ½èÞ ÊVÉºÉ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ iÉxÉÉ´É ¦É®úÒ ¨ÉÉxÉÊºÉEòiÉÉ EòÉ ªÉlÉlÉÇ ÊSÉjÉhÉ ÊEò ªÉÉ MÉªÉÉ ½èÞ* VÉMÉnùÒ¶ÉSÉxpù ¨ÉÉlÉÖ®ú xÉä +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ Eäò ºÉÆPÉ¶ÉÉç EòÉä BäÊiÉ½ÞÉÊºÉEò +Éè®ú Ê¨ÉlÉEòÒlÉ EòlÉÉ Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú +{ÉxÉä xÉÉ]õEòÉå ¨Éå |ºiÉÖiÉ ÊEò ªÉÉ* =xÉEäò xÉÉ]õEò xÉÉ]õ¬Eò±ÉÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä =SSÉ EòÉäÊ]õ Eäò ½éÞ* vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ EòÉ MÉÒÊiÉxÉÉ]õ¬ "+ÉÆvÉÉ ªÉÖMÉ' ªÉÖnÂùvÉ EòÒ ÊSÉ®úxiÉxÉ ºÉ¨É°ªÉÉ EòÉä ±ÉäEò®ú Ê±ÉJÉÉ MÉªÉÉ ¸Éä¹`ö xÉÉ]õEò ½èÞ* b÷É.±Él¨ÉÒxÉÉ®úÉªÉhÉ ±ÉÉ±É xÉä ±ÉMÉ¦ÉMÉ {ÉSÉÉºÉ ºÉä +ÉÊvÉEò xÉÉ]õEò Ê±ÉJÉä* "¨ÉÉnùÉ EòòEò]õºÉ", "+xvÉÉ EÖò+ÉÄ","Eò®ú}ªÉÚ', "®úÉiÉ ®úÉxÉÒ', "ºÉÖªÉÇ¨ÉÖJÉ', "Ê¨É°]õ®ú +Ê¦É¨ÉxªÉÖ',

Eò±ÉÆEòÒ ºÉiªÉ ½þÊ®ú¶ÉSÉxpù' +ÉÊnù =xÉEäò xÉÉ]õEò VÉÒ´ÉxÉ +Éè®ú ºÉ¨ÉÉVÉ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ +ºÉÆMÉÊiÉªÉÉå EòÉ ºÉ¦ò±É ÊSÉjÉhÉ Eò®úiÉä ½éþþ* ¨ÉÆÊSÉªÉ +xÉÖ¦É´É +Éè®ú xÉÉ]õEòÒªÉ |ÉºÉÆMÉÉå EòÉ MÉ½þ®úÉ VÉÉxÉ ±ÉÉ±ÉVÉÒ xÉä ´ªÉHò ÊEòªÉÉ ½èþ*

+ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ Eäò xÉÉ]õEò ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå |ÉºÉÉnùVÉÒ Eäò ¤ÉÉnù ¸ÉÒ. ¨ÉÉä½þxÉ ®úÉEäò¶É EòÉ xÉÉ¨É ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ VÉÉä +{ÉxÉä iÉÒxÉ xÉÉ]õEòÉå Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ EòlªÉ +Éè®ú Ê¶É±{É ¨Éå xÉ´ÉÒxÉiÉÉ ±ÉÉ ºÉEäò* "+É¹ÉÉgø EòÉ BEò ÊnùxÉ' =xÉEòÉ ºÉ¤ÉºÉä |ÉÊºÉrù xÉÉ]õEò ½èþ* SÉÊ®újÉ ÊSÉjÉhÉ ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò nÖùÎ¹]õ, ®ÆúMÉ¨ÉÆSÉ Eäò +xÉÖEÚò±É ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ |ÉªÉÉäMÉ +ÉÊnù Eò<Ç Ê´É¶Éä¹ÉiÉÉBÄ ®úÉEäò¶É Eäò xÉÉ]õEòÉå ¨Éå Ê¨É±ÉiÉÒ ½éþþ* +xÉäEò xÉªÉä xÉÉ]õEòEòÉ®ú ¦ÉÒ <ºÉ lÉäjÉ ¨Éå +ÉªÉä* ¸ÉÒ. SÉxpùMÉÖ{iÉ Ê´ÉtÉ±ÉÆEòÉ®ú, Ê´ÉxÉÉänù ®úºiÉÉäMÉÒ, xÉ®äú¶É ¨Éä½þiÉÉ, ºÉÖ®äúxpù ´É¨ÉÉÇ, Ê¶É´É|ÉºÉÉnù ËºÉ½þ, VÉÉxÉnäù´É +ÉÎMxÉ½þÉäjÉÒ, b÷É. ¶ÉÆEò®ú ¶Éä¹É, ®ú¨Éä¶É ¤ÉJ¶ÉÒ, ¨ÉÖpùÉ®úÉlÉ¨É +ÉÊnù Eò<Ç xÉÉ]õEòEòÉ®úÉå xÉä ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ¨ÉÚ±ªÉÉå EòÉ Ê´É¶É±Éä¹ÉhÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä Eò<Ç xÉÉ]õEò Ê±ÉJÉä* nùªÉÉ|ÉEòÉ¶É ÊºÉx½þÉ, Ê´ÉÊ{ÉxÉ +OÉ´ÉÉ±É, ÊMÉÊ®ú®úÉVÉ ÊEò¶ÉÉä®ú, ¨ÉÊhÉ ¨ÉvÉÖEò®ú, ºÉ´ÉÇ·É®ú nùªÉÉ±É ºÉEòºÉäxÉÉ, ¶É®únù VÉÉä¶ÉÒ,

Ê´ÉxÉªÉ +ÉÊnù |ÉÊiÉ¦ÉÉ´ÉÉxÉ xÉÉ]õEòEòÉ®úÉå xÉä ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò {ÉÊ®úÎºlÉÊiÉªÉÉå {É®ú |ÉiªÉlÉ ªÉÉ +|ÉiªÉlÉ ´ªÉÆMªÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä ¸Éä¹`ö xÉÉ]õEò Ê±ÉJÉä* Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ +xªÉ Ê´ÉvÉÉ+Éå EòÒ +{ÉälÉÉ xÉÉ]Eò ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éxnù MÉÊiÉ ºÉä ½Öþ+É* <ºÉEòÉ BEò EòÉ®úhÉ ®ÆúMÉ¨ÉÆSÉ EòÒ Eò¨ÉÒ ½èþ* +xÉäEò nùÉä¹ÉÉå +Éè®ú EòÊ¦ÉªÉÉå EòÉä ½þÉäiÉä ½ÖþB ¦ÉÒ Ê½þxnùÒ Eäò xÉÉ]õEò ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå Ê´ÉEòÉºÉ EòÒ EòÉ¿òÒ ºÉÆ¦ÉÉ´ÉxÉÉBÄ ½éþþ*

UNIT 13þ

Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ

1. Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò =nÂù¦É´É +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ {É®ú Ê´ÉSÉÉ®ú EòÒÊVÉB?

+ÉvÉÖÊxÉEò EòÉ±É ¨Éå ºÉ®úº´ÉiÉÒ |ÉÊjÉEòÉ Eäò |ÉEòÉ¶ÉxÉ EòÉ±É ºÉä ±ÉäEò®ú Ê½þxnùÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ VÉÉxÉä ±ÉMÉÒ* ºÉxÉ 1900 ¨Éå ºÉ®úº´ÉiÉÒ ¨Éå ÊEò¶ÉÉä®úÒ±ÉÉ±É MÉÉäº´ÉÉ¨ÉÒ ºÉä Ê±ÉÊJÉiÉ <xnÖù¨ÉiÉÒ xÉÉ¨ÉEò Eò½þÉxÉÒ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç* Ê½þxnùÒ Eäò |ÉlÉ¨É Eò½þÉxÉÒEòÉ®ú Eäò °ü{É ¨Éå

ÊEò¶ÉÉä®úÒ±ÉÉ±É EòÉ xÉÉ¨É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èÞ* Eò½ÞÉxÉÒ EòÉ ´ÉÉºiÉÊ´ÉEò Ê´ÉEòÉºÉ VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnù +Éè®ú |Éä¨ÉSÉxnù Eäò ªÉÖMÉ ¨Éå ½ÖÞ+É* 1909 ¨Éå |ÉºÉÉnùVÉÒ EòÒ |ÉlÉ¨É Eò½ÞÉxÉÒ "OÉÉ¨É' <ÞxnÖù {ÉÊjÉEòÉ ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖÞ<Ç* EÖòUô Ê´ÉnÂù´ÉÉxÉ <ºÉ Eò½ÞÉxÉÒ EòÉä ½ÞÒ Ê½ÞxnùÒ EòÒ {É½Þ±ÉÒ ¸Éä¹`ö Eò½ÞÉxÉÒ ¨ÉÉxÉiÉä ½èÞ* UôÉªÉÉ, |ÉÊiÉv´ÉxÉÒ, +ÉEòÉ¶ÉnùÒ{É, +ÉÄvÉÒ, <xpùVÉÉ±É, Ê¤ÉºÉÉiÉÒ, º´ÉMÉÇ Eäò JÉhb÷½Þ®ú +ÉÊnù ¸Éä¹`ö Eò½ÞÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉEò®ú |ÉºÉÉnùVÉÒ xÉä Eò½ÞÉxÉÒ-lÉäjÉ ¨Éå Ê´É¶Éä¹É |ÉÊiÉ¹`öÉ {ÉÉªÉÒ* =xÉEòÒ Eò½ÞÉÊxÉªÉÉå ¨Éå ¦ÉÉ´ÉÉå EòÒ |ÉvÉÉxÉiÉÉ +Éè®ú EòÉ´ªÉÉiÉ¨Eò ¶Éè±ÉÒ EòÉ ºÉÉèxnùªÉÇ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èÞ* |ÉºÉÉnùVÉÒ EòÒ Eò½ÞÉÊxÉªÉÉÄ Eò½ÞÉxÉÒ-Eò±ÉÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä ¸Éä¹`ö ½éÞ* |ÉºÉÉnùVÉÒ EòÒ ¦ÉÉ´ÉÖEòiÉÉ¨ÉªÉÒ ¶Éè±ÉÒ ±ÉäEò®ú ®úÉªÉ EÞò¹hÉnùÉºÉ, SÉhb÷Ò|ÉºÉÉnù ¾Þnùªää¶É Ê´ÉxÉÉnù ¶ÉäEò®ú ´ªÉÉºÉ, MÉÉäÊ´Éxnù´É±±É¦É {ÉÆiÉ +ÉÊnù ±ÉäJÉEòÉå xÉä =xÉEòÒ {É®ÆÚ{É®úÉ EòÉä +ÉMÉÉä ¤ÉføÉªÉÉ*

Eò½ÞÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå |Éä¨ÉSÉxnù Eäò +ÉÊ´É¦ÉÉÇ´É ºÉä BEò xÉªÉä ªÉÖMÉ EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ ½ÖÞ+É* |Éä¨ÉSÉxnù ¤É½ÖÞiÉ {É½Þ±Éä =nÖÇù ¨Éå Eò½ÞÒÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉ ®ú½äÞ lÉä* Ê½ÞxnùÒ ¨Éå =xÉEòÒ ºÉ´ÉÇ|ÉlÉ¨É Eò½ÞÉxÉÒ "{ÉÆSÉ{É®ú¨Éä¶´É®ú' ºÉxÉÂ 1916 ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖÞ<Ç* |Éä¨ÉSÉxnù xÉä Ê½ÞxnùÒ Eò½ÞÉxÉÒ ¨Éå +Énù¶ÉÉæx¨ÉÖJÉ ªÉlÉÉlÉÇ´ÉÉnùÒ {É®ÆÚ{É®úÉ EòÒ |ÉÊiÉ¹`öÉ

EòÒ* |Éä¨ÉSÉxnù EòÒ =nÖÇù Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ "ºÉÉäVÉä ´ÉiÉxÉ' xÉÉ¨É ºÉä ºÉÆEòÊ±ÉiÉ +Éè®ú |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç lÉÒ* Ê½þxnùÒ ¨Éå =x½þÉåxÉä iÉÒxÉ ºÉÉè ºÉä +ÉÊvÉEò Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÓ* ¨ÉÉxÉºÉ®úÉä´É®ú Eäò Uô: ¦ÉÉMÉÉå ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉ EòÒ ºÉÉvÉÉ®úhÉ VÉxÉiÉÉ Eäò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå +Éè®ú ºÉÆPÉ¹ÉÉç EòÉ ¨ÉÉÌ¨ÉEò ÊSÉjÉhÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ* ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä ÊEòºÉÉxÉÉå +Éè®ú ¨ÉWÉnÖù®úÉå Eäò nÖù:JÉÒ VÉÒ´ÉxÉ EòÉä {ÉÉ`öEòÉå Eäò ºÉÉ¨ÉxÉä |ÉºiÉÖiÉ Eò®úxÉä EòÉ ¸ÉäªÉ |Éä¨ÉSÉxnù EòÉä ½þÒ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ* ºÉÉvÉÉ®úhÉ +Éè®ú ºÉ®ú±É ¦ÉÉ¹ÉÉ-¶Éè±ÉÒ ¨Éå |Éä¨ÉSÉxnù xÉä Bä¤ÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ VÉÉä ºÉÉänÂùnäù¶ªÉ lÉÒ* {ÉÚºÉ EòÒ ®úÉiÉ, Eò¡òxÉ, ¤Éþä÷ PÉ®ú EòÒ ¤Éä]õÒ, +Éi¨ÉÉ®úÉ¨É, {ÉÆSÉ {É®ú¨Éä¶´É®ú, ¶ÉiÉ®ÆúVÉ Eäò ÊJÉ±ÉÉþ÷Ò +ÉÊnù =xÉEòÒ ¸Éä¹`ö Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ ½èþ VÉÉä Ê½þxnùÒ Eäò Eò½þÉxÉÒ-ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå +¨É®ú ½éþ*

|Éä¨ÉSÉxnù EòÒ Eò½þÉxÉÒ ¶Éè±ÉÒ EòÉä +{ÉxÉÉÉiÉä ½ÖþB Ê½þxnùÒ ¨Éå Eò<Ç Eò½þÉxÉÒ-±ÉäJÉEò +ÉªÉä* <xÉ¨Éå Eäò´É±É iÉÒxÉ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉEò®ú +¨É®ú ½þÉä VÉÉxÉä´ÉÉ±Éä Eò½þÉxÉÒEòÉ®ú SÉxpùvÉ®ú ¶É¨ÉÉÇ MÉÖ±Éä®úÒ EòÉ ºlÉÉxÉ ¤É½ÖþiÉ >ÄðSÉÉ ½èþ* 1915 ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ =xÉEòÒ |ÉÊºÉrù Eò½þÉxÉÒ "=ºÉxÉä Eò½þÉ lÉÉ' ¨Éå +Ënù¶ÉÇ |Éä¨É EòÒ ºÉÆªÉÉÊ¨ÉiÉ ÊEòxiÉÖ ºÉÖxnù®ú ´ªÉÆVÉxÉÉ ½Öþ<Ç ½èþ* ªÉ½þ Ê½þxnùÒ EòÒ ¸Éä¹`öiÉ¨É Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå BEò ½èþ*

¸ÉÒ.¤Énù®úÒxÉÉlÉ ¦É]Âõ]õ ºÉÖnù¶ÉÇxÉ |Éä¨ÉSÉxnù-{É®ÆÚ{É®úÉ ¨Éå +ÉxÉä´ÉÉ±Éä +Éè®ú BEò ±ÉäJÉEò ½èÞ ÊVÉx½þÉåxÉä ¨ÉÉxÉ´ÉÒªÉ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ+Éå EòÉ ®úÉäSÉEò +Éè®ú º É®úºÉ ´ÉhÉÇxÉ ÊEòªÉÉ* {ÉÉhbä÷ªÉ ¤ÉäSÉxÉ ¶É¨ÉÉÇ =OÉ xÉä +{ÉxÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò iÉlÉÉ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò Ê´ÉºÉÆMÉÊiÉªÉÉå {É®ú Ê´ÉpùÉä½þ |ÉEò]õ ÊEòªÉÉ* +ÉSÉÉªÉÇ SÉiÉÖ®úºÉäxÉ ¶ÉÉºjÉÒ xÉä ¦ÉÒ +{ÉxÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò {ÉÊ®úÎºlÉÊiÉªÉÉå EòÉ ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ* {ÉnÖù¨É±ÉÉ±É {ÉÖxxÉÉ±ÉÉ±É ´ÉJ¶ÉÒ xÉä {ÉÉÊ®ú´ÉÉÊ®úEò BÆ´É ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò VÉÒ´ÉxÉ {É®ú +{ÉxÉä +Énù¶ÉÉæx¨ÉÖJÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ |ÉºiÉÖiÉ EòÒ* ºÉÚªÉÇEòÉxiÉ ÊjÉ{ÉÉ`öÒ ÊxÉ®úÉ±ÉÉ xÉä ¦ÉÒ Ê´ÉvÉ´ÉÉ Ê´É´ÉÉ½þ, ´Éä¶ªÉÉ-VÉÒ´ÉxÉ +ÉÊnù ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò Ê´É¹ÉªÉÉå EòÉä ±ÉäEò®ú EÖòUô Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÓ*

<ºÉ |ÉEòÉ®ú ½þ¨É näùJÉiÉä ½éÞèÞ ÊEò Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò |ÉÉ®ÆúÊ¦ÉEò ªÉÖMÉ ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ºÉ¨É²ªÉÉ+Éå EòÉä ½þÒ |É¨ÉÖJÉ ºlÉÉxÉ |ÉÉ{iÉ ½Öþ+É* 1930 ºÉä ±ÉäEò®ú Ê½þxnùÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå EòÉ ÊuùiÉÒªÉ ªÉÖMÉ ¶ÉÖ¯û ½þÉäiÉÉ ½èÞ* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå Eò½þÉxÉÒ EòÒ {ÉÖ®úÉxÉÒ {É®ÆÚ{É®úÉBÄ VÉÉ®úÒ ®ú½þÒ, ºÉÉlÉ ½þÒ xÉªÉÒ xÉªÉÒ {É®ÆÚ{É®úÉ+Éå EòÉ =nùªÉ +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+É* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå ¨ÉÖJªÉ °ü{É ºÉä ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ +Éè®ú ¨ÉxÉÉäÊ´É¶±Éä¹ÉhÉ EòÉä ¨ÉÖJªÉ Ê´É¹ÉªÉ

¨ÉÉxÉEò®ú Eò½þÉxÉÒ Ê±ÉJÉxÉä EòÒ xÉªÉÒ {É®ÆÉú{É®úÉ ¶ÉÖ¯û ½Öþ<Ç* =ºÉEòÉ ¸ÉäªÉ VÉèxÉäxpù EÖò¨ÉÉ®ú EòÉä ½þÒ |ÉÉ{iÉ ½þÉäiÉÉ ½èþ* VÉèxÉäxpù Eäò +MÉ¨ÉxÉ ºÉä Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå BEò xÉ´ÉÒxÉ ªÉÖMÉ EòÉ +É®ÆÉú¦É ½Öþ+É* VÉèxÉäxpù EòÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå ¨ÉÉxÉ´É ¨ÉxÉ EòÒ +ÉxiÉÊ®úEò ºÉ¨É²ªÉÉ+Éå EòÉä ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEò vÉ®úÉiÉ±É {É®ú =nÂùPÉÉÊ]õiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* Eò½þÒ Eò½þÒ EòlÉÉ´É²iÉÖ ºÉä ¦ÉÒ +ÊvÉEò ¤É±É +xÉÖ¦ÉÖÊiÉªÉÉå EòÒ ºÉÚl¨ÉiÉÉ {É®ú ÊnùªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* ¤ÉÉ±É ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ Eäò ºÉÖl¨É iÉi´ÉÉå EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ¦ÉÒ =x½þÉåxÉä ={ÉxÉÒ JÉä±É, {ÉÉVÉä¤É +ÉÊnù Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå ÊEòªÉÉ ½èþ* VÉèxÉäxpù Eäò ºÉÉlÉ +YÉäªÉ +Éè®ú <±ÉÉSÉxnù VÉÉ¶ÉÒ xÉä ¦ÉÒ ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉxÉ Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú Eò<Ç Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÓ* +YÉäªÉ EòÒ Eò½þÉxÉÒªÉÉÄ ¨ÉxÉÉäÊ´ÉYÉÉÊxÉEò ½þÉäxÉä {É®ú ¦ÉÒ ´Éä ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò ºÉÆPÉ¹ÉÉç +Éè®ú Ê´ÉpùÉä½þ Eäò iÉÒJÉä{ÉxÉ ºÉä ¦É®äú ½éþ*

¨ÉxÉÉäÊ´É¶±Éä¹ÉhÉÉi¨ÉEò Eò½þÉÊxÉªÉÉå Eäò ºÉÉlÉ–ºÉÉlÉ, <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå ºÉÉ¨ªÉ´ÉÉnù, ¨ÉÉCºÉÇ´ÉÉnù +ÉÊnù Eäò iÉi´ÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú Ê±ÉÊJÉiÉ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ ¦ÉÒ |ÉÉ{iÉ ½Öþ<Ç* <ºÉ |ÉMÉÉÊiÉ´ÉÉnùÒ {É®ÆÉú{É®úÉ ¨Éå ¨ÉÖJªÉ °ü{É ºÉä ªÉ¶É{ÉÉ±É EòÉ xÉÉ¨É +ÉiÉÉ ½èþ* ªÉ¶É{ÉÉ±É xÉä +{ÉxÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå

{ÉÚÄVÉÒ´ÉÉnùÒ ºÉ¦ªÉiÉÉ EòÉ Ê´É®úÉävÉ Eò®úiÉä ½ÖÞB ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò Ê´É¹É¨ÉiÉÉ EòÒ ºÉ¨É¤ªÉÉ+Éå EòÉ ´ªÉÉ{ÉEò ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ* +¨ÉÞiÉ®úÉªÉ, ®úÉÆMÉÉäªÉ ®úÉÞÉ´É, ¨Éx¨ÉlÉxÉÉlÉ MÉÖ{iÉ +ÉÊnù Eò<Ç Eò½þÉÊxÉEòÉ®úÉå xÉä ªÉ¶É{ÉÉ±É EòÒ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒù {É®Æú{É®úÉ EòÉä +{ÉxÉÉªÉÉ*

º´ÉiÉÆjÉiÉÉ |ÉÉÎ{iÉ Eäò ¤ÉÉnù, ºÉxÉÂ 1950 Eäò +É¤É{ÉÉ¤É Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå BEò xÉªÉä +ÉxnùÉä±ÉxÉ EòÉ |É´ÉiÉÇxÉ ½Öþ+É* ÊxÉ®úÉ¶ÉÉ, ÞÉÖ]õxÉ, lÉhÉ´ÉÉnù +Éè®ú VÉÒ´ÉxÉ Eäò |ÉÊiÉ Ê´ÉiÉÞ¹hÉÉ EòÉä +Ê¦É´ªÉEòiÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±ÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ <¤É ºÉ¨É¤É Ê±ÉJÉÒ VÉÉxÉä ±ÉMÉÒ* Eò½þÉxÉÒ Eäò xÉªÉä +ÉxnùÉä±ÉxÉ EòÉä xÉªÉÒ Eò½þÉxÉÒ EòÒ ºÉÆYÉÉ nùÒ MÉªÉÒ* xÉªÉÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò |É¨ÉÖJÉ ±ÉäJÉEòÉå ¨Éå ¨ÉÉä½þxÉ ®úÉEäò¶É, ®úÉVÉäxpù ªÉÉnù´É, ÊxÉ¨ÉÇ±É ´É¨ÉÉÇ, ¦ÉÒ¹¨É ºÉÉ½þxÉÒ, Eò¨É±Éä•É®ú, ®ú¨Éä¶É ´ÉJ¶ÉÒ, ¨ÉxxÉÖ ¦Énb÷É®úÒ, =¹ÉÉ Ê|ÉªÉÆ´ÉnùÉ +ÉÊnù Eäò xÉÉ¨É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* <xÉ¨Éå ¶ÉÉ½þ®úÒ VÉÒ´ÉxÉ EòÒ EÞòÊjÉ¨ÉiÉÉ, nùÉÆ{ÉiªÉ VÉÒ´ÉxÉ Eäò Ê´ÉÞÉ]õxÉ, {ÉÉÊ®ú´ÉÉÊ®úEò ºÉÆ¤ÉxvÉÉå Eäò iÉxÉÉ´É +ÉÊnù EòÉ ¨ÉÉì¨ÉEò ÊSÉjÉhÉ ½Öþ+É* ®úÉVÉäxpù ªÉÉnù´É EòÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò ¦ÉÉ´É¤ÉÉävÉ EòÉä xÉªÉÒ où¹]õÒ ºÉä ºÉÆ|ÉäÊ¹ÉiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* Eò¨É±Éä•É®ú Eäò

"Eò®ú¤Éä EòÉ ®úÉVÉÉ', JÉÉä<Ç ½Öþ<Ç Ênù¶ÉÉBÄ ¨ÉÉÄºÉ EòÉ nùÊ®úªÉÉ +ÉÊnù Eò½þÉxÉÒ ºÉÆOÉ½þ ¶É½þ®úÒ VÉÒ´ÉxÉ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ +xÉÖ¦ÉÖÊiÉªÉÉå Eäò +ÆEòxÉ ¨Éå ºÉ¿ò±É ½ÖþB ½èþ* ¦ÉÒ¹¨É ºÉÉ½þxÉÒ Eäò Eò½þÉxÉÒ ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ º´ÉÉlÉÇ{É®úiÉÉ +Éè®ú {É®ÆÚ{É®úÉMÉiÉ ¨ÉÚ±ªÉÉå Eäò Ê´ÉÞÉ]õxÉ EòÉ ¾þnªÉº{É¶ÉÔ ´ÉhÉÇxÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ* ¨ÉxxÉÖ ¦Éhb÷É®úÒ xÉä nùÉÆ{ÉiªÉ BÆ´É {ÉÉÊ®ú´ÉÉÊ®úEò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ Ê´ÉºÉÆMÉÊiÉªÉÉå EòÉä Eäòxþù ¤ÉxÉÉEò®ú +xÉäEò Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÓ* =¹ÉÉ Ê|ÉªÉÆ´ÉnùÉ xÉä +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ ÊxÉººÉÆMÉiÉÉ, º´ÉÉlÉÇ{É®úiÉÉ BÆ´É EÞòÊjÉ¨ÉiÉÉ EòÉ º¿ò±É ÊSÉjÉhÉ +{ÉxÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå nÂù´ÉÉ®úÉ |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ* EÞò¹hÉ ºÉÉä¤ÉiÉÒ, Ê¶É´ÉÉxÉÒ, ®úVÉxÉÒ {ÉÊhÉCEò®ú, ¨Éä½þ¯ûxxÉÒºÉÉ {É®ú´ÉäWÉ, Ê´ÉVÉªÉ SÉÉè½þÉxÉ +ÉÊnù Eò½þÉxÉÒ–±ÉäÊJÉEòÉ+Éå EòÉ +{ÉxÉÉ ºÉÆºÉÉ®ú ½èþ VÉÉä ÊEòºÉÒ ºÉÒ¨ÉÉ iÉEò {ÉÖ¯û¹ÉÉå Eäò ºÉÆºÉÉ®ú ºÉä +±ÉMÉ ½èþ*

<ºÉ EòÉ±É ¨Éå xÉ®äú¶É ¨Éä½þiÉÉ, ®úÞÉÖ´ÉÒ®ú ºÉ½þÉªÉ, ºÉ´Éæ¶´É®ú nùªÉÉ±É ºÉEòºÉäxÉÉ, vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ, ®úÉ¨Énù®ú¶É Ê¨É¸É, EÖÄò´É®ú xÉÉ®úÉªÉhÉ +ÉÊnù EòÊ´É Eò½þÉÊxÉEòÉ®úÉå xÉä Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +{ÉxÉÉ +±ÉMÉ ºlÉÉxÉ {ÉÉ Ê±ÉªÉÉ ½èþ* +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ ¨Éå, Ê´É¶Éä¹ÉEò®ú Uô`äö nù¶ÉEò ¨Éå, OÉÉ¨ÉÉÆSÉ±É

EòÉä Eäòxpù Ê¤ÉxnÖù ¤ÉxÉÉEò®ú EÖòUô ºÉÖxnù®ú Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ MÉªÉÓ* OÉÉ¨ÉÉÆSÉ±É Eäò Eò½þÉÊxÉEòÉ®úÉå Eäò °ü{É ¨Éå Ê¶É´É|ÉºÉÉnù ËºÉ½þ, ¨ÉÉEÇòhbä÷ªÉ, ¿òÊhÉ¶´É®úxÉÉlÉ ®äúhÉÖ Eäò xÉÉ¨É ¨ÉÖJªÉ ½éþþ* =xÉEòÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå ¨Éå MÉÉÄ´É EòÒ Ê¨É]Âõ]õÒ EòÒ MÉÆvÉ, MÉÉÄ´É Eäò VÉÒ´ÉxÉ EòÉ ºÉSSÉÉ ÊSÉjÉhÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½éþ* ¨ÉÉEÇòhbä÷ªÉ Eäò ¨É½ÖþB EòÉ {Éäb÷ ¦ÉÚnùÉxÉ, ¨ÉÉ½þÒþ +ÉÊnù Eò½þÉxÉÒ ºÉÆOÉ½þÉå ¨Éå MÉÉÄ´É EòÒ ºÉ®ú±É ÊWÉnùMÉÒ Eäò ºÉÖxnù®ú ÊSÉjÉ Ê¨É±ÉiÉä ½éþ* xÉªÉÒ Eò½þÉxÉÒ +ÉxnùÉä±ÉxÉ Eäò ¤ÉÉnù Ê½þxnùÒ ¨Éå ºÉSÉäiÉxÉ Eò½þÉxÉÒ xÉÉ¨ÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉ |ÉÊºÉrù ½Öþ+É* ªÉ½þ xÉªÉÒ Eò½þÉxÉÒ +ÉxnùÉä±ÉxÉ EòÒ |ÉÊiÉÊGòªÉÉ Eäò °ü{É ¨Éå ¶ÉÖ¯û ½Öþ+É lÉÉ* b÷Éì. ¨É½þÒþ{ÉËºÉ½þ xÉä +{ÉxÉÒ {ÉÊjÉEòÉ "ºÉÆSÉäiÉxÉÉ' Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä <ºÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉ EòÉä Ê´ÉEòÊºÉiÉ ÊEòªÉÉ* ºÉSÉäiÉxÉ Eò½þÉxÉÒ ¨Éå Ê´ÉSÉÉ®úÉå EòÉä ¨É½þi´É ÊnùªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* xÉªÉÒ Eò½þÉxÉÒ ¨Éå Ê´ÉSÉÉ®úÉå Eäò ¤Énù±Éä ºÉÆ´ÉänùxÉÉ+Éå iÉlÉÉ ¦ÉÉ´ÉÖEòiÉÉ EòÉä ¨É½þi´É ÊnùªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* <ºÉEòÉ Ê´É®úÉävÉ Eò®úiÉä ½ÖþB b÷Éì. ¨É½þÒþ{ÉËºÉ½þ +Éè® ú+xªÉ EÖòUô Eò½þÉxÉÒEòÉ®úÉå ¨Éå ºÉÆiÉÖÊ±ÉiÉ, º´ÉºlÉ +Éè®ú ´ªÉÉ{ÉEò oùÎ¹]õEòÉähÉ Eäò ºÉÉlÉ, iÉÉÎi´ÉEò +ÉvÉÉ®ú Eäò ºÉÉlÉ VÉÒ´ÉxÉ EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ÊEòªÉÉ* þ b÷Éì. ¨É½þÒþ{ÉËºÉ½ Eäò +±ÉÉ´ÉÉ ¨ÉxÉ½þ®ú

SÉÉè½þÉxÉ, ®úÉ¨ÉEÖò¨ÉÉ®ú §É¨É®ú, ¤É±É®úÉVÉ {ÉÊhb÷iÉ, ´Éänù ¶ÉÉ½þÒ, ¨Éä½¯ûzÉÒºÉÉ {É®ú´ÉäWÉ +ÉÊnù +xÉäEò Eò½þÉxÉÒEòÉ®úÉå Eäò xÉÉ¨É ºÉSÉäiÉxÉ Eò½þÉxÉÒ Eäò ºÉÉlÉ VÉÖbä÷ ½ÖþB ½èþ*

<ºÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉ Eäò +ÊiÉÊ®úHò ºÉÉiÉ´ÉÓ BÆ´É +É`ö´ÉÓ ¶ÉiÉÉ¤nùÒ ¨Éå Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +Éè®ú ¦ÉÒ Eò<Ç +ÉxnùÉä±ÉxÉ |É´ÉÊ]iÉiÉ ½ÖþB* =xÉ¨Éå ºÉ½þVÉ Eò½þÉxÉÒ, ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ Eò½þÉxÉÒ, +Eò½þÉxÉÒ, ºÉ¨ÉÉxiÉ®ú Eò½þÉxÉÒ, ºÉÊGòªÉ Eò½þÉxÉÒ +ÉÊnù =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ* ºÉ½þVÉ Eò½þÉxÉÒ EòÉ |É´ÉiÉÇxÉ +¨ÉÞiÉ®úÉªÉ xÉä ÊEòªÉÉ* ¤ÉÉnù ¨Éå b÷Éì. ºÉÖ¶ÉÒ±ÉEÖò¨ÉÉ®ú ¡Öò±±É xÉä =ºÉä +É`ö´Éå nù¶ÉEò ¨Éå +Éè®ú +ÉMÉä ¤ÉføÉªÉÉ* MÉÆMÉÉ|ÉºÉÉnù Ê´É¨É±É xÉä ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ Eò½þÉxÉÒ iÉlÉÉ ®úÉEäò¶É ´ÉiºÉ xÉä ºÉÊGòªÉ Eò½þÉxÉÒ xÉÉ¨ÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉÉå EòÉ xÉäiÉÞi´É ÊEòªÉÉ* ºÉÉiÉ´Éå nù¶ÉEò ¨Éå +ÉEòlÉÉ ªÉÉ +ÉEò½þÉÊxÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉ Eäò +É®úÆ¦É ºÉä Eò½þÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå ¤Éb÷É ¶ÉÉä®úMÉÖ±É ½Öþ+É* +ÉxnùÉä±ÉxÉ ºÉä VÉÖbä÷ ½ÖB ±ÉäJÉEòÉå Eäò +±ÉÉ´ÉÉ ºÉÉiÉ´Éå +É`ö´Éå nù¶ÉEò ¨Éå Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå Eò<Ç Eò½þÉxÉÒEòÉ®úÉå xÉä +{ÉxÉÉ Ê´É¶Éä¹É ºlÉÉxÉ {ÉÉªÉÉ ½èþ* ¨É½äþxp ¦É±±ÉÉ, ®ú¨Éä¶É ¤ÉJ¶ÉÒ, ºÉÖnù¶ÉÇxÉ SÉÉä{Éb÷É, ÊMÉÊ®ú®úÉVÉ ÊEò¶ÉÉä®ú, ®ú´ÉÒxp EòÉÊ±ÉªÉÉ, MÉÆMÉÉ |ÉºÉÉnù Ê´É¨É±É +ÉÊnù ±ÉäJÉEòÉå xÉä ¨ÉÖJªÉ °ü{É ºÉä ¶É½þ®úÒ

VÉÒ´ÉxÉ EòÒ EÞòÊjÉ¨ÉiÉÉ, xÉÉ®úÒ-{ÉÖ¯û¹É ºÉÆ¤ÉxvÉÉå EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ Î°lÉÊiÉªÉÉå EòÉ ÊSÉjÉhÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±ÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÓ*

EÖòUô Eò½þÉÊxÉEòÉ®úÉå xÉä ½þÉºªÉ +Éè®ú ´ªÉMªÉ ¦É®úÒ ¶Éè±ÉÒ ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ +Éè®ú ºÉ¨ÉÉVÉ Eäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ {ÉlÉÉå {É®ú |ÉEòÉ¶É b÷É±ÉÉ* ½þÊ®ú¶ÉÆEò®ú {É®úºÉÉ<Ç, ®úÊ´Éxpù iªÉÉMÉÒ, ¶É®únù VÉÉä¶ÉÒ, EòÉ¶ÉÒxÉÉlÉ Ë°É½þ +ÉÊnù Eò½þÉxÉÒEòÉ®úÉå EòÉ xÉÉ¨É Ê´É¶Éä¹É °ü{É ºÉä =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ* Ê{ÉUô±Éä ªÉÖMÉ ¨Éå VÉÒ´ÉxÉ ¨ÉÊ½þ±ÉÉ ±ÉäÊJÉEòÉ+Éå xÉä Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ* ´Éä ¤ÉÉnù Eäò nù¶ÉEòÉå ¨Éå ¦ÉÒ +ÉvÉÖÊxÉEò ¦ÉÉ´É¤ÉÉävÉ Eäò ºÉÉlÉ Ê±ÉJÉiÉÒ ®ú½þÒ* ¨É¨ÉiÉÉ EòÉÊ±ÉªÉÉ, ¨ÉxxÉÖ ¦Éhb÷É®úÒ, Ê¶É´ÉÉxÉÒ, EÞò¹hÉ ºÉÉä¤ÉiÉÒ, ¨ÉÞoù±ÉÉ MÉMÉÇ, ¨ÉÉÊhÉEòÉ ¨ÉÉäÊ½þxÉÒ, ÊxÉ¯û{É¨ÉÉ ºÉä´ÉiÉÒ, EÞò¹hÉ +ÎMxÉ½þÉäjÉÒ, <xnÖù´ÉÉ±ÉÒ, ºÉÖvÉÉ +®úÉäb÷É, ¨ÉÞhÉÉ±É {ÉÉhbä÷ªÉ, ¨Éä½þ¯ûxxÉÒºÉÉ {É®ú´ÉäWÉ, ¨ÉÉäxÉÉ MÉÖ±ÉÉ®úÒ +ÉÊnù ±ÉäÊJÉEòÉ+Éå xÉä {ÉÉÊ®ú´ÉÉÊ®úEò +Éè®ú nùÉÆ{ÉiªÉ VÉÒ´ÉxÉ Eäò ºÉÆnù¦ÉÇ ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò xÉÉ®úÒ EòÒ ¤Énù±ÉÒ ½Öþ<Ç Î°lÉÊiÉªÉÉå EòÉ ºÉ¶ÉHò ÊSÉjÉhÉ +{ÉxÉÒ Eò½þÉÊxÉªÉÉå Eäò uùÉ®úÉ |É°iÉÖiÉ ÊEòªÉÉ* <ºÉ |ÉEòÉ®ú ½þ¨É Eò½þ ºÉEòiÉä ½éþþ ÊEò º´ÉiÉÆjÉiÉÉ Eäò ¤ÉÉnù Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉÉå Eäò |É¦ÉÉ´É ºÉä ÊxÉ®úxiÉ®ú Ê´ÉEòÉºÉÉäx¨ÉÖJÉ

½þÉäiÉÒ MÉªÉÒ* +ÉVÉ EòÒ Eò½þÉxÉÒ ¨Éå ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ MÉÉÄ´É +Éè®ú ¶É½þ®ú Eäò VÉÒ´ÉxÉ ºÉä ºÉÆ¤ÉÎxvÉiÉ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ´ÉhÉÉç EòÉ ÊSÉjÉhÉ ºÉ½þVÉ º´ÉÉ¦ÉÉÊ´ÉEò °ü{É ¨Éå Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ*

UNIT 14

Ê½þxnùÒ BEòÉÆEòÒ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ

1. Ê½þxnùÒ BEòÉÆEòÒ Eäò =nÂù¦É´É +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ {É®ú Ê´ÉSÉÉ®ú EòÒÊVÉB?

Ê½þxnùÒ ¨Éå BEòÉÆEòÒ ®úSÉxÉÉ EòÉ +É®ÆEú¦É ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ºÉä ½þÉäiÉÉ ½èþ* Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå Ê½þxnùÒ BEòÉÆEòÒ {É®ú {ÉÉ¶SÉÉiªÉ BEòÉÆEòÒ EòÉ |É¦ÉÉ´É ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖùªÉÖMÉ +Éè®ú Êuù´ÉäÊnùªÉÖMÉ nùÉäxÉå ¨Éå BEòÉÆEòÒ Eäò {ÉÉ¶SÉÉiªÉ °ü{É EòÉ {ÉÚ®úÉ Ê´ÉEòÉºÉ xÉ½þÒ ½Öþ+É* ±ÉMÉ¦ÉMÉ 1930 <Ç Eäò ¤ÉÉnù Ê½þxnùÒ ¨Éå BEòÉÆEòÒ EòÉ ´ÉÉºiÉÊ´ÉEò Ê´ÉEòÉºÉ ½Öþ+É* ±ÉMÉ¦ÉMÉ =ºÉÒ ºÉ¨ÉªÉ VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnù xÉä "BEò PÉÖÄ]õ' EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ, VÉÉä +ÉvÉÖÊxÉEò fÆøMÉ EòÉ {É½þ±ÉÉ BEòÉÆEòÒ ¨ÉÉxÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* |ÉºÉÉnù Eäò "ºÉVVÉxÉ' +Éè®ú "Eò¯ûhÉÉ±ÉªÉ' EòÉä ¦ÉÒ BEòÉÆEòÒ Eäò +xiÉMÉÇiÉ ¨ÉÉxÉÉ ½èþ* 1938 ¨Éå "½ÆþºÉ' {ÉÊjÉEòÉ EòÉ BEòÉÆEòÒ Ê´É¶Éä¹ÉÉÆEò |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ+É, ÊVÉºÉºÉä BEòÉÆEòÒ Eò±ÉÉ ºÉä ºÉÆ¤ÉÎxvÉiÉ +xÉäEò xÉªÉÒ ¤ÉÉiÉå VÉÉiÉ ½Öþ<Ç*

þ÷É. ®úÉ¨ÉEÖò¨ÉÉ®ú ´É¨ÉÉÇ xÉä ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä ¨ÉÉèÊ±ÉEò BEòÉÆÊEòªÉÉå EòÒ {É®ÆEú{É®úÉ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉªÉÉ* BEò PÉÚÄ]õ Eäò ¤ÉÉnù ´É¨ÉÉÇVÉÒ EòÉ "¤ÉÉnù±É EòÒ ¨ÉÞiªÉÖ' BEòÉÆEòÒ EòÉä nÖùºÉ®úÉ ºlÉÉxÉ Ênùªéé VÉÉiÉÉ ½èþ* +ÉMÉä SÉ±ÉEò®ú =xÉEäò

"{ÉÞI´ÉÒ®úÉVÉ EòÒ +ÉÄJÉåå', "®äú¶É¨ÉÒ]õÉ<Ç', "SÉÉ¯ûÊ¨ÉjÉÉ" +ÉÊnù Eò<Ç BEòÉÆEòÒ –ºÉÆOÉ½þ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖÞB* ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò +Éè®ú BäÊiÉ½þÉÊºÉEò Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ +xÉäEò BEòÉÆEòÒ ºÉÉänÂùnäù¶ªÉ ½èþ* ´É¨ÉÉÇVÉÒ Eäò ºÉÉIÉ ºÉÉIÉ ¸ÉÒ ={ÉäxpùxÉÉIÉ +¶Eò, ±ÉI¨ÉÒxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É, =nùªÉ¶ÉÆEò®ú ¦É]Âõ]õ, ¦ÉÖ´ÉxÉä¶´É®ú |ÉºÉÉnù, ºÉä`ö MÉÉäÊ´Éxnù nùÉºÉ, VÉMÉnùÒ¶É SÉxpù ¨ÉÉIÉÖ®ú +ÉÊnù xÉä Eò<Ç BEòÉÆÊEòªÉÉå nÂù´ÉÉ®úÉ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ºÉ¨É²ªÉÉ+Éå EòÉ ºÉ¦ò±É ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ* ±ÉI¨ÉÒxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É xÉä +{ÉxÉä +xÉäEò BEòÉÆEòÒ ºÉÆOÉ½þÉå Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä {ÉÉè®úÉÊhÉEò, BäÊiÉ½þÉÊºÉEò, ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò iÉIÉÉ ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEò ºÉ¨É²ªÉÉ+Éå EòÒ SÉSÉÉÇ EòÒ* ¦ÉÖ´ÉxÉä¶´É®ú |ÉºÉÉnù xÉä {ÉÉ¶SÉÉiªÉ BEòÉÆEòÒEòÉ®úÉå EòÒ ¶Éè±ÉÒ EòÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê´ÉEòÊºÉiÉ Eò®úÉªÉÉ* Ê¶É±{É ¨Éå xÉÊ´ÉxÉiÉÉ +Éè®ú Eò±ÉÉi¨ÉEò ¸Éä¹`öiÉÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä =xÉEäò BEòÉÆEòÒ Ê´É¶Éä¹É ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* ºÉä`ö MÉÉäÊ´ÉxnùnùÉºÉ xÉä +Énù¶ÉÇ´ÉÉnùÒ oùÎ¹]õEòÉähÉ Eäò ºÉÉIÉ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò, BäÊiÉ½þÉºÉÒEò +ÉÊnù Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ |ÉEòÉ®ú Eäò BEòÉÆEòÒ Ê±ÉJÉä* VÉMÉnùÒ¶É SÉxpù¨ÉÉIÉÖ®ú xÉä ªÉIÉÉIÉÇ´ÉÉnùÒù ¶Éè±ÉÒ ¨Éå Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ºÉ¨É²ªÉÉ+Éå EòÉä |É²iÉÖiÉ Eò®úEäò =xÉEòÉ ºÉ¨ÉÉvÉÉxÉ ¦ÉÒ ÊnùªÉÉ ½èþ* =xÉEäò BEòÉÆEòÒ ®ÆúMÉ¨ÉSÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä

ºÉ¿ò±É ½èÞ* ÊMÉÊ®úVÉÉ EÖò¨ÉÉ®ú ¨ÉÉlÉÖ®ú xÉä 1936 ºÉä ±ÉäEò®ú Eò<Ç |ÉEòÉ®ú Eäò BEòÉÆEòÒ Ê±ÉJÉä ½éÞÞ* ºÉÆºEÞòÊiÉEò, ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò, BäÊiÉ½ÞÉÊºÉEò +Éè®ú |ÉÊiÉEòÉi¨ÉEò BEòÉÆÊEòªÉÉå Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ ¨ÉÉlÉÖ®úVÉÒ xÉä EòÊ´É ´ªÉÊHòi´É ºÉä Ê¦ÉxxÉ ½ÞÉäEò®ú, +{ÉxÉÒ ±ÉÉäEòÉäx¨ÉÖJÉÒ SÉäiÉxÉÉ ´ªÉHò EòÒ ½èÞ*

SÉxpùMÉÖ{iÉ Ê´ÉtÉ±ÉÆEòÉ®ú xÉä +{ÉxÉä BEòÉÆÊEòªÉÉå ¨Éå +Énù¶ÉÉçx¨ÉÖJÉÒ ªÉlÉÉlÉÇ´ÉÉnùÒù oùÎ¹]õEòÉähÉ ºÉä ®úÉ¹]Åõ EòÒ ºÉ¨É°ªÉÉ+Éå EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èÞ* b÷É. ºÉiªÉäxpù Eäò BEòÉÆEòÒ Ê´É¹ÉªÉ ´É°iÉÖ, +Ê¦ÉxÉäªÉiÉÉ +ÉÊnù EòÒ où¹]õÒ ºÉä =SSÉEòÉäÊ]õ Eäò ½èÞ* ¦ÉMÉ´ÉÊiÉSÉ®úhÉ ´É¨ÉÉÇ xÉä ¨ÉÉxÉ´É ¨ÉxÉ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ |É´ÉÞÊiÉªÉÉå +Éè®ú ¨Év´É´ÉMÉÇ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ºÉ¨É°ªÉÉ+Éå EòÉ ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èÞ* SÉiÉÖ®úºÉäxÉ ¶ÉÉ°jÉÒ xÉä ®úÉVÉ{ÉÖiÉ xÉÉÊ®úªÉÉå Eäò +Éi¨É ¤ÉÊ±ÉnùÉxÉ {É®ú |ÉEòÉ¶É b÷É±ÉxÉä´ÉÉ±Éä Eò<Ç BEòÉÆEòÒ Ê±ÉJÉä* ½ÞÊ®úEÞò¹hÉ |Éä¨ÉÒ xÉä ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò ®úÉ¹]ÅõÒªÉ +Énù¶ÉÉç {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ BEòÉÆEòÒ Ê±ÉJÉxÉä ¨Éå ºÉ¿ò±ÉiÉÉ {ÉÉªÉÒ* ¸ÉÒ. Ê´É¹hÉÖ|É¦ÉÉEò®ú xÉä +Énù¶ÉÇ´ÉÉnù, ºÉÉÆºÉGÞòÊiÉEò SÉäiÉxÉÉ +Éè®ú ¨ÉxÉÉä´ÉèYÉÉÊxÉEò iÉi´ÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò BEòÉÆÊEòªÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ EòÒ*

±ÉI¨ÉÒxÉÉ®úÉªÉhÉ ±ÉÉ±É, vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ, ¨ÉÉä½þxÉ®úÉEäò¶É, ¦ÉÉ®úiÉ ¦ÉÚ¹ÉhÉ +ÉOÉ´ÉÉ±É, Ê´ÉxÉÉänù ®úºiÉÉäMÉÒ, |É¦ÉÉEò®ú ¨ÉÉSÉ´Éä, ËSÉ®úVÉÒiÉ, ÊºÉrùxÉÉlÉ EÖò¨ÉÉ®ú, ºÉÖ®äúxpù ´É¨ÉÉÇ +ÉÊnù xÉä Eò<Ç BEòÉÆEÊEòªÉÉå +Éè®ú ®äúÊb÷ªÉÉä-BEòÉÆEÊEòªÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ Eò®úEäò +ÉvÉÖÊxÉEò BEòÉÆEEòÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +{ÉxÉÒ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ¦ÉÚÊ¨ÉEòÉ ÊxÉ¦ÉÉªÉÒ* ÊuùiÉÒªÉ ¨É½þÉªÉÖrù Eäò ¤ÉÉnù BEòÉÆEÊEòªÉÉå +Éè®ú v´ÉxÉÒ °ü{ÉEòú EòÉä |É¨ÉÖJÉiÉÉ |ÉÉ{iÉ ½Öþ<Ç* Ê{ÉUô±Éä EÖòUô ´É¹ÉÉç ºÉä Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ +ºÉÆJªÉ BEòÉÆEEòÒ Ê±ÉJÉä MÉªÉå* ®úÉ¨É´ÉÞIÉ ¤ÉäxÉÒ{ÉÚ®úÒ, ¶ÉÆ¦ÉÚnù±ÉÉ±É ºÉEòºÉäxÉÉ, MÉÉäÊ´Éxnù ¶É¨ÉÉÇ, ±ÉI¨ÉÒxÉÉ®úÉªÉhÉ ±ÉÉ±É, EÞò¹hÉnùÉºÉ ¦ÉÉ®únÂù´ÉÉVÉ +ÉÊnù xÉä {ÉÉè®úÉÊhÉEò, BäÊiÉ½þÉÊºÉEò +Éè®ú ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò BEòÉÆEEòÒ Ê±ÉJÉxÉä ¨Éå ¯ûÊSÉ ÊnùJÉÉªÉÒ* Ê´É¹hÉÖ |É¦ÉÉEò®ú, ºÉÖvÉÒxpù, ½þÊ®úEÞò¹hÉ |Éä¨ÉÒ, ®úÉ¨ÉSÉxpù ÊiÉ´ÉÉ®úÒ, Ê¶É´ÉEÖò¨ÉÉ®ú +ÉäZÉÉ, ½þÊ®ú¶ÉÆEò®ú ¶É¨ÉÉÇ +ÉÊnù +xªÉ BEòÉÆEÊEòEòÉ®úÉå xÉä ®úÉ¹]ÅõÒªÉiÉÉ EòÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ EòÉä |É¨ÉÖJÉiÉÉ näùEò®ú BEòÉÆEEòÒ Ê±ÉJÉä* <ºÉ |ÉEòÉ®ú ½þ¨É näùJÉiÉä ½èþ EòÒ Ê½þxnùÒ EòÉ BEòÉÆEEòÒò ºÉÉÊ½þiªÉ +ÉVÉ =xxÉiÉ nù¶ÉÉ ¨Éå ½èþ* Ê´É¹ÉªÉ BÆ´É ¶Éè±ÉÒ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä <xÉ¨Éå Ê´ÉÊ´ÉvÉiÉÉ nù¶ÉÇxÉÒªÉ ½èþ* <xÉEäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä

¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÆºÉÞòÊiÉ, ºÉ¦ªÉiÉÉ +Éè®ú {ÉÖ®úÉhÉ EòÒ xÉªÉÒ ´ªÉÉJªÉÉ |ÉºiÉÖiÉ ½Öþ<Ç ½èþ* +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ Eäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ {ÉlÉÉå EòÉ =nÂùPÉÉ]õxÉ ¦ÉÒ <xÉ¨Éå ½Öþ+É ½èþ*

UNIT 15

MÉt ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ +xªÉ Ê´ÉvÉÉBÄ – VÉÒ´ÉxÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ

Ê½þxnùÒ EòÒ +xªÉ MÉt Ê´ÉvÉÉ+Éå Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ VÉÒ´ÉxÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ¦ÉÒ +ÉvÉÖÊxÉEò EòÉ±É ¨Éå ½Öþ+É* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ½þÊ®ú¶ÉSÉxpù Eäò ªÉÖMÉ ¨Éå {ÉÉ¶SÉÉiªÉ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò |É¦ÉÉ´É ºÉä ªÉ½þ Ê´ÉvÉÉ Ê½þxnùÒ ¨Éå +ÉªÉÒ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ SÉÊ®úiÉÉ´É±ÉÒ, ¤ÉÉnù¶ÉÉ½þ-nù{ÉÇhÉ, {ÉÆSÉ-{ÉÊ´ÉjÉÉi¨ÉÉ, =xxÉ®úÉvÉÇ-¦ÉHò¨ÉÉ±É +ÉÊnù VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ MÉªÉÓ* ¤ÉÉ±É ¨ÉÞEÞòxnù MÉÖ{iÉ xÉä |ÉiÉÉ{ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É EòÒ VÉÒ´ÉxÉÒ Ê±ÉJÉÒ* EòÉÌiÉEò |ÉºÉÉnù JÉÊjÉ xÉä ¨ÉÒ®úÉ¦ÉÉ<Ç EòÉ VÉÒ´ÉxÉ SÉÊ®újÉ iÉlÉÉ UôjÉ{ÉiÉÒ Ê¶É´ÉÉVÉÒ EòÉ VÉÒ´ÉxÉ SÉÊ®újÉ Ê±ÉJÉÉ* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå {ÉÉ¶SÉÉiªÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ºÉä EÖòUô VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉå Eäò +xÉÖ´ÉÉnù ¦ÉÒ Ê½þxnùÒ ¨Éå +ÉªÉä* Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå VÉÒ´ÉxÉÒ-ºÉÉÊ½þiªÉ Ê±ÉJÉxÉä EòÒ {É®Æú{É®úÉ EòÉ¿òÒ Ê´ÉEòÊºÉiÉ ½Öþ<Ç* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå Eò<Ç ±ÉäJÉEòÉå xÉä º´ÉÉ¨ÉÒ nùªÉÉxÉxnù, ®úÉ¨ÉEÞò¹hÉ {É®ú¨É½ÆþºÉ +Éè®ú Ê´É´ÉäEòÉxÉxnù EòÒ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ ºÉ¿ò±É °ü{É ºÉä |ÉºiÉÖiÉ EòÒ* <ºÉEäò ¤ÉÉnù BäÊiÉ½þÉºÉÒEò {ÉÖ¯û¹ÉÉå, ®úÉVÉxÉÒÊiÉYÉÉå, ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå, näù¶ÉÒ +Éè®ú Ê´Énäù¶ÉÒ ¨É½þÉ{ÉÖ¯û¹ÉÉå {É®ú ¸Éä¹`ö VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉå

EòÒ ®úSÉxÉÉ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÒ* uùÉÊ®úúEòÉ |É°ÉÉnù ¶É¨ÉÉÇ, näùÊ´É |É°ÉÉnù ¨ÉÖÆÊ°É¿ò, ¤ÉÉ¤ÉÚ °ÉÆ{ÉÚhÉÉÇxÉxnùù, °ÉÒiÉÉ®úÉ¨É EòÉä½þ±ÉÒ +ÉÊnù xÉä ¨É½þÉ®úÉhÉÉ |ÉiÉÉ{É, ½þ¹ÉÇ´ÉvÉÇxÉ, +¶ÉÉäEò +ÉÊnù BäÊiÉ½þÉÊ°ÉEò {ÉÖ¯û¹ÉÉå EòÒ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ* ®úÉVÉxÉÒÊiÉYÉÉå ¨Éå MÉÉÄÊvÉVÉÒ EòÒ VÉÒ´ÉxÉÒ °É¤É°Éä +ÊvÉEò °ÉÆJªÉÉ ¨Éå Ê±ÉJÉÒ MÉªÉÒ* EòÉEòÉ EòÉ±Éä±ÉEò®ú, vÉxÉ¶ªÉÉ¨ÉnùÉ°É Ê¤Éb÷±ÉÉ +ÉÊnù EòÒ EÞòÊiÉªÉÉÄ <°É¨Éå |É¨ÉÖJÉ ½éþþ* VÉ´É½þ®ú ±ÉÉ±É xÉä½þ°ü, ®úÉVÉäxpù|É°ÉÉnù, {É]äõ±É, SÉxpù¶ÉäJÉ®ú +ÉWÉÉnù, ¨ÉÉè±ÉÉxÉÉ +ÉWÉÉnù, °ÉÖ¦ÉÉ¹ÉSÉxpù ¤ÉÉä°É, VÉªÉ|ÉEòÉ¶É xÉÉ®úÉªÉhÉ, ±ÉÉ±É ¤É½þÉnÖù®ú ¶ÉÉ°jÉÒ, <ÆÊnù®úÉ MÉÉÄvÉÒ- +ÉÊnù ®úÉVÉxÉÒÊiÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +ÉxÉä´ÉÉ±Éä Eò<Ç xÉäiÉÉ+Éå EòÒ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ Ê½þxnùÒ ¨Éå ®úSÉÒ MÉªÉÒ* ¦ÉnùxiÉ +ÉxÉxnù EòÉè°É±ªÉÉªÉxÉ +ÉÊnù +xÉäEò ±ÉäJÉEòÉå xÉä ¦ÉMÉ´ÉÉxÉ ¤ÉÖrù, {ÉèMÉÆ¤É®ú ¨ÉÞ½þ¨¨Énù, ¶ÉÆEò®úÉSÉÉªÉÉÇ +ÉÊnù ¨É½þÉi¨ÉÉ+Éå EòÒ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ* ¤ÉxÉÉ®ú°ÉÒnùÉ°É SÉiÉÖ´Éænù Ò iÉlÉÉ +xªÉ ±ÉäJÉEòÉå xÉä Ê½þ]õ±É®ú, EòÉ±ÉÇ ¨ÉÉC°Éú, °]õÉÊ±ÉxÉ +ÉÊnù Ê´Énäù¶É ¨É½þÉ{ÉÖ¯û¹ÉÉå EòÒ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉÒ*

EÖòUô ±ÉäJÉEòÉå xÉä Ê´Énäù¶ÉÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ+Éå ¨Éå ®úÊSÉiÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉå EòÉ +xÉÖ´ÉÉnù Ê½þxnùÒ ¨Éå ÊEòªÉÉ* °ÉÉÊ½þÎiªÉEò

lÉäjÉ Eäò ¨É½þÉxÉ ´ªÉÊHòªÉÉå EòÒ VÉÒ´ÉÊxÉªÉÉÄ Eò¨É ¨ÉÉjÉÉ ¨Éå Ê±ÉJÉÒ MÉªÉÒ, ±ÉäÊEòxÉ VÉÉä Ê±ÉJÉÒ MÉªÉÒ ´Éä ¤É½ÖþiÉ ½þÒ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* ®úÉ¨ÉÊ´É±ÉÉºÉ ¶É¨ÉÉÇ xÉä "ÊxÉ®úÉ±ÉÉ EòÒ ºÉÉÊ½þiªÉ ºÉÉvÉxÉÉ' Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ EòÊ´É ÊxÉ®úÉ±ÉÉ Eäò VÉÒ´ÉxÉ +Éè®ú ºÉÉÊ½þiªÉ {É®ú |ÉEòÉ¶É b÷É±ÉxÉä EòÉ =iEÞò¹]õ |ÉªÉÉºÉ ÊEòªÉÉ* |Éä¨ÉSÉxnù Eäò {ÉÖjÉ +¨ÉÞiÉ®úÉªÉ xÉä "Eò±É¨É Eäò ÊºÉ{ÉÉ½þÒ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò ºÉä |Éä¨ÉSÉxnù EòÒ VÉÒ´ÉxÉÒ Ê±ÉJÉÒ* Ê½þxnùÒ EòÉ VÉÒ´ÉxÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ Ê´É¹ÉªÉ ´ÉèÊ´ÉvªÉ +Éè®ú {ÉÊ®ú¨ÉÉhÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä ¤É½ÖþiÉ EÖòUô ºÉÆ{ÉxxÉ ½èþ*

UNIT 16

+Éi¨ÉEòlÉÉ

Ê½þxnùÒ ¨Éå VÉÒ´ÉxÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ +Éi¨ÉEòlÉÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¦ÉÒ EòÉ¿òÒ ºÉÆ{ÉxxÉ ½èþ* ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò, ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò, ºÉÉÊ½þÎiªÉEò lÉäjÉÉå Eäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ´ªÉÊHòªÉÉå xÉä +{ÉxÉÒ +Éi¨ÉEòlÉÉBÄ Ê±ÉJÉEò®ú <ºÉ Ê´ÉvÉÉ EòÉä ºÉÆ{ÉxxÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* MÉt ¨Éå +Éi¨ÉEòlÉÉ Ê±ÉJÉxÉä EòÒ {É®ÆÚ{É®úÉ EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù nÂù´ÉÉ®úÉ ½Öþ+É* =x½þÉåxÉä "EÖòUô +É{É¤ÉÒiÉÒ, EÖòUô VÉMÉ¤ÉÒiÉÒ ¶ÉÒ¹ÉÇEò ¨Éå +Éi¨ÉEòlÉÉ Ê±ÉJÉxÉä EòÒ ¶ÉÖ¯û+ÉiÉ EòÒ, {É®ú ´É½þ +vÉÚ®úÒ ®ú½þ MÉªÉÒ* +ÆÊ¤ÉEòÉnùxiÉ ´ªÉÉºÉ EòÉ "ÊxÉVÉ´ÉÞiÉÉxiÉ', |ÉiÉÉ{ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É, ®úÉvÉÉSÉ®úhÉ MÉÉäº´ÉÉ¨ÉÒ, ¸ÉÒvÉ®ú {ÉÉ`öEò +ÉÊnù EòÒ +Éi¨ÉEòlÉÉBÄ =ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå Ê¨É±ÉiÉÒ ½èþ, VÉÉä |ÉÉÆ®úÊ¦ÉEò |ÉªÉÉºÉ Eäò °ü{É ¨Éå =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* MÉÉÄvÉÒVÉÒ, xÉä½þ°ü +ÉÊnù EòÒ +Éi¨ÉEòlÉÉ+Éå Eäò +xÉÖ´ÉÉnù Ê½þxnùÒ ¨Éå ÊEòªÉä MÉªÉä* Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå, ¨É½þÉ´ÉÒ®ú|ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ EòÒ "¨Éä®úÒ VÉÒ´ÉxÉ ªÉÉjÉÉ' ±ÉÞÉÖ®úSÉxÉÉ ½þÉäiÉä ½ÖþB ¦ÉÒ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* |Éä¨ÉSÉxnù nÂù´ÉÉ®úÉ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÆþºÉ Eäò +Éi¨ÉEòlÉÉ Ê´É¶Éä¹ÉÉÆEò nÂù´ÉÉ®úÉ +Éi¨ÉEòlÉÉ ±ÉäJÉxÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå EòÉ¿òÒ |ÉÉäiºÉÉ½þxÉ Ê¨É±ÉÉ* <ºÉ¨Éå |Éä¨ÉSÉxnù Eäò

¨Éä®úÉ VÉÒ´ÉxÉ ºÉÉlÉÒ Eäò +É±ÉÉ´ÉÉ EÖòUô +xªÉ ±ÉäJÉEòÉå EòÒ ®úSÉxÉÉBÄ ¦ÉÒ +ɪÉÓ* 1941 ¨Éå b÷É. ¶ªÉÉ¨ÉºÉÖxnù®ú nùÉºÉ EòÒ "¨Éä®úÒ +ÉiÉ¨É Eò½þÉxÉÒ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò +ÉiÉ¨ÉEòlÉÉ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç*

=ºÉEäò ¤ÉÉnù 1946 ¨Éå ®úÉ½Öþ±É ºÉÉÆEÞòiªÉɪÉxÉ EòÉ "¨Éä®úÒ VÉÒ´ÉxÉ ªÉÉjÉÉ' |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç VÉÉä {ÉÉÄSÉ JÉhb÷Éå EòÒ ¤Éb÷Ò ®úSÉxÉÉ ½èþ* Ê½þxnùÒ EòÒ ¨ÉÉèÊ±ÉEò +ÉiÉ¨ÉEòlÉÉ+Éå EòÒ {É®ÆúÉ{É®úÉ ¨Éå ªÉ½þ ¤É½ÖþiÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* b÷É. ®úÉVÉäxpù|ɺÉÉnù EòÒ +ÉiÉ¨ÉEòlÉÉ, ¤ÉÉ¤ÉÖ MÉÖ±ÉÉ¤É®úɪÉ EòÒ +ÉiÉ¨É Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ, Ê´ÉªÉÉäMÉÒ ½þÊ®ú EòÒ "¨Éä®úÉ VÉÒ´ÉxÉ-|É´ÉÉ½þ', º´ÉÉÊ¨É ºÉiªÉnäù´É {ÉÊ®ú|ÉÉVÉEò EòÒ "º´ÉiÉÆjÉiÉÉ EòÒ JÉÉäVÉ ¨Éå', ¶ÉÉÆÊiÉÊ|ɪÉ Êuù´ÉänùÒ EòÒ "{ÉÊ®úµÉÉVÉEò EòÒ |ÉVÉÉ', ªÉ¶É{ÉÉ±É EòÒ 'ʺɽþÉ´É±ÉÉäEòxÉ' +ÉÊnù +ÉiÉ¨ÉEòlÉÉBÄ<ºÉ ÊnùnùɶÉÉ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉxÉä ¨Éå ºÉ½þɪÉEò ½Öþ<Ç* Ê½þxnùÒ EòÒ º´ÉÉǸÉä¹`ö +ÉiÉ¨ÉEòlÉÉ ½þÊ®ú´ÉÆ¶É®úɪÉ ¤ÉSSÉxÉ EòÒ ®úSÉxÉÉ ½èþ, ÊVɺÉEäò SÉÉ®ú ¦ÉÉMÉ ½éþ - "CªÉÉ ¦ÉÚ±ÉÚÄ CªÉÉ ªÉÉnù Eò°Äü?' "xÉÒb÷ EòÉ ÊxɨÉÉÇhÉ Ê¡òò®ú', "¤ÉºÉä®úä ºÉä nÚù®ú', nù¶ÉuùÉ®ú ºÉä ºÉÉä{ÉÉxÉ iÉEò'* <xɺÉä Ê½þxnùÒ +ÉiÉ¨ÉEòlÉÉ Eäò ¦Éhb÷É®ú ¨Éå +ÉÊ¦É´ÉÞÊrù ½Öþ<Ç ½èþ*

UNIT 17

ºÉÆº¨É®úhÉ +Éä®ú ®úÉäJÉÊSÉjÉ

ºÉÆº¨É®úhÉ +Éè®ú ®äúJÉÉÊSÉjÉ ¨Éå lÉÉäb÷É–ºÉÉ +xiÉ®ú ½þÉäiÉä ½ÖþB ¦ÉÒ =xÉEòÉä BEò ½þÒ Ê´É¦ÉÉMÉ ¨Éå ®úJÉiÉä ½èþ* ºÉÆº¨É®úhÉ ¨Éå º¨É®úhÉÒªÉ ´ªÉÊHò EòÒ +{ÉälÉÉ ´ÉìhÉiÉ PÉ]õxÉÉ iÉlÉÉ {ÉÉ®ú´Éä¶É EòÉä +ÉÊvÉEò ®úÉäSÉEò fÆøMÉ ºÉä ÊSÉÊjÉiÉ Eò®úiÉä ½èþ* ´ªÉÊHò ÊSÉjÉ, ¶É¤nù ÊSÉjÉ ªÉÉ ®äúJÉÉÊSÉjÉ ¨Éå ÊEòºÉÒ ´ªÉÊHò, PÉ]õxÉÉ, où¶ªÉ +ÉÊnù Eò¨É ºÉä Eò¨É ºÉ¨ÉªÉ ¨Éå Eò¨É |ÉªÉixÉ ºÉä, +ÊvÉEò |É¦ÉÉ´É{ÉÚhÉÇ ¶ÉÉè±ÉÒ ¨Éå |ÉºiÉÖiÉ Eò®úiÉä ½èþ* +OÉäWÉÒ ¨Éå <ºÉä "lÉÆ{É–xÉä±É–ºEäòSÉ' Eò½þiÉä ½èþ* Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå ºÉÆº¨É®úhÉ xÉÉ¨ÉEò Ê´ÉvÉÉ EòÉ +É®Æú¦É ºÉÖvÉÉ, ºÉ®úº´ÉiÉÒ, Ê´É¶ÉÉ±É ¦ÉÉ®úiÉ, ¨ÉÉvÉÖ®úÒ +ÉÊnù {ÉÊjÉEòÉ+Éå Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ ½Öþ+É* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ¨Éå ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä ¤ÉÉ±É¨ÉÖEÖòxnù MÉÖ{iÉ nÂù´ÉÉ®úÉ ºÉÆº¨É®úhÉ Ê±ÉJÉÉ MÉªÉÉ VÉÉä |ÉiÉÉ{É xÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ lÉÉ* +ÉSÉÉªÉÇ ®úÉ¨Énäù´É, +¨ÉÞiÉ±ÉÉ±É SÉGò´ÉiÉÔ, ¤ÉxÉÉ®úºÉÒ nùÉºÉ SÉiÉÖ´ÉænùÒ ¨ÉÆMÉ±Énäù´É ¶É¨ÉÉÇ +ÉÊnù ±ÉäJÉEòÉå xÉä "ºÉÖvÉÉ' "ºÉ®úº´ÉiÉÒ' +ÉÊnù {ÉÊjÉEòÉ+Éå Eäò Ê±ÉB EÖòUô ¨É½þÉxÉ ´ªÉÊHòªÉÉå EòÒ VÉÒ´ÉxÉÒ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ ºÉÆº¨É®úhÉ Ê±ÉJÉä* <xÉEäò +±ÉÉ´ÉÉ {ÉÖºiÉEòÉå Eäò °ü{É ¨Éå ¦ÉÒ ºÉÆº¨É®úhÉ Ê±ÉJÉä MÉªÉä* ¤ÉÉ¤ÉÚ ¶ªÉÉ¨É

ºÉÖxnù®ú nùÉºÉ xÉä ±ÉÉ±ÉÉ ¦ÉMÉ´ÉÉxÉnùÒxÉ Eäò ¤ÉÉ®äú ¨Éå BEò ºÉÖxnù®ú ºÉÆº¨É®úhÉ Ê±ÉJÉÉ* +ÉSÉÉªÉÉÇ ®úÉ¨Énäù´É, ¸ÉÒ ®úÉ¨ÉnùÉºÉ MÉÉèb÷, <±ÉÉSÉÆxpù VÉÉä¶ÉÒ, ´ÉÞxnùÉ´ÉxÉ±ÉÉ±É ´É¨ÉÉÇ, ¨É½þÉ´ÉÒ®ú |ÉºÉÉnù Êuùù´ÉänùÒ +ÉÊnù Eò<Ç ±ÉäJÉEòÉå nÂù´ÉÉ®úÉ Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê±ÉJÉä MÉªÉä ºÉÆº¨É®úhÉ <ºÉ Ê´ÉvÉÉ EòÉä +ÉMÉä ¤ÉgøÉiÉä ®ú½äþ* ºÉÆº¨É®úhÉÉi¨ÉEò ®äúJÉÉÊSÉjÉÉå EòÒ xÉªÉÒ Ênù¶ÉÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå ¸ÉÒ®úÉ¨É ¶É¨ÉÉÇ, ¤ÉxÉÉ®úºÉÒnùÉºÉ SÉiÉÖ´ÉænùÒ iÉlÉÉ ¨É½þÉnäùùù´ÉÒ ´É¨ÉÉÇ xÉä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ªÉÉäMÉ ÊnùªÉÉ* ¸ÉÒ®úÉ¨É ¶É¨ÉÉÇ EòÒ ¤ÉÉä±ÉiÉÒ |ÉÊiÉ¨ÉÉ, |ÉÉhÉÉå EòÉ ºÉÉènùÉ, VÉÆMÉ±É Eäò VÉÒ´É +ÉÊnù Eò<Ç EÞòÊiÉªÉÉÄ <ºÉ Ê´ÉvÉÉ EòÒ ¤Éb÷Ò ={É±ÉÎ¤vÉªÉÉÄ ½éþ* ¤ÉxÉÉ®úºÉÒ nùÉºÉ VÉÒ xÉä ½þ¨ÉÉ®äú +É®úÉvªÉ +Éè®ú ºÉÆº¨É®úhÉ, ®äúJÉÉÊSÉjÉ, ºÉäiÉÖ¤ÉxvÉ ºÉÆOÉ½þ +ÉÊnù ®úSÉxÉÉBÄ EòÒ* =x½þÉåxÉä ´ªÉÊHò Eäò MÉÖhÉÉå {É®ú Ê´É¶Éä¹É ¤É±É ÊnùªÉÉ ½èþ* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ ¨É½þÉnäùù´ÉÒ ´É¨ÉÉÇ EòÉ xÉÉ¨É Ê½þxnùÒ EäòºÉÆº¨É®úhÉ +Éè®ú ®äúJÉÉÊSÉjÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå ºÉ¤ÉºÉä +ÉÊvÉEò ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* +iÉÒiÉ Eäò SÉ±ÉÊSÉjÉ, º¨ÉÞiÉÒ EòÒ ®äúJÉÉBÄ, {ÉlÉ Eäò ºÉÉlÉÒ, º¨É®úÊhÉEòÉ +ÉÊnù ®äúJÉÉÊSÉjÉ ºÉÆOÉ½þÉå ¨Éå ¨É½þÉnäùù´ÉÒVÉÒ xÉä +{ÉxÉä ºÉÆ{ÉEÇò ¨Éå +ÉxÉä´ÉÉ±Éä ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå, ¶ÉÉäÊ¹ÉiÉ ´ªÉÊHòªÉÉå, nùÒxÉ xÉÉÊ®úªÉÉå, VÉÒ´É

VÉxiÉÖ+Éå +ÉÊnù EòÉ ºÉÆ´ÉänùxÉÉ¨ÉÚ±ÉEò ÊSÉjÉhÉ ¤Ébä÷ ½þÒ ¨ÉÉÌ¨ÉEò fÆøMÉ ºÉä ÊEòªÉÉ ½èþ* ±ÉäÊJÉEòÉ ¨Éå VÉÉä ÊSÉjÉEòÉ®ú +Éè®ú EòÊ´É EòÉ °ü{É ½èþ, ´É½þ <xÉ ®úSÉxÉÉ+Éå ¨Éå =¦É®ú +ÉªÉÉ ½èþ* |ÉEòÉ¶É SÉxpù MÉÖ{iÉ xÉä ®äúJÉÉÊSÉjÉÉå Eäò lÉäjÉ ¨Éå EòÉ¿òÒ >ÄóSÉÉ ºlÉÉxÉ {ÉÉªÉÉ ½èþ* "{ÉÖ®úÉxÉÒ º¨ÉÞÊiÉªÉÉÄ', "®äúJÉÉÊSÉjÉ', MÉä½ÚÄþ +Éè®ú MÉÖ±ÉÉ¤É' +ÉÊnù EÞòÊiÉªÉÉÄ <ºÉ lÉäjÉ ¨Éå =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* ºÉÆº¨É®úhÉÉi¨ÉEò Eò½þÉÊxÉªÉÉÄ Ê±ÉJÉxÉä ¨Éå ®úÉÊvÉEòÉ®ú¨ÉhÉ |ÉºÉÉnù Ëº½þ xÉä º¿ò±ÉiÉÉ {ÉÉªÉÒ* Ê´ÉxÉªÉ ¨ÉÉä½þxÉ ¶É¨ÉÉÇ Eäò ®äúJÉÉÊSÉjÉ +iªÉÆiÉ ®úÉäSÉEò +Éè®ú {É¦ÉÉ´ÉÉi¨ÉEò ½èþ* näù´Éäxpù ºÉiªÉÉlÉÔ, ¶ÉÉËiÉÊ|ÉªÉ Êuù´ÉänùÒ, ={ÉäxpùxÉÉlÉ +¶Eò, Ê´É¹hÉÖ |É¦ÉÉEò®ú, ®úÉ½Öþ±É ºÉÉÆEÞòiªÉÉªÉxÉ, b÷É. xÉMÉäxpù, VÉMÉnùÒ¶É SÉxpù ¨ÉÉlÉÖ®ú +ÉÊnù |É¨ÉÖJÉ ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå xÉä ¦ÉÒ ®äúJÉÉÊSÉjÉÉå +Éè®ú ºÉÆº¨É®úhÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå +{ÉxÉÒ +{ÉxÉÒ +±ÉMÉ ¦ÉÚÊ¨ÉEòÉ ÊxÉ¦ÉÉªÉÒ ½èþ* ºÉÆº¨É®úhÉ Ê±ÉJÉxÉä´ÉÉ±Éä EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå ÊnùxÉEò®ú, ¨ÉÉJÉxÉ±ÉÉ±É SÉiÉÖ´ÉænùÒ, ¤ÉSSÉxÉ +ÉÊnù =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ*

UNIT 18

ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ

Ê½þxnùÒ Eäò MÉt ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ±ÉäJÉxÉ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ºÉä ±ÉäEò®ú ¶ÉÖ¯û ½Öþ+É* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù xÉä ªÉÉjÉÉÊ´É¹ÉªÉEò Eò<Ç ±ÉäJÉ "EòÊ´É´ÉSÉxÉºÉÖvÉÉ' ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ÊEòB lÉä* <xÉ¨Éå ±ÉJÉxÉ>ð EòÒ ªÉÉjÉÉ, ºÉ®úªÉÚ {ÉÉ®ú EòÒ ªÉÉjÉÉ +ÉÊnù ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* Ê½þxnùÒ |ÉnùÒ{É ¨Éå |ÉiÉÉ{ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É iÉlÉÉ ¤ÉÉ±ÉEÞò¹hÉ ¦É]Âõ]õ EòÒ ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ ®úSÉxÉÉBÄ |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½Öþ<Ç* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ ½þ®únäù´ÉÒ, ¦ÉMÉ´ÉÉxÉnùÉºÉ ´É¨ÉÉÇ, nùÉ¨ÉÉänù®ú ¶ÉÉºjÉÒ +ÉÊnù xÉä ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ Eäò °ü{É ¨Éå {ÉÖºiÉEåò |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ EòÓ* Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå {ÉjÉ-{ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå Eò<Ç ªÉÉjÉÉ´ÉÞiÉ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖþB* <xÉEäò ±ÉäJÉEòÉå ¨Éå º´ÉÉ¨ÉÒ ¨ÉÆMÉ±ÉÉxÉÆnù, ¸ÉÒvÉ®ú {ÉÉ`öEò, =¨ÉÉ xÉä½þ°ü, ±ÉÉäSÉxÉ |ÉºÉÉnù {ÉÉhbä÷ªÉ +ÉÊnù |ÉÊºÉnÂùvÉ ½èþ* näù´ÉÒ|ÉºÉÉnù JÉjÉÒ, MÉÉä{ÉÉ±É®úÉ¨É MÉ½þ¨É®úÒ, MÉnùÉvÉ®ú ËºÉ½þ, º´ÉÉ¨ÉÒ ºÉiªÉnäù´É {ÉÊ®ú µÉÉVÉEò +ÉÊnù ±ÉäJÉEòÉå xÉä {ÉÖºiÉEòÉå Eäò °ü{É ¨Éå ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ Ê±ÉJÉEò®ú JªÉÉÊiÉ {ÉÉªÉÒ* Êuùù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ Eäò ¤ÉÉnù ªÉÉjÉÉ´ÉÞiÉÉå EòÉ lÉäjÉ ´ªÉÉ{ÉEòiÉÉ {ÉÉxÉä ±ÉMÉÉ* ®úÉ¨ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É, Eòx½èþªÉÉ±ÉÉ±É Ê¨É¸É, |ÉÉä¿ò ¨ÉxÉÉä®úÆúVÉxÉ, ºÉä`ö

MÉÉäÊ´Éxnù +ÉÊnù EòÇ ±ÉäJÉEòÉå xÉä <ºÉ EòÉ±É ¨Éå Ê½þxnùÒ Eäò ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä ºÉ¨ÉÞrù ÊEòªÉÉ*

Ê½þxnùÒ Eäò ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ±ÉäJÉxÉ ¨Éå ®úÉ½Öþ±É ºÉÉÆEÞòiªÉÉªÉxÉ EòÉ ºlÉÉxÉ ¤É½ÖþiÉ >ÄðSÉÉ ½èþ* =xÉEòÉ {ÉÚ®úÉ VÉÒ´ÉxÉ PÉÖ¨ÉxÉä Ê¡ò®úxÉä ¨Éå ´ªÉÊiÉiÉ ½Öþ+É lÉÉ* ÊiÉ¤ÉkÉ EòÒ ªÉÉjÉ {É®ú +ÉSÉÉÊ®úiÉ "ÊiÉ¤ÉkÉ ¨Éå ºÉ´ÉÉ ´É¹ÉÇ' xÉÉ¨ÉEò =xÉEòÒ ®úSÉxÉÉ xÉä ´É½þÉÄ Eäò VÉxÉ-VÉÒ´ÉxÉ EòÒ ºÉ¶ÉHò ZÉÉÄEòÒ |ÉºiÉÖiÉ EòÒ ½èþ* ¨Éä®úÒ ªÉÖ®úÉä{É ªÉÉjÉÉ, ¨Éä®úÒ ÊiÉ¤ÉkÉ ªÉÉjÉÉ +ÉÊnù +xªÉ OÉxlÉ ¦ÉÒ =x½þÉåxÉä Ê±ÉJÉä ½èþ* ®úÉ½Öþ±É ºÉÉÆEÞòiªÉÉªÉxÉ xÉä <ºÉ Ê¤ÉvÉÉ EòÉä ºÉ¨ÉÞrù ÊEòªÉÉ* "¨Éä®úÒ ±ÉqùÉJÉ ªÉÉjÉÉ', ÊEòxxÉÉ®ú näù¶É ¨Éå, ®úÉ½Öþ±É ªÉÉjÉÉ´ÉÉ±ÉÒ, ¯û°É ¨Éå {ÉSSÉÒºÉ ¨ÉÉºÉ, "BÊ¶ÉªÉÉ Eäò nÖùMÉÇ¨É ¦ÉÚJÉhb÷Éå ¨Éå' +ÉÊnù +xÉäEò OÉxlÉ º´Énäù¶É +Éè®ú Ê´Énäù¶É ºÉä Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ºlÉÉxÉÉåEòÉ +iªÉÆiÉ ºÉÖxnù®ú ÊSÉjÉ |ÉºiÉÖiÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä ½èþ*

ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå VÉ´ÉÉ½þ®ú±ÉÉ±É xÉä½þ°ü ºÉä ®úÊSÉiÉ "+ÉÄJÉÉä näùJÉÉ °üºÉ' xÉÉ¨ÉEò ®úSÉxÉÉ =xÉEòÒ °üºÉ-ªÉÉjÉÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ |ÉÊiÉÊGòªÉÉ+Éå EòÉ ºÉVÉÒ´É ´ÉhÉÇxÉ Eò®úiÉÒ ½èþ* º´ÉÉ¨ÉÒ ºÉiªÉ¦ÉHò, EòxÉÇ±É ºÉVVÉxÉËºÉ½þ, ºÉÚªÉÇxÉÉ®úÉªÉhÉ ´ªÉÉºÉ, ®úÉ¨É´ÉÞIÉ ¤ÉäxÉ{ÉÖ®úÒ +ÉÊnù xÉä ¦ÉÒ ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉÉå

Eäò lÉäjÉ ¨Éå vªÉÉxÉ Ênùª ÉÉ ½èþ* ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ±ÉäJÉEòÉå ¨Éå ¸ÉÒ. ªÉ¶É{ÉÉ±É ¦ÉÒ +ÉiÉä ½èþ* ±ÉÉä½äþ EòÒ nùÒ´ÉÉ®ú Eäò nùÉäxxÉÉå +Éè®ú, ®úÉ½þ¤ÉÒiÉÒ +ÉÊnù =xÉEòÒ ®úSÉxÉÉBÄ Ê´É¶Éä¹É °ü{É ºÉä =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* +ÉvÉÖÊxÉEò EòÊ´É +ÉYÉäªÉ xÉä "+®äú ªÉÉªÉÉ´É®ú ®ú½äþMÉÉ ªÉÉnù', "BEò ¤ÉÚÄnù ºÉÉ½þºÉÉ =Uô±ÉÒ' +ÉÊnù EÞòÊiÉªÉÉå Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ Ê½þxnùÒ Eäò ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä ºÉ¨ÉÞrù ÊEòªÉÉ ½èþ* <ºÉ Ê´ÉvÉÉ ¨Éå Ê´É¹hÉÖ|É¦ÉÉEò®ú, b÷É. xÉMÉäxpù,ù ®úÉ¨ÉEÞò¹hÉ ®úPÉÖxÉÉlÉ, ¨ÉÉä½þxÉ ®úÉEäò¶É, |É¦ÉÉEò®ú Êuù´ÉänùÒ +xÉäEò ±ÉäJÉEòÉä Eäò xÉÉ¨É +ÉiÉä ½èþ* Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê´Énäù¶É-§É¨ÉhÉ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ ªÉÉjÉÉ´ÉÞkÉ VªÉÉnùÉ +ÉªÉä ½éþþ, VÉ¤ÉEòÒ ¦ÉÉ®úiÉ-§É¨ÉhÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ Eò¨É Ê±ÉJÉä MÉªÉä ½éþ*

UNIT 19

MÉtEòÉ´ªÉ

MÉtEòÉ´ªÉ ¨Éå ´ÉèªÉÊHòEò ºÉÖJÉ-nÖù:JÉ, +É¶ÉÉ-ÊxÉ®úÉ¶ÉÉ +ÉÊnù PÉxÉÒ¦ÉÚiÉ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ+Éå EòÉä, ºÉÉvÉÉ®úhÉ MÉt ºÉä Ê¦ÉxxÉ, ¦ÉÉ´É{ÉÚhÉÇ MÉt ¨Éå ´ªÉHò ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* <ºÉ¨Éå UôxnùÉä¤Érù EòÉ´ªÉ Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ ®úºÉÉi¨ÉEòiÉÉ +Éè®ú ºÉÆ´ÉänùxÉ¶ÉÒ±ÉiÉÉ Ê¨É±ÉiÉÒ ½èþ* <ºÉ |ÉEòÉ® EòÒ ®úSÉxÉÉBÄ Ê½þxnùÒ ¨Éå ®ú´ÉÒxpùxÉÉlÉ `öÉMÉÉä®ú EòÒ "MÉÒiÉÉÆVÉ±ÉÒ' Eäò |É¦ÉÉ´É Eäò ¿ò±Éº´É°ü{É ®úÊSÉiÉ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÒ* ®úÉªÉ EÖò¹hÉnùÉºÉ, Ê´ÉªÉÉäMÉÒ ½þÊ®ú, SÉiÉÖ®úºÉäxÉ ¶ÉÉºjÉÒ, ¨ÉÉJÉxÉ±ÉÉ±É SÉiÉÖ´ÉænùÒ, þ÷É. ®úPÉÖ´ÉÒ®ú ËºÉ½þ +ÉÊnù MÉtEòÉ´ªÉ ±ÉäJÉEòÉå ¨Éå |É¨ÉÖJÉ ½èþ* ®úÉªÉÉEPò¹hÉnùÉºÉ Eäò MÉtEòÉ´ªÉ |ÉEPòÊiÉ{É®úEò ½èþ iÉÉä Ê´ÉªÉÉäMÉÒ ½þÊ®ú Eäò MÉvªÉEòÉ´ªÉ ¦ÉÊHò{É®úEò +Éè®ú ®úÉ¹]Åõ|Éä¨É ºÉÆ¤ÉxvÉÒ ½èþ* SÉiÉÖ®úºÉäxÉ ¶ÉÉºjÉÒ xÉä ¨ÉÉxÉÊºÉEò ¦ÉÉ´ÉÉå Eäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ °ü{É EòÉä ±ÉäEò®ú MÉtEòÉ´ªÉ Ê±ÉJÉä* ¨ÉÉJÉxÉ±ÉÉ±É SÉiÉÖ´ÉænùÒ ºÉä Ê±ÉÊJÉiÉ ºÉÉÊ½þiªÉnäù´ÉiÉÉ |ÉÊºÉrù MÉtEòÉ´ªÉ ½èþ ÊVÉºÉ¨Éå ®úÉÎ¹]Åõ{ÉiÉÉ EòÉ º´É®ú |É¨ÉÖJÉ ½èþ* þ÷É. ®úPÉÖ´ÉÒ®ú ËºÉ½þ EòÉ xÉÉ¨É MÉtEòÉ´ªÉ Ê´ÉvÉÉ ¨Éå Ê´É¶Éä¹É °ü{É ºÉä º¨É®úhÉÒªÉ ½èþ* =xÉEòÒ "¶Éä¹É º¨ÉPÊiÉªÉÉÄ" BEò |ÉÊºÉnÂùvÉ ®úSÉxÉÉ ½èþ ÊVÉºÉ¨Éå ¨ÉÖMÉ±ÉEòÉ±ÉÒxÉ

JÉhb÷½þ®úÉå EòÉä +ÉvÉÉ®ú ¤ÉxÉÉEò®ú VÉÒ´ÉxÉ Eäò =iÉÉ®ú-SÉgøÉ´É EòÉ ´ÉhÉÇxÉ ÊEò³ÉÉ ½èþ* ¶ÉÉÆiÉÒ|É°ÉÉnù ¶É¨ÉÉÇ, iÉäVÉxÉÉ®úÉ³ÉhÉ EòÉEòÉ, ¦ÉÄ´É®ú±ÉÉ±É Ë°ÉvÉÒ, ®úÉ¨É|É°ÉÉnù Ê´ÉtÉlÉÔ ®ÆúMÉxÉÉlÉ Ênù´ÉÉEò®ú +ÉÊnù EÖòUô ±ÉäJÉEòÉå xÉä ¦ÉÒ MÉtEòÉ´³É ®úSÉxÉÉ ¨Éå ³ÉÉäMÉ Ênù³ÉÉ ½èþ* Ê½þxnùÒ MÉtEòÉ´³É ®úSÉxÉÉBÄ {ÉÊ®ú¨ÉÉhÉ ¨Éå ¤É½ÖþiÉ Eò¨É ½èþ* ±ÉäÊEòxÉ VÉÉä EÞòÊiÉ³ÉÉÄ Ê¨É±ÉiÉÒ ½èþ, ´Éä Ê´É¹É³É +Éè®ú ¶Éè±ÉÒ EòÒ oùÎ¹]õ °Éä ¨ÉÖ±³É´ÉÉxÉ ½èþ* <xÉEòÉ Ê´É¹É³É-´ÉèÊ´ÉvªÉ +Éè®ú ¶Éè±ÉÒMÉiÉ °ÉÉèxn³ÉÇ nù¶ÉÇxÉÒ³É ½èþ* xÉÉ®úÒú|Éä¨É, ®úÉ¹]Åõ|Éä¨É, +ÉvªÉÉi¨É, <ÊiÉ½þÉ°É, VÉÒ´ÉxÉ-nù¶ÉÇxÉ iÉlÉÉ +x³É +xÉäEò Ê´É¹É³ÉÉå EòÉä ±ÉäEò®ú Ê½þxnùÒ ¨Éå °ÉÖxnù®ú MÉtEòÉ´³É Ê±ÉJÉä MÉ³Éä*

UNIT 20

Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ

xÉ´ÉÒxÉ ºÉÉÊ½þiªÉ-°ü{ÉÉå Eäò +ÉxiÉMÉÇiÉ Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ EòÉ ¨É½þÉi´É{ÉÚhÉÇ ºlÉÉxÉ ½èþ* Ê®ú{ÉÉä]Çõ ¨Éå Eäò´É±É iÉlªÉÉå EòÉ SÉªÉxÉ ½þÉäiÉÉ ½èþ +Éè®ú =ºÉ¨Éå Eò±ÉÉi¨ÉEòiÉÉ {É®ú VªÉÉxÉ xÉ½þÓ Ênùª ÉÉ VÉÉiÉÉ* Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ ¨Éå ÊEòºÉÒ Ê´É¹ÉªÉ EòÉ +ÉÄJÉÉå näùJÉÉ ªÉÉ EòÉxÉÉå-ºÉÖxÉÉ ´ÉhÉÇxÉ <iÉxÉä |É¦ÉÉ´É¶ÉÉ±ÉÒ fÆøMÉ ºÉä ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ ÊEò {ÉÉ`öEòÉå Eäò ¾þnùªÉ ¨Éå =ºÉEòÉ +Ê¨É]õ UôÉ{É {Éb÷iÉÒ ½èþ, ´Éä =ºÉä Ê¿ò®ú ¦ÉÚ±É xÉ ºÉEäò* <ºÉ¨Éå Eò±ÉÉi¨ÉEòiÉÉ BÆ´É |É¦ÉÉ´ÉÉäi{ÉÉnùEòiÉÉ {É®ú ¤É±É Ênùª ÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* <ºÉ ºÉÉÊ½þÎiªÉEòÊ´ÉvÉÉ EòÉ +É®ÆúiÉ 1936 Eäò +ÉºÉ{ÉÉºÉ ÊuùiÉÒªÉ Ê´É•É ªÉÖrù Eäò ºÉ¨ÉªÉ ½Öþ+É lÉÉ* °üºÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉÉEòÉ®úÉå xÉä <ºÉEòÉ Ê´É¶Éä¹É |ÉªÉÉ®ú ÊEòªÉÉ* Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ ±ÉäJÉxÉ EòÒ {É®ÆúiÉ®úÉ 1938 ¨Éå Ê¶É´ÉnùÉxÉ ËºÉ½þ SÉÉè½þÉxÉ EòÒ ®úSÉxÉÉ "±ÉI¨ÉÒ{ÉÖ®úÉ' ºÉä ¶ÉÖ¯û ½Öþ<Ç* ¤ÉÆMÉÉ±É Eäò nÖùÌ¦ÉlÉ +Éè®ú ¨É½þÉ¨ÉÉ®úÒú Eäò Ê´É¹ÉªÉ ¨Éå b÷É. ®úÉÆúMÉäªÉ ®úÉÞÉ´É xÉä Ê´É¶ÉÉ±É ¦ÉÉ®úiÉ ¨Éå VÉÉä Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ Ê±ÉJÉÉ ´É½þ +{ÉxÉÒ ¨ÉÉÌ¨ÉEòiÉÉ Eäò Ê±ÉB |ÉÊºÉnÂùvÉ ½èþ* "iÉÚ¿òÉxÉÉå Eäò ¤ÉÒSÉ' ¨Éå =xÉEäò ¨É¨ÉÇº{É¶ÉÒ Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ ºÉÆEòÊ±ÉiÉ ½ÖþB* |ÉEòÉ¶ÉSÉxpù MÉÖ{iÉ xÉä Eò<Ç

PÉ]õxÉÉ|ÉvÉÉxÉ Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ Ê±ÉJÉä ½èÞ* ={ÉäxÞùxÉÉlÉ +¶Eò, ®úÉ¨ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ ={ÉÉvªÉÉªÉ +ÉÊnù Eäò Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ =xÉEäò Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ MÉt ºÉÆOÉ½þÉå ¨Éå ºÉÆEòÊ±ÉiÉ ½èÞ* Ê½þxnùÒ ¨Éå Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ Ê±ÉJÉxÉä´ÉÉ±ÉÉå ¨Éå ¨ÉnùxxÉ +ÉxÉxnù EòÉè°É±ªÉÉªÉxÉ, Ê¶É´É°ÉÉMÉ®ú Ê¨É¸É, vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ, Eòx½äþªÉÉ±ÉÉ±É Ê¨É¸É, ¶É¨É¶Éä®ú ¤É½þÉnÚù®ú ËºÉ½þ, ¸ÉÒEòÉxiÉ ´É¨ÉÉÇ +ÉÊnù Eò<Ç ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå Eäò xÉÉ¨É |ÉÊºÉnÂùvÉ ½éþþ*

<xÉ ºÉ¦ÉÒ ±ÉäJÉEòÉå xÉä Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ ±ÉäJÉxÉ EòÉä xÉªÉä +ÉªÉÉ¨É |ÉnùÉxÉ ÊEòªÉä ½èÞ* Ê½þxnùÒ Eäò +ÉÊvÉEòÉÆ¶É Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ-ºÉÉÊ½þiªÉ {ÉjÉ-{ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå ½þÒ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖþB ½èÞ* "YÉÉxÉÉänùªÉ', "Eò±{ÉxÉÉ', "xÉªÉÉ {ÉlÉ', "Ênùx¨ÉÉxÉ', "vÉ¨ÉÇªÉÖMÉ', "ºÉÉ{iÉÉÊ½þEò Ê½þxnÖùºxÉÉxÉ' +ÉÊnù ¨Éå Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ ºiÉÆ¦ÉÉå Eäò +xiÉMÉÇiÉ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ Ê®ú{ÉÉäiÉÉÇVÉ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖþB ½èÞ* <xÉEòÉ ±ÉäJÉxÉ ¿òÊhÉ¶´É®úxÉÉlÉ ®äúhÉÖ, ¦ÉMÉ´ÉÉxÉ ¶É®úhÉ ={ÉÉvªÉÉªÉ, VÉMÉiÉÒ¶É |ÉºÉÉnù SÉiÉÖ´ÉænùÒ, ÊxÉ¨ÉÇ±É ´É¨ÉÉÇ, Eò¨É±Éä¶´É®ú, ±ÉI¨ÉÒEòÉxiÉ ´É¨ÉÉÇ +ÉÊnù ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå nÂù´ÉÉ®úÉ ½Öþ+É ½èÞ*

UNIT 21

<Æ]õ´ªÉÚÇ–ºÉÉÊ½þiªÉ

<]õ´ªÉÚÇ–ºÉÉÊ½þiªÉ ªÉÉ ºÉÉIÉÉiEòÉ®ú ¦ÉÒ Ê½þxnùÒ MÉt EòÒ xÉ´ÉÒxÉiÉ¨É Ê´ÉvÉÉ+Éå ¨Éå BEò ½èþ* <ºÉEäò Ê±ÉB ¦Éå]õ´ÉÉiÉÉÇ, Ê´É¶Éä¹É {ÉÊ®SÉSÉÉÇ +ÉÊnù ¶É¤nù ¦ÉÒ |ÉªÉÖHò ½þÉäiÉä ½èþ* <ºÉ¨Éå ±ÉäJÉEò ÊEòºÉÒ Ê´É¶Éä¹É ´ªÉÊHò Eäò ºÉÉIÉ ºÉÉIÉÉiEòÉ®ú Eò®úxÉä Eäò ¤ÉÉnù, ÊEòºÉÒ ÊxÉÎ¶SÉiÉ |É¶xÉ¨ÉÉ±ÉÉ Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú =ºÉEäò ´ªÉÊHòi´É BÆ´É EÞòÊiÉi´É Eäò ¤ÉÉ®äú ¨Éå VÉÉxÉEòÉ®úÒ {ÉÉ ±ÉäiÉä ½èþ* Ê¿ò®ú +{ÉxÉä ¨ÉxÉ {É®ú {Ébä÷ |É¦ÉÉ´É EòÉä Ê±ÉJÉ ±ÉäiÉä ½èþ* Ê½þxnùÒ MÉt ¨Éå <ºÉ Ê´ÉvÉÉ Eäò |É´ÉiÉÇxÉ EòÉ ¸ÉäªÉ ¤ÉxÉÉ®úºÉÒnùÉºÉ SÉiÉÖ´ÉÔnùÒ EòÉä ½èþ* =x½þÉåxÉä ¶ÉixÉÉEò®ú iÉIÉÉ |Éä¨ÉSÉxnù ºÉä ¦Éä]õ Eò®úiÉä, =xÉEäò ´ªÉÊHòi´É +Éè®ú EÞòÊiÉi´É Eäò ¤ÉÉ®äú ¨Éå Ê±ÉJÉÉ ½èþ* Ê´É¶ÉÉ±É ¦ÉÉ®úiÉ ¨Éå "®úixÉÉEò®úVÉÒ ºÉä ¤ÉÉiÉSÉÒiÉ, |Éä¨ÉSÉxnùVÉÒ Eäò ºÉÉIÉ nùÉä Ênùx É ¶ÉÒ¹ÉÇEò ¨Éä =xÉEòÒ ¦Éä]õ–´ÉÉiÉÉÇBÄ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç* "ºÉÉvÉxÉÉ' {ÉjÉÒEòÉ ¨Éå VÉMÉnùÒ¶É|ÉºÉÉnù SÉiÉÖ´ÉænùÒ xÉä ¦ÉnùxxÉ +xÉÆxnù EòÉèºÉ±ªÉÉªÉxÉ EòÒ ¦Éä]õ ´ÉÉiÉÇ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ EòÒ* ÊªÉ]ÆõúVÉÒ ±ÉÉ±É BEòÉÆEòÒ xÉä ¨É½þÉnäù´ÉÒ ´É¨ÉÉÇ EòÒ VÉÉä ¦Éä]õ–´ÉÉiÉÉÇ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ EòÒ, ´É½þ ¦ÉÒ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* ¤ÉäxÉÒ¨ÉÉvÉ´É ¶É¨ÉÇ Eäò EòÊ´É nù¶ÉÇxÉ xÉÉ¨ÉEò º´ÉiÉÆjÉ EÞòÊiÉ ¨Éå

+ªÉÉätÉ Ë°É½þ ={ÉÉvªÉÉªÉ, ¶ªÉÉ¨É°ÉÖnù®únùÉ°É, ®úÉ¨ÉSÉÆpù ¶ÉÖEò±É, ¨ÉèlÉ±ÉÒ¶É®úhÉ MÉÖ{iÉ +ÉÊnù °ÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå °Éä Ê±ÉªÉä xÉªÉä <Æ]õ´ªÉÚÇ °ÉMÉÞÊ½þiÉ ½èþ* <Æ]õ´ªÉÚÇ °ÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå °É¤É°Éä ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ ®úSÉxÉÉ ¸ÉÒ. {ÉnÂù¨ÉË°É½þ ¶É¨ÉÉÇ Eò¨É±Éä¶É EòÒ "¨Éé <xÉ°Éä Ê¨É±ÉÉ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EÞòÊiÉ ½èþ, VÉÉä nùÉä ¦ÉÉMÉÉå ¨Éå ®úÊSÉiÉ ½èþ*

|É¦ÉÉEò®ú ¨ÉÉSÉ´Éä, Ê¶É´ÉnùÉ°É Ë°É½þ SÉÉè½þÉxÉ ®úÉ¨ÉSÉ®úhÉ ¨É½äþxpù +ÉÊnù ±ÉäJÉEòÉå xÉä <°É Ê´ÉvÉÉ EòÒ °É¨ÉÞÊrù ¨Éå ªÉÉäMÉ ÊnùªÉÉ ½èþ* Ê´É®äúxpù EÖò¨ÉÉ®ú MÉÖ{iÉ iÉlÉÉ ®ú¨ÉÉ´ÉiÉÉ®ú xÉä VÉèxÉäxpùVÉÒ °Éä ¦É®åú ´ÉÉiÉÉÇ+Éå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú °ÉÉÊ½þiªÉEò, °ÉÉ¨ÉÉVÉÒEò, ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò, |É¶ÉxÉÉå Eäò =xiÉ®ú °ÉÆVÉÉäªÉä ½èþ* "xÉ<Ç vÉÉ®úÉ", "vÉ¨ÉÇ ªÉÖMÉ', "°ÉÉ{iÉÉÊ½þEò Ê½þxnÖù°iÉÉxÉ', "°ÉÉÊ®úEòÉ' "°ÉÆMÉÒiÉ' +ÉÊnù +xÉäEò {ÉjÉ-{ÉÊjÉEòÉBÄ +{ÉxÉä °iÉÆ¦ÉÉå Eäò +ÉªÉÉäVÉxÉ °Éä Ê½þxnùÒ Eäò <Æ]õ´ªÉÚÇ -°ÉÉÊ½þiªÉ Eäò Ê´ÉEòÉ°É ¨Éå ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ EòÉªÉÇ Eò®ú ®ú½þÒ ½èþ*

UNIT - 22

+ÉvÉÖÊxÉEò Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ

1. +ÉvÉÖÊxÉEò Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ Eäò ÊEòiÉxÉä SÉ®úhÉ ½èþ?

+ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ ¨Éå |É´Éä¶É Eò®úiÉä Eò®úiÉä Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò ¦ÉÉ´É +Éè®ú ¶Éè±ÉÒ ¨Éå +ÉÊnù ºÉä +ÆiÉ iÉEò {ÉÊ®ú´ÉiÉÇxÉ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ* +ÉvÉÖÊxÉEò Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò Ê´ÉEòÉºÉ EòÒ <xÉ Ênù¶ÉÉ+Éå EòÉä <ÊiÉ½þÉºÉEòÉ®úÉå xÉä {ÉÚ´ÉÇ UôÉªÉÉ´ÉÉnù-ªÉÖMÉ, UôÉªÉÉ´ÉÉnù-ªÉÖMÉ, UôÉªÉÉ´ÉÉnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ Eäò °ü{É ¨Éå iÉÒxÉ ªÉÖMÉÉå ¨Éå ¤ÉÉÄ]õEò®ú +vªÉªÉxÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* {ÉÚ´ÉÇ UôÉªÉÉ´ÉÉnù ªÉÖMÉ EòÉä ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù-ªÉÖMÉ +Éè®ú Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ – <xÉ nùÉä Ê´É¦ÉÉMÉÉå ¨Éå ¦ÉÒ ®úJÉÉ ½èþ* ªÉ½þ Ê´É¦ÉÉVÉxÉ Ê½þxnùÒ EòÉ´ªÉ Eäò ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ +ÉxnùÉä±ÉxÉ +lÉÉÇiÉ UôÉªÉÉ´ÉÉnù Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú ½Öþ+É ½èþ* +ÉvÉÖÊxÉEò EòÉ±É Eäò |ÉlÉ¨É nùÉä SÉ®úhÉÉå ¨Éå ÊVÉxÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉå EòÒ |ÉÊiÉÊGòªÉÉ Eäò °ü{É ¨Éå =kÉ®ú UôÉªÉÉ´ÉÉnù-ªÉÖMÉ EòÒ

GòÉÊkÉEòÉ®úÒ |É´ÉÞÊkÉªÉÉå EòÉ =nùªÉ ½Öþ+É*

2. ¦ÉÉ®úiÉäxiÉnÖù ªÉÖMÉ Eäò EòÊ´É +Éè®ú =xÉEòÒ ¨ÉÖJªÉ ®úSÉxÉÉ+Éå EòÉ {ÉÊ®úSÉªÉ nùÒÊVÉB?

¦ÉÉ®úiÉäxnÖù Eäò ºÉÉlÉ-ºÉÉlÉ Ê¹½þxnùÒ ¨Éå =ºÉ ºÉ¨ÉªÉ +xªÉ Eò<Ç EòÊ´É ®úSÉxÉÉ Eò®ú ®ú½äþ lÉä* EòÉ´ªÉ Eäò +Énù¶ÉÇ, Ê´É¹ÉªÉ ´ÉºiÉÖ, ¦ÉÉ´É +Éè®ú ¶Éè±ÉÒ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä =x½þÉåxÉä ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù EòÉ ½þÒ +xÉÖEò®úhÉ ÊEòªÉÉ lÉÉ* <ºÉÊ±ÉB <xÉ ºÉ¦ÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå Eäò ¨ÉÆb÷±É EòÉä ""¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ¨Éhb÷±É" xÉÉ¨É ÊnùªÉÉ MÉªÉÉ lÉÉ* <ºÉ¨Éå |É¨ÉÖJÉ °ü{É ºÉä ¤Énù®úÒ xÉÉ®úÉªÉhÉ SÉÉèvÉ®úÒ "|Éä¨ÉPÉxÉ', |ÉiÉÉ{É xÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É, ®úÉvÉÉSÉ®úhÉ MÉÉäº´ÉÉ¨ÉÒ, ®úÉvÉÉEÞò¹hÉ nùÉºÉ, +ÉÎ¨¤ÉEòÉ nkÉ ´ªÉÉºÉ, ¤ÉÉ±É ¨ÉÖEÖÆòxnù MÉÖ{iÉ +ÉÊnù +ÉiÉä ½èþ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù xÉä Eò<Ç EòÉ´ªÉ OÉxlÉ Ê±ÉJÉä ½èþ ÊVÉxÉ¨Éå ¦ÉÊHò, vÉÉÌ¨ÉEòiÉÉ, ºÉÉèxnùªÉÇ, |Éä¨É, näù¶É|Éä¨É, ½þÉºªÉ - ´ªÉÆMªÉ +ÉÊnù Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉå Eäò nù¶ÉÇxÉ ½þÉäiÉä ½èþ* "¦ÉHò ºÉ´ÉÇº´É', "|Éä¨É ¨ÉÉÊ±ÉEòÉ', "EòÉÌiÉEò ºxÉÉxÉ', "´Éè¶ÉÉJÉ - ¨ÉÉ½þÉi¨ªÉ' +ÉÊnù EòÉ´ªÉOÉxlÉÉå EòÒ ºÉÆJªÉÉ 70 Eäò +ÉºÉ {ÉÉºÉ ½èþ*

¤Énù®úÒ xÉÉ®úÉªÉhÉ SÉÉèvÉ®úÒ "|Éä¨ÉPÉxÉ' EòÉ "|Éä¨ÉPÉxÉºÉ´ÉÇº´É' =xÉEòÒ

+xÉäEò EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ ºÉÆEò±ÉxÉ ½èÞ* |ÉiÉÉ{É xÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É ¨ÉÖJªÉiÉ: Ê´ÉxÉÉänù ¦ÉÉ´É ¨Éå ¯ûÊSÉ ®úJÉiÉä lÉä* "|Éä¨É {ÉÖ¹{ÉÉ´É±ÉÒ', "¨ÉxÉ EòÒ ±É½Þ®ú', ¶ÉÞÆMÉÉ®ú-Ê´É±ÉÉºÉ +ÉÊnù +xÉäEò ®úSÉxÉÉBÄ =x½ÞÉåxÉä ®úSÉÒ ½èÞ VÉÉä =SSÉEòÉäÊ]õ EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò =nùÉ½Þ®úhÉ ½èÞ* ®úÉvÉÉ-SÉ®úhÉ MÉÉäº´ÉÉ¨ÉÒ xÉä ¦ÉÒ ¦ÉÊHò, ¶ÉÞÆMÉÉ®ú +Éè®ú näù¶É|Éä¨É ºÉä ¦É®úÒ +xÉäEò EòÊ´ÉiÉÉBÄ Ê½ÞxnùÒ EòÉä nùÒ ½èÞ* +ÆÊ¤ÉEòÉnùºiÉ´ªÉÉºÉ +Éè®ú ¤ÉÉ±É¨ÉÖEÖòxnù MÉÖ{iÉ xÉä ºÉ¨ÉÉVÉ ºÉÖvÉÉ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒªÉiÉÉ BÆ´É ®úÉ¹]ÅõÒªÉiÉÉ ºÉÆ¤ÉxvÉÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ Ê±ÉJÉEò®ú Ê½ÞxnùÒ EòÉ´ªÉ Eäò <ÊiÉ½ÞÉºÉ ¨Éå +{ÉxÉÉ +±ÉMÉ ºlÉÉxÉ {ÉÉªÉÉ ½èÞ*

3. ¦ÉÉ®úiÉäxnÖùªÉÖMÉÒxÉ EòÉ´ªÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉ Ê´É¶Éä¹ÉiÉÉBÄ CªÉÉ-CªÉÉ ½èÞ?

®úÉ¹]ÅõÒªÉiÉÉ: ¦ÉÉ®úiÉ Eäò MÉÉè®ú´É¨ÉÉxÉ <ÊiÉ½ÞÉºÉ {ÉÉjÉÉå +Éè®ú +ÆOÉäWÉÒ Ê´ÉSÉÉ®úvÉÉ®ú ºÉä |Éä®úhÉ ±ÉäEò®ú ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉÒxÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä VÉxÉ¨ÉÉxÉºÉ ¨Éå ®úÉ¹]ÅõÒªÉiÉÉ EòÒ ¤ÉÒVÉ ¤ÉÉäxÉä EòÒ EòÉäÊ¶É¶É EòÒ* ¤ÉÉnù Eäò ªÉÖMÉÉå Eäò EòÊ´ÉªÉÉå EòÉä näù¶É¦ÉÊHò EòÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò WÉÊ®úBÉ |ÉEò]õ Eò®ú´ÉÉxÉä EòÒ |Éä®úhÉ <x½ÞÓ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ÊnùªÉÉ*

ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò SÉäiÉxÉÉ: ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Eäò ºÉÉÊ½þiªÉEòÉ®úÉå xÉä |ÉlÉ¨É ¤ÉÉ®ú VÉxÉºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå EòÉä ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå +Ê¦É´ªÉHò EÒ®úxÉä EòÒ EòÉäÊ¶É¶É EòÒ* ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ +lÉÇ ´ªÉ´ÉºlÉÉ EòÉä ºÉÖoùgø ¤ÉxÉÉxÉä Eäò Ê±ÉB PÉô®äú±ÉÚ =nÂùªÉÉäMÉÉå {É®ú EòÊ´ÉªÉÉå xÉä VªÉÉnùÉ vªÉÉxÉ ÊnùªÉÉ* <ºÉºÉä ªÉ½þ º{É¹]õ ½þÉäiÉÉ ½èþ ÊEò EòÊ´ÉªÉÉå EòÉä ªÉÖMÉÒxÉ ºÉ¨ÉºlÉÉ+Éå EòÒ {ÉÚ®úÒ VÉÉxÉEòÉ®úÒ lÉÒ* "|É¤ÉÉävÉxÉÒ' xÉÉ¨ÉEò EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå º´ÉªÉÆ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù VÉÒ xÉä Ê´Énäù¶ÉÒ ´ÉºiÉÖ+Éå EòÒ ¤ÉÊ½þ¹EòÉ®ú Eò®úxÉä EòÒ |ÉÉlÉÇxÉÉ EòÒ ½èþ*

¦ÉÊHò ¦ÉÉ´ÉxÉÉ: ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉÒxÉ EòÊ´ÉªÉÉå EòÉä Ê´É®úÉºÉiÉ °ü{É ¨Éå ¦ÉÊHò ¦ÉÉ´ÉxÉÉ |ÉÉ{iÉ ½Öþ<Ç lÉÒ* ÊxÉMÉÖÇhÉ ¦ÉÊHò, ´Éè¹hÉ´É ¦ÉÊHò, näù¶É¦ÉÊHò EòÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ ºÉä +ÉäiÉ|ÉÉäiÉ EòÊ´ÉiÉÉªÉå <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå +ÉxªÉjÉ ={É±É¤vÉ ½èþ* ¸ÉÒ ±ÉÊ±ÉiÉ ®úÉ¨ÉÉªÉhÉ, |Éä¨ÉPÉxÉ EòÉ +±ÉÉèÊEòEò ±ÉÒ±ÉÉ, +ÉxÉxnù +¯ûhÉÉänùªÉ +ÉÊnù Eäò xÉÉ¨É ªÉ½þÉÄ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ*

|ÉEPòÊiÉ-´ÉhÉÇxÉ: |ÉEPòÊiÉ ºÉÉèxnùªÉÇ EòÉ ´ÉhÉÇxÉ ¦ÉÉ®úiÉäxnÖùªÉÖMÉÒxÉ EòÉ´ªÉ EòÉ ¨ÉÖJªÉ Ê´É¶Éä¹ÉiÉÉ ½èþ* |ÉEPòÊiÉ EòÉ ´ÉhÉÇxÉ +É±ÉÆ¤ÉxÉ +Éè®ú =nÂùnùÒ{ÉxÉ Eäò °ü{É ¨Éå =x½þÉåxÉä ÊEòªÉ ½èþ* |ÉEPòÊiÉ Eäò ºÉÚl¨É où¶ªÉÉå EòÉ =±±ÉäJÉxÉ ¦ÉÒ EÖòUô EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ÊEòªÉÉ ½èþ* @ñiÉÖ+Éå EòÉ

´ÉhÉÇxÉ, xÉÉªÉEò-xÉÉÊªÉEòÉ EòÒ ¨ÉxÉÉänù¶ÉÉ+Éå Eäò °ü{É ¨Éå Eò®úxÉä EòÒ EòÉäÊ¶É¶É <xÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ÊEòªÉÉ ½èÞ*

½ÞÉºªÉ-´ªÉÆMªÉ: ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ¨Éå ½ÞÉºªÉ-´ªÉÆMªÉ ¸ÉähÉÒ ¨Éå +ÉxÉä´ÉÉ±ÉÒ Eò<Ç ®úSÉxÉÉBÄ ½Öb<Ç* ºÉ¨ÉÉVÉ ¨Éå |ÉSÉÊ±ÉiÉ +xÉÉSÉÉ®úÉå, +xvÉÊ´É¶´ÉÉºÉÉå, Ê´Énäù¶ÉÒ ¶ÉÉºÉxÉ +ÉÊnù {É®ú ´ªÉÆMªÉ Eò®úxÉä ¨Éå EòÊ´É Ê½ÞSÉEòiÉä xÉ½ÞÓ lÉä* |Éä¨ÉPÉxÉ, |ÉiÉÉ{ÉxÉÉ®úÉªÉhÉ Ê¨É¸É +ÉÊnù Eäò xÉÉ¨É ªÉ½ÞÉÄ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èÞ*

EòÊ´ÉiÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå ¨ÉÖHò ®úSÉxÉÉ+Éå EòÉä |ÉvÉÉxÉiÉÉ Ê¨É±ÉÒ* {ÉÉ®ÆÚ{ÉÊ®úEò EòÉ´ªÉ ¶Éè±ÉÒ +Éè®ú xÉ´ÉÒxÉ EòÉ´ªÉ ¶Éè±ÉÒ EòÉ ºÉ¨Éx´ÉªÉ Eò®úEäò =x½ÞÉåxÉä EòÉ´ªÉ EòÉä +Éè®ú +ÉEò¹ÉÇEò BÆ´É ¨ÉxÉSÉÉ½ÞÉ ¤ÉxÉÉªÉÉ* <ºÉ |ÉEòÉ®ú xÉÉ´ÉvÉÉMÉ®úhÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä <ºÉ ªÉÖMÉ EòÉ +ÉvÉÖxÉÒEò Ê½ÞxnùÒ ºÉÉÊ½ÞiªÉ Eäò <ÊiÉ½ÞÉºÉ ¨Éå +xÉxªÉ ¨É½Þi´É ½èÞ*

UNIT- 23

Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉÒxÉ EòÉ´ªÉ

1. Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ EòÉä +Énù¶ÉÇ´ÉÉnùÒ |É¤ÉxvÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ ÊEò°ÉxÉä Eò½þÉ? CªÉÉå?

Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò Ê´ÉEòÉ°É EòÉ nÚù°É®úÉ SÉ®úhÉ "Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ' xÉÉ¨É °Éä VÉÉxÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* CªÉÉåÊEò <°É ªÉÖMÉ EòÒ °ÉÉÊ½þiªÉ SÉäiÉxÉÉ Eäò ¨ÉÚ±É ¨Éå ¸ÉÒ ¨É½þÉ´ÉÒ®ú |É°ÉÉnù Êuù´ÉänùÒ EòÒ |Éä®úhÉ +Éè®ú |ÉÉäi°ÉÉ½þxÉ ½èþ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ EòÒ EòÉ´ªÉMÉiÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉå +Éè®ú {É®ÆÚ{É®úÉ+Éå EòÉ ½þÒ Ê´ÉEòÉ°É <°É ªÉÖMÉ ¨Éå ½Öþ+É* {ÉÚ´ÉÇ´ÉiÉÔ {É®ÆÚ{É®úÉ °Éä ªÉ½þ nùÉä ¤ÉÉiÉÉå ¨Éå Ê¦ÉxxÉ ½èþ – BEò iÉÉä xÉäiÉÞi´É ¨Éå +Éè®ú nÖù°É®úÒ, ®úSÉxÉÉ EòÒ ¶Éè±ÉÒ +Éè®ú EòÉ´ªÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ¨Éå ¨ÉÖHòEò ¶Éè±ÉÒ EòÒ |É¨ÉÖJÉiÉÉ lÉÒ, iÉÉä Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå |É¤ÉxvÉÉi¨ÉEòiÉÉ EòÒ |ÉvÉÉxÉiÉÉ ®ú½þÒ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ ¨Éå EòÉ´ªÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ Eäò °ü{É ¨Éå ¥ÉVÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ |ÉªÉÉäMÉ ½þÉäiÉÉ lÉÉ, ±ÉäÊEòxÉ Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå JÉb÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ Eäò °ü{É ¨Éå |ÉÊiÉÎ¹`öiÉ ½Öþ<Ç* b÷É. MÉhÉ{ÉÊiÉ SÉxpù MÉÖ{iÉ EòÒ ®úÉªÉ ¨Éå, ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ +Éè®ú Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ nùÉäxÉÉå ¨Éå Eäò´É±É EòÉ´ªÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ +Éè®ú EòÉ´ªÉ {ÉrùiÉÒ ¨Éå ½þÒ +xnù®ú ½èþ* nùÉäxÉÉå Eäò

oùÎ¹]õEòÉähÉ +Éè®ú ±ÉlªÉ ¨Éå +xnù®ú xÉ½þÓ* <ºÉÊ±ÉB =x½þÉåxÉä Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ EòÉä "+Énù¶ÉÇ´ÉÉnùÒ |É¤ÉxvÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ' Eò½þEò®ú {ÉÖEòÉ®úÉ ½èþ*

2. Êuù´ÉänùÒªÉÖMÉ Eäò EòÉ´ªÉ EòÒ ¨ÉÖJªÉ {É´ÉÞÊiÉªÉÉÄ CªÉÉ-CªÉÉ ½èþ?

Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉä ¸ÉÞÆMÉÊ®úEòiÉÉ ºÉä ®úÉÎ¹]ÅõªÉiÉÉ, VÉb÷iÉÉ ºÉä |ÉMÉÊiÉ iÉlÉÉ °üÊgø ºÉä º´ÉSUôxnùiÉÉ EòÒ +Éè®ú =x¨ÉÖJÉ Eò®úxÉä EòÉ ¸ÉäªÉ Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ EòÉä |ÉÉ{iÉ ½èþ* <ºÉ ªÉÖMÉ EòÒ EòÉ´ªÉMÉiÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ ÊxÉ¨xÉÉÆÊEòiÉ ½è þ:

®úÉ¹]ÅõÒõªÉiÉÉ : ®úÉVÉxÉèÊiÉEò SÉäiÉxÉÉ ¨Éå ´ÉÞÊnÂùvÉ iÉlÉÉ ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò {ÉÖxÉ¯ûilÉÉxÉ EòÒ |É¤É±É |É´ÉÞÊkÉ Eäò EòÉ®úhÉ ®úÉÎ¹]ÅõªÉiÉÉ +É±ÉÉäSªÉ ªÉÖMÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉ |É´ÉÞÊkÉ ®ú½þÒ ½èþ* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò |ÉÉªÉ: ºÉ¨ÉºiÉ EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå ®úÉÎ¹]ÅõªÉiÉÉ EòÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ +Ê¦É´ªÉÊEòiÉ |ÉnùÉxÉ EòÒ ½èþ* <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò EòÊ´ÉªÉÉå xÉä VÉxÉiÉÉ EòÉä ºÉ¨ÉZÉÉªÉÉ ÊEò {É®úÉvÉÒxÉiÉÉ ¨ÉÞiªÉÖ ºÉä ¦ÉÒ ¦ÉªÉÆEò®ú ½èþ* näù¶É EòÒ +ÉìlÉEò nÖùnÇù¶ÉÉ, ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò EÖò°üÊiÉªÉÉå, EÖò|ÉlÉÉ+Éå +Éè®ú vÉÉÌ¨ÉEò +ÆvÉÊ´É•ÉÉºÉÉå BÆ´É §É¹]õÉSÉÉ®ú EòÉ Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉÒxÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä JÉÖ±ÉEò®ú Ê´É®úÉävÉ ÊEòªÉÉ*

¨ÉÉxÉ´ÉiÉÉ´ÉÉnùÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ: Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ºÉä {É½þ±Éä ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò Eäòxpù ¨Éå <Ç¶´É®ú, <Ç¶´É®úÉ´ÉiÉÉ®ú ªÉÉ Ê´ÉÊ¶É¹]õ ´ªÉÊHò (®úÉVÉÉ, ºÉÉ¨ÉxiÉ, ªÉÉänÂùvÉÉ +ÉÊnù)

½þÒ ½þÉäiÉä lÉä, +É±ÉÉäSªÉ ªÉÖMÉ ¨Éå {É½þ±ÉÒ ¤ÉÉ®ú +É¨É +Énù¨ÉÒ EòÉä ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ Eäòxpù ¤ÉxÉÉªÉÉ MÉªÉÉ* =ºÉEäò ºÉÖJÉ-nÖùJÉ +Éè®ú VÉÒ´ÉxÉ {ÉÊ®úÎºlÉÊiÉªÉÉå EòÉ º´ÉÉ¦ÉÉÊ´ÉEò ÊSÉjÉhÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ* EòÊ´ÉªÉÉå xÉä =xÉEòÒ nùÒxÉ-½þÒxÉ Îºl ÉÊiÉ Eäò |ÉÊiÉ +{ÉxÉÒ ºÉ½þÉxÉÖ¦ÉÚÊiÉ ÊnùJÉÉ<Ç*

xÉèÊiÉEò ¨ÉÚ±ªÉ BÆ´É +Énù¶ÉÇ:<ºÉ ªÉÖMÉ EòÉ ºÉÉÊ½þiªÉ +Énù¶ÉÇ´ÉÉÊnùiÉÉ ºÉä ªÉÖHò ½èþ +Éè®ú <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò EòÊ´ÉªÉÉå xÉä xÉèÊiÉEò ¨ÉÚ±ªÉÉå EòÉä ¦ÉÒ ¤É½ÖþiÉ ¨É½þi´É ÊnùªÉÉ ½èþ*

´ÉèÊ´ÉvªÉ¨ÉªÉ Ê´É¹ÉªÉ SÉªÉxÉ - Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ ¨Éå ´ÉhªÉÇ Ê´É¹ÉªÉ EòÉ +nÂù¦ÉÖiÉ Ê´ÉºiÉÉ®ú ½Öþ+É* +xÉäEò xÉÚiÉxÉ Ê´É¹ÉªÉÉå {É®ú EòÉ´ªÉ-ºÉÞVÉxÉ ½Öþ+É* +ÉSÉÉªÉÇ Êuù´ÉänùÒVÉÒ xÉä "EòÊ´É-EòiÉÇ´ªÉ' ÊxÉ¤ÉxvÉ ¨Éå Ê±ÉJÉÉ lÉÉ ""SÉÓ]õÒ ºÉä ±ÉäEò®ú ½þÉlÉÒ {ÉªÉÇxiÉ {É¶ÉÖ, Ê¦ÉlÉÖEò ºÉä ±ÉäEò®ú ®úÉVÉÉ {ÉªÉÇxiÉ ¨ÉxÉÖ¹ªÉ, Ê¤ÉxnÖù ºÉä ±ÉäEò®ú ºÉ¨ÉÖÞù {ÉlÉÇxiÉ VÉxÉ, +xÉxiÉ {ÉÞ¶´ÉÒ, +xÉxiÉ {É´ÉÇiÉ-ºÉ¦ÉÒ {É®ú EòÊ´ÉiÉÉ ½þÉä ºÉEòiÉÒ ½èþ*" {ÉÊ®úhÉÉ¨É& VÉÒ´ÉxÉ +Éè®ú VÉMÉiÉ Eäò ºÉ¦ÉÒ où¶ªÉ +Éè®ú {ÉnùÉlÉÇ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò Ê´É¹ÉªÉ ¤ÉxÉÉxÉä ±ÉMÉä* |ÉEÞòÊiÉ ¦ÉÒ º´ÉiÉÆxjÉ °ü{É ¨Éå EòÉ´ªÉ EòÉ Ê´É¹ÉªÉ ¤ÉxÉÒ*

½þÉºªÉ-´ªÉÆMªÉ EòÉ´ªÉ: Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ iÉEò +ÉiÉä-+ÉiÉä ºÉÆ¨{ÉÚhÉÇ näù¶É Eäò

´ÉÉiÉÉ´É®úhÉ ¨Éå Eò<Ç |ÉEòÉ®ú Eäò {ÉÊ®ú´ÉiÉÇxÉ +ÉB* <ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå ½þÉºªÉ–´ªÉÆMªÉ EòÒ Ê´É¹ÉªÉ´ÉºiÉÖ +ÆOÉäWÉÒ EòÒ EÚò]õxÉÒÊiÉ, nù¨ÉxÉxÉÒÊiÉ iÉlÉÉ ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉ¨ÉÉVÉ ¨Éå ´ªÉÉ{iÉ EÖò®úÒÊiÉªÉÉÄ, vÉ¨ÉÇ Eäò xÉÉ¨É {É®ú ½þÉäxÉä EòÉ±Éä +ÉiªÉÉSÉÉ®ú, Ê´Énäù¶ÉÒ ºÉ¦ªÉiÉÉ EòÉ +xvÉÉxÉÖEò®úhÉ +ÉÊnù ½éþ* ¤ÉÉ±É¨ÉÖEÖòxnù MÉÖ{iÉ <ºÉ ªÉÖMÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ ´ªÉÆMªÉEòÉ®ú ½èþ*

´ÉèÊ´ÉvªÉ¨ÉªÉ EòÉ´ªÉ – °ü{ÉÉå EòÉ |ÉªÉÉäMÉ:<ºÉ ªÉÖMÉ ¨Éå EòÉ´ªÉ¦ÉÉ¹ÉÉ Eäò °ü{É ¨Éå ¥ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ ºlÉÉxÉ JÉþ÷Ò¤ÉÉä±ÉÒ EòÉä Ê¨É±ÉÉ* ¦ÉÉ®úiÉäxnÖù ªÉÖMÉ Eäò MÉt ¨Éå ´ÉiÉÇxÉÒ BÆ´É |ÉªÉÉäMÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä VÉÉä +xÉäEò°ü{ÉiÉÉ lÉÒ, ´É½þ +ÉSÉÉªÉÇ ¨É½þÉ´ÉÒ®ú |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ VÉÒ Eäò ºÉi|ÉªÉÉºÉÉå ºÉä ¤É½ÖþiÉ ½þnù iÉEò ºÉÖvÉ®ú MÉ<Ç*

vÉxnù–´ÉèÊ´ÉvªÉ: Ê´É´ÉäSªÉ ªÉÖMÉ ¨Éå nùÉä½þÉ, EòÊ´ÉiÉÉ, ºÉ´ÉèªÉ Eäò ºÉÉlÉ–ºÉÉlÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ®úÉä±ÉÉ, Uô{{ÉªÉ, EÞò¹hÉÊxÉªÉÉ, ºÉÉ®ú, º®úºÉÒ, MÉÒÊiÉEòÉ, ½þÊ®úMÉÒÊiÉEòÉ, ±ÉÉ´ÉxÉÒ +ÉÊnù UôxnùÉå EòÉ |ÉSÉÖ®ú ¨ÉÉjÉÉ ¨Éå |ÉªÉÉäMÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

3. Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´É +Éè®ú ®úSÉxÉÉBÄCªÉÉ–CªÉÉ ½èþ?

xÉÉlÉÖ®úÉ¨É ¶¨ÉÇ ¶ÉÆEò®ú: ºÉ®úº´ÉiÉÒ {ÉÊjÉEòÉ ¨Éå ¦ÉÒ ¨ÉÖJªÉ EòÊ´É ¤ÉxÉä* "+xÉÖ®úÉMÉ®úxxÉ', "¶ÉÆEò®ú–ºÉ®úÉäVÉ'

iÉlÉÉ "¶ÉÆEò®ú–ºÉ´ÉÇº´É' <xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ EòÉ´ªÉ ®úSÉxÉÉBå ½èÞ*

¸ÉÒvÉ®ú {ÉÉ`öEò: ªÉä Ê½þxnùÒ Eäò ºÉÉlÉ ºÉÆºÉEÞòiÉ BÆ´É +ÆOÉÆWÉÒ Eäò ¦ÉÒ YÉÉiÉÉ lÉä* |ÉÉEÞòÊiÉEò ºÉÖ¹É¨ÉÉ ºÉä ¨ÉÖMvÉ ½þÉäEò®ú =x½þÉåxÉä ºÉÖ¨ÉxÉÉä½þ®ú EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ ºÉÞVÉxÉ ÊEòªÉÉ* ªÉä ¥ÉVÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ Eäò ºÉÉlÉ JÉªÉÒ ¤ÉÉä±ÉÒ Eäò ¦ÉÒ ºÉ¨ÉlÉÇ EòÊ´É ½èÞ* ""Eò¹ÉÂ¨ÉÒ®ú ºÉÖ¹É¨ÉÉ', "näù½þ®úÉnÖùxÉ', "¦ÉÉ®úiÉMÉÒiÉ' +ÉÊnù <xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½èÞ*

¨É½þÉ´ÉÒ®ú |ÉºÉÉnù Êuù´ÉänùÒ:<xÉEòÉ VÉx¨É ÊVÉ±ÉÉ ®úÉªÉ´É®äú±ÉÒ Eäò nùÉè±ÉxÉ{ÉÚ®ú xÉÉ¨ÉEò MÉÉÄ´É ¨Éå ½Öþ+É lÉÉ* <x½þÉåxÉä ºÉÆºÉÞòiÉ, MÉÖVÉ®úÉiÉÒ, ¨É®úÉ`öÒ +Éè®ú +ÆOÉäWÉÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ+Éå EòÉ +vªÉªÉxÉ ÊEòªÉÉ* ªÉä BEò ºÉ¿ò±É EòÊ´É, +É±ÉÉäSÉEò, ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®ú, +xÉÖ´ÉÉnùEò BÆ´É º¨É{ÉÉnùEòÉSÉÉªÉÇ lÉä* "EòÉ´ªÉ ¨ÉÆVÉÖ¹ÉÉ', "ºÉÖ¨ÉxÉ',"EòÉxªÉÉÞò¤ÉÂVÉ–+¤É±ÉÉ–Ê´É±ÉÉ{É' +ÉÊnù =xÉEäò ¨ÉÉèÊ±ÉEò {ÉnÂùªÉ–EòÉ´ªÉ ½èÞ*

+ªÉÉävªÉÉËºÉ½þ ={ÉÉvªÉÉªÉ ½þÊ®ú+ÉèvÉ: ½þÊ®ú+ÉèvÉ VÉÒ EòÊ´É ½þÉäxÉä Eäò ºÉÉlÉ–ºÉÉlÉ BEò ºÉ¿ò±É ={ÉxªÉÉºÉEòÉ®ú, +É±ÉÉäSÉEò BÆ´É <ÊiÉ½þÉºÉEòÉ®ú ¦ÉÒ lÉä* <xÉEäò EòÉ´ªÉ–OÉxlÉÉå ¨Éå "Ê|ÉªÉ|É´ÉÉºÉ', "{ÉvªÉÉ|ÉºÉÚxÉ', "¤ÉÉä±ÉSÉÉªÉä', "SÉÖ¦ÉiÉä SÉÉè{Énäù',"SÉÉäJÉä SÉÉè{Énù' |É¨ÉÖJÉ ½èÞ*

MÉªÉÉ|ÉºÉÉnù ¶ÉÖC±É ºÉxÉä½þÒ:<xÉEòÉ VÉx¨É =xxÉÉ´É ÊVÉ±Éä Eäò ½þc÷½þÉ OÉÉ¨É ¨Éå ½Öþ+É lÉÉ* <xÉEòÉ Ê¹½þxnùÒ - =nÖÇù nùÉäxÉÉå {É®ú ºÉ¨ÉÉxÉÉÉÊvÉEòÉ®ú lÉÉ +Éè®ú nùÉäxÉÉå ¦ÉÉ¹ÉÉ+Éå ¨Éå Ê±ÉJÉÉiÉä lÉä* "EÞò¹ÉEò-GòxnùxÉ', "|Éä¨É {ÉSÉÒºÉÒ', "®úÉ¹]ÅõÒªÉ ´ÉÒhÉÉ', "ÊjÉ¶ÉÖ±É-xÉÆ®ÆúMÉ' +ÉÊnù =xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½èþ*

¨ÉèlÉ±ÉÒ¶É®úhÉ MÉÖ{iÉ:ªÉä Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ Eäò ºÉ´ÉÉÇÊvÉEò ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ EòÊ´É lÉä* +ÉSÉÉªÉÇ Êuù´ÉänùÒ VÉÒ EòÒ ºxÉä½þ-´ÉiºÉ±É UôÉªÉÉ ¨Éå <xÉEòÒ EòÉ´ªÉ-|ÉÊiÉ¦ÉÉ {É±±ÉÊ´ÉiÉ BÆ´É {ÉÖÎ¹{ÉiÉ ½Öþ<Ç* <xÉEòÒ EòÉ´ªÉ ®úSÉxÉÉ+Éå ¨Éå VÉªÉpùlÉ-¤ÉvÉ, "¦ÉÉ®úiÉ-¦ÉÉ®úiÉÒ', "{ÉÆSÉ´É]õÒ', "ºÉÉEäòiÉ', "ªÉ¶ÉÉävÉ®úÉ', "nÂù´ÉÉ{É®ú', ""VÉªÉ¦ÉÉ®úiÉ" +ÉÊnù Ê´É¶Éä¹É°ü{É ºÉä =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ*

®úÉ¨ÉxÉ®äú¶É ÊjÉ{ÉÉ`öÒ: ¤ÉSÉ{ÉxÉ ºÉä ½þÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò |ÉÊiÉ <xÉEòÒ ¯ûÊSÉ lÉÒ* Êuù´ÉänùÒ VÉÒ Eäò |É¦ÉÉ´É ºÉä JÉb÷Ò÷¤ÉÉ±ÉÒ ¨Éå Ê±ÉJÉxÉä ±ÉMÉä* "Ê¨É±ÉxÉ', "{ÉÊlÉEò', "¨ÉÉxÉºÉÒ' +Éè®ú "º´É{xÉ' <xÉEäò |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ EòÉ´ªÉ-OÉxlÉ ½èþ*

UNIT - 24

UôÉªÉÉ´ÉÉnù ªÉÖMÉ (1918-1938)

1. UôÉªÉÉ´ÉÉnù xÉÉ¨ÉEò®úhÉ EòÒ ºÉÉlÉÇEòiÉÉ CªÉÉ ½èþ?

Ê½þxnùÒ EòÉ´ªÉ xÉä Êuù´ÉänùÒ ªÉÖMÉ Eäò ¤ÉÉnù BEò Bäº Éä ªÉÖMÉ ¨Éå |É´Éä¶É ÊEòªÉÉ VÉÉä ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä +iªÉÆiÉ |ÉÉèfø +Éè®ú ºÉÆ{ÉxxÉ ½èþ* ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ ¨Éå ªÉ½þ ªÉÉè´ÉxÉ-EòÉ±É "UôÉªÉÉ´ÉÉnù-ªÉÖMÉ' Eäò xÉÉ¨É ºÉä |ÉÊiÉÎ¹`öiÉ ½Öþ+É ½èþ* ºÉ¤ÉºÉä {É½þ±Éä ¸ÉÒ. ¨ÉÖEÖò]õvÉ®ú {ÉÉhbä÷ªÉ xÉä <ºÉ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ EäòÊ±ÉªÉä "UôÉªÉÉ´ÉÉnù' ¶É¤nù |ÉªÉÖHò ÊEòªÉÉ lÉÉ* =x½þÉåxÉä =ºÉ EòÉ´ªÉ EòÒ ºÉÚl¨ÉiÉÉ +Éè®ú +º{É¹`öiÉÉ EòÒ +Éè®ú vªÉÉxÉ Ênù±ÉÉiÉä ½ÖþB, ´ªÉMªÉÉi¨ÉEò °ü{É ¨Éå – "UôÉªÉÉ' ¶É¤nù ®úJÉÉ lÉÉ, ¤Énù ¨Éå "UôÉªÉÉ´ÉÉnù' xÉÉ¨É º´ÉÒEÞòiÉ ½þÉä MÉªÉÉ* ¤ÉÉnùÉ ¨Éå UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä <ºÉ Ê´É¶Éä¹ÉhÉ EòÉä {ªÉÉ®ú ºÉä º´ÉÒEòÉ®ú Eò®úEäò =ºÉEòÒ ´ªÉÉJªÉÉ EòÒ ½èþ* VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnùVÉÒ xÉä Eò½þÉ – "UôÉªÉÉ ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ oùÎ¹]õ ºÉä +xÉÖ¦ÉÚÊiÉ ´É +ÉÊ¦É´ªÉÊHò EòÒ ¦ÉÆÊMÉ¨ÉÉ {É®ú ÊxÉ¦É Ç®ú Eò®úiÉÒ ½èþ* v´ÉxªÉÉi¨ÉEòiÉÉ, ±ÉÉlÉÊhÉEòiÉÉ, ºÉÉèxnùªÉÇ¨ÉªÉ |ÉiÉÒEòÊ´ÉvÉÉxÉ iÉlÉÉ ={ÉSÉÉ®ú ´ÉGòiÉ Eäò ºÉÉlÉ º´ÉÉxÉÖ¦ÉÚÊiÉ EòÒ Ê´É¦ÉÚÊiÉ UôÉªÉÉ´ÉÉnù EòÒ Ê´É¶Éä¹ÉiÉÉBÄ ½èþ*

b÷É. xÉMÉäxpù UôÉªÉÉ´ÉÉnù EòÉä BEò +Éè®ú ""ºlÉÚ±É Eäò |ÉÊiÉ ºÉÚl¨É EòÉ Ê´ÉpùÉä½þ" ¨ÉÉxÉÉ ½èþ* b÷É. MÉhÉ{ÉiÉÒ SÉxpù MÉÖ{iÉ EòÒ ®úÉªÉ ¨Éå, ªÉÊnù ½þ¨É

UôÉªÉÉ´ÉÉnù EòÒ ¨ÉÚ±É SÉäiÉxÉÉ EòÉ Ê´É¶±Éä¹ÉhÉ Eò®åú iÉÉä {ÉÉªÉåMÉå EòÒ <ºÉ¨Éå ´Éä ºÉÉ®úÒ ¨ÉxÉÉä´ÉÞÊkÉªÉÉÄ Ê´ÉnÂùªÉ¨ÉÉxÉ ½èþ ÊVÉx½åþ {ÉÉ¶SÉÉiªÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå "®úÉä¨ÉÉÊx]ÊºÉV¨É' ªÉÉ º´ÉSUôxnùiÉÉ´ÉÉnù EòÒ Ê´É¶Éä¹É{ÉiÉÉ+Éå Eäò °ü{É ¨Éå º´ÉÒEòÉ®ú ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* =x½þÉåxÉä "º´ÉUôxnù´ÉÉnù' xÉÉ¨É +ÊvÉEò ={ÉªÉÖHò ¨ÉÉxÉÉ ½èþ*

2. UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ÊEò ¨ÉÖJªÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ CªÉÉ-CªÉÉ ½èþ?

Ê½þxnùÒ EòÒ +ÉvÉÖÊxÉEò EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå +Énù¶ÉÇ´ÉÉnùÒ |É¤ÉxvÉ EòÉ´ªÉ {É®ÆÚ{É®úÉ Eäò ºÉ¨ÉÉxÉÉxiÉ®ú, =ºÉEäò =nÂ¦É´É Eäò nùºÉ-¤ÉÉ®ú½þ ´É¹ÉÇ ¤ÉÉnù UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉ-{É®ÆÚ{É®úÉ Ê´ÉEòÊºÉiÉ ½Öþ<Ç* ¦ÉÉ´É-{ÉlÉ iÉlÉÉ Eò±ÉÉ {ÉlÉ nùÉäxÉÉå lÉäjÉÉå EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä =ºÉEòÉ +{ÉxÉÉ BEò oùÎ¹]õEòÉähÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ* UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉ Eäò ¨ÉÚ±É Ê´É¹ÉªÉ Eäò °ü{É ¨Éå |Éä¨É +Éè®ú ºÉÉèxnùªÉÇ EòÒ +Ê¦É´ªÉÆVÉxÉÉ EòÉä {É½þ±ÉÉ ºlÉÉxÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ*

ºÉÉènùªÉÇ: UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä BEò +Éà®ú xÉÉ®úÒ-ºÉÉèxnùªÉÇ EòÉ ºÉÚl¨É ´ÉhÉÇxÉ ÊEòªÉÉ ½èþ iÉÉä nÖùºÉ®úÒ +Éà®ú =x½þÉåxÉä |ÉEÞòÊiÉ-ºÉÉénùªÉÇ EòÉ ¦ÉÒ ¨ÉxÉÉä½þ®ú ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä xÉÉ®úÒ EòÉä |ÉäªÉºÉÒ Eäò °ü{É ¨Éå OÉ½þhÉ ÊEòªÉÉ VÉÉä º´ÉºlÉ ¸ÉÆMÉÉ®ú Eäò

¨ÉvÉÖ®ú ¦ÉÉ´ÉÉå ºÉä ¦É®úÒ ½ÖÞ<Ç ½èÞ +Éè®ú ºÉÉlÉ ½þÒ º´ÉMÉÔªÉ Ê´É¦ÉÚÊiÉªÉÉå ºÉä +É¦ÉÚÊ¹ÉiÉ ¦ÉÒ ½èÞ* <xÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä xÉÉ®úÒ Eäò ºÉÉèxnùªÉÇ ÊSÉjÉhÉ ¨Éå ºlÉÚ±ÉiÉÉ, +¶±ÉÒ±ÉiÉÉ +Éè®ú xÉMxÉiÉÉ EòÒ +{ÉälÉÉ ºÉÚl¨ÉiÉÉ Eäò ºlÉÉxÉ ÊnùªÉÉ ½èÞ* |ÉEÞòÊiÉ Eäò ºÉÉèxnùªÉÇ EòÉ ÊSÉjÉhÉ Eò®úxÉä ¨Éå UôÉªÉÉ´ÉÉÊnùªÉÉå xÉä VÉÉä ºÉ¦ò±ÉiÉÉ {ÉÉªÉÒ ½èÞ, ´É½þ =xªÉ ÊEòºÉÒ ¦ÉÒ vÉÉ®úÉ Eäò EòÊ´ÉªÉÉå EòÉä xÉ½þÓ Ê¨É±ÉÒ ½èÞ* ´Éä |ÉEÞòÊiÉ Eäò ºÉÉèxnùªÉÇ ¨Éå xÉÉ®úÒ EòÉ ºÉÉèxnùªÉÇ näùJÉiÉä ½èÞ* "ÊxÉ®úÉ±ÉÉ' EòÒ "VÉÚ½þÒ EòÒ Eònr ' EòÒ EòªÉÒ xÉÉ¨ÉEò EòÊ´ÉiÉÉ ªÉrùÊ{É Ê´ÉVÉxÉ ¨Éå ºÉÉäxÉä´ÉÉ±ÉÒ BEò VÉÖ½þÒ EòÒ Eò±ÉÒ EòÉ ´ÉhÉÇxÉ ½èÞ, iÉÉä ¦ÉÒ =ºÉ¨Éå +ÉÊnù ºÉä +ÆiÉ iÉEò {ÉÖ¯û¹É +Éè®ú xÉÉ®úÒ Eäò ¨ÉnùÉäx¨ÉkÉ |Éä¨É EòÉ ÊSÉjÉhÉ ½þÒ ½èÞ*

|Éä¨É: UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä |Éä¨É EòÉ º´ÉSUôxnù, ºÉÖxnù®ú, xÉªÉÉ °ü{É |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ* =xÉEòÉ |Éä¨É ÊEòºÉÒ |ÉEòÉ®ú EòÒ °üÊfø, ¨ÉªÉÉÇnùÉ ªÉÉ ÊxÉªÉ¨É Eäò ¤ÉxvÉxÉÉå ¨Éå ¤ÉÆvÉÉ xÉ½þÓ ½èÞ* UôÉªÉÉ´ÉÉÊnùªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ +Éi¨ÉÉÊ¦É´ªÉÊHò ºÉä ¦É®úÒ ½èÞ* |Éä¨É Eäò ºÉÆªÉÉäMÉ–{ÉlÉ Eäò +ÉxÉxnù +Éè®ú Ê´É®ú½þ–{ÉlÉ Eäò nÖùJÉ EòÉä =x½þÉåxÉä +{ÉxÉÒ ½þÒ +xÉÖ¦ÉÚÊiÉªÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú +ÉÊ¦É´ªÉHò ÊEòªÉÉ* UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå Eäò |Éä¨É ÊSÉjÉhÉ +iªÉÆxiÉ ºÉÚl¨É

½èÞ* ¸ÉÞÆMÉÉ®ú Eäò ºlÉÚ±É ÊEòªÉÉ–´ªÉÉ{ÉÉ®úÉå EòÒ +{ÉälÉÉ ºÉÚl¨É ¨ÉÉxÉÊºÉEò Ênù¶ÉÉ+Éå Eäò ÊSÉjÉhÉ EòÉä =x½þÉåxÉä ¨É½þi´É ÊnùªÉÉ ½èÞ*

Ê´ÉpùÉä½Þ: UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå º´ÉSUôxnùiÉÉ EòÒ |É´ÉÞÊkÉ +Éè®ú Ê´ÉpùÉä½Þ EòÉ iÉi´É ÊnùJÉÉªÉÒ {ÉÞ÷iÉä ½èÞ* <xÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä iÉiEòÉ±ÉÒxÉ ºÉ¨ÉÉVÉ +Éè®ú ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò lÉäjÉ EòÒ ¯ûÊføùªÉÉå EòÉ Ê´É®úÉävÉ ÊEòªÉÉ ½èÞ* ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ¯ûÊføªÉÉå Eäò |ÉÊiÉ Ê´ÉpùÉä½Þ |ÉEò]õ Eò®úxÉä ¨Éå ºÉ¤ÉºÉä +ÊvÉEò ºÉ¿ò±ÉiÉÉ ÊxÉ®úÉ±ÉÉ EòÉä Ê¨É±ÉÒ ½èÞ* ºÉÉÊ½þiªÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå Uôxnù, +±ÉÆEòÉ®ú, ¶Éè±ÉÒ +ÉÊnù ¨Éå UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä xÉªÉä xÉªÉä |ÉªÉÉäMÉ ÊEòªÉä +Éè®ú ºÉÉÊ½þiªÉ EòÒ =xÉ ¯ûÊføªÉÉå +Éè®ú {É®Æú{É®úÉ+Éå EòÉä iÉÉäb÷ ÊnùªÉÉ* ¨ÉÖHò Uôxnù <ºÉ oùÎ¹]õ ºÉä ºÉ¤ÉºÉä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èÞ*

®úÉ¹]ÅõÒ õªÉSÉäiÉxÉÉ: UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä =ºÉ ªÉÖMÉ EòÒ ®úÉ¹]ÅõÒªÉ SÉäiÉxÉÉ EòÒ +ÉÊ¦É´ªÉÊEòiÉ EòÒ ½èÞ* iÉ±EòÉÊ±ÉxÉ ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ VÉÒ´ÉxÉ ¨Éå VÉÉä ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò, ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò, vÉÉì¨ÉEò, +Éè®ú ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò xÉ´ÉÉäilÉÉxÉ +Éè®ú VÉÉMÉ®úhÉ ½þÉä ®ú½þÉ lÉÉ, =ºÉEòÉ |É¦ÉÉ´É UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå oùÎ¹]õMÉiÉ ½Öþ+É lÉÉ*

Eò±{ÉxÉÉ: UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä, Ê´É¶Éä¹ÉEòÉ®ú {ÉÆiÉVÉÒ xÉä =x¨ÉÖEiÉ Eò±{ÉxÉÉ EòÉä Ê´É¶Éä¹É ºlÉÉxÉ näùJÉ®ú EòÊ´ÉiÉÉ Ê±ÉJÉÒ ½èþþ* ´Éä Eò½þÒ Eò½þÒ vÉ®iÉÒ +Éè®ú ¨ÉÉxÉ´É-VÉÒ´ÉxÉ EòÒ Eò`öÉä®ú ´ÉÉºiÉÊ´ÉEòiÉÉ ºÉä nÖù®ú ½þÉä VÉÉiÉä ½èþ*

¶Éè±ÉÒMÉiÉ Ê´É¶Éä¹ÉiÉÉBÄ: UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå Eäò º´ÉSUôxnù oùÎ¹]õEòÉähÉ EòÉ {ÉÊ®úSÉªÉ Eäò´É±É =xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò ¦ÉÉ´É-{ÉlÉ ¨Éå ½þÒ xÉ½þÓ, ¤ÉÎ±Eò ¶Éè±ÉÒ ªÉÉ Eò±ÉÉ{ÉlÉ ¨Éå ¦ÉÒ Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ* ¨ÉÖHò Uôxnù EòÉä +{ÉxÉÉiÉä ½ÖþB =x½þÉåxÉä MÉÒÊiÉ-¶Éè±ÉÒ ¨Éå EòÉ´ªÉ Ê±ÉJÉÉ ÊVÉºÉ¨Éå BEò xÉ´ÉÒxÉ ºÉÉèxnùªÉÇ |ÉÉ{iÉ ½Öþ+É* +{ÉxÉÒ +Ê¦É´ªÉÊHò EòÉä =x½þÉåxÉä |ÉÊiÉEòÉå +Éè®ú Ë¤É¤ÉÉå Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ ¨ÉÉì¨ÉEò ¤ÉxÉÉªÉÉ* ±ÉÉlÉÉÊhÉEòiÉÉ, ÊSÉjÉÉi¨ÉEòiÉÉ xÉÉnù ºÉÉèxnùªÉÇ +ÉÊnù xÉä =xÉEòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÒ ¶ÉÊHò ¤ÉgøÉªÉÒ*

3. UôÉªÉÉ´ÉÉnù Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´É +Éè®ú ®úSÉxÉÉBÄ CªÉÉ-CªÉÉ ½èþ?

VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnù (1889-1937)

UôÉªÉÉ´ÉÉnù Eäò |ÉEòiÉÇEò VÉªÉ¶ÉÆEò®ú |ÉºÉÉnù EòÉ |ÉlÉ¨É EòÊ´ÉiÉÉ ºÉÆOÉ½þ, "EòÉxÉxÉ EÖòºÉÖ¨É' ½èþ ÊVÉºÉ¨Éå +xÉÖ¦ÉÚÊiÉ +Éè®ú +Ê¦É´ªÉÊHò EòÉ xÉªÉÉ °ü{É Ê¨É±ÉiÉÉ ½èþ* "ZÉ®úxÉÉ' ¨Éå +ÉvÉÖÊxÉEò EòÉ´ªÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ +ÉÊvÉEò ¨ÉÖJÉ®ú ½Öþ<Ç ½èþ* "+ÉÄºÉÖ' |ÉºÉÉnù EòÒ Ê´ÉÊ¶É¹]õ ®úSÉxÉÉ ½èþ

ÊVɺÉ¨Éå EòÊ´É Eäò ¾þnùªÉ EòÒ vÉxÉÒ¦ÉÚiÉ {ÉÒb÷É +ÉÄºÉÖ+Éå Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä ´ªÉHò ½Öþ<Ç ½èþ* MÉÒiÉÉEò±ÉÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä =iEÞò¹]õ "±É½þ®ú' |ɺÉÉnù EòÒ ºÉ´ÉÔiÉ¨É EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ ºÉÆOÉ½þ ½èþ*

|ɺÉÉnù EòÒ +ÎxiÉ¨É |ÉÉègøùiÉ¨É EÞòÊiÉ "EòɨÉÉªÉxÉÒ' ½èþ* <ºÉ¨Éå +ÉÊnù ¨ÉÉxÉ´É ¨ÉxÉÖ EòÒ EòlÉÉ Eäò nÂù´ÉÉ®úÉ =nùÉiÉ´ÉÉnùÒ ºÉÉ¨ÉÆVɺªÉ{ÉÚhÉÇ +ÉxÉxnù´ÉÉnù EòÒ |ÉÊiÉ¹`öÉ EòÒ MÉ<Ç ½èþ* |ɺÉÉnù Eäò EòÊ´É VÉÒ´ÉxÉ EòÉ |ÉÉ®úÆú¦É "Eò±ÉÉvÉ®ú' ={ÉxÉÉ¨É ºÉä ¥ÉVÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ´ªÉ ®úSÉxÉÉ ºÉä ½Öþ+É lÉÉ*

ºÉÚªÉÇEòÉÆiÉ ÊjÉ{ÉÉ`öÒ ÊxÉ®úÉ±ÉÉ (1897-1961)

ªÉÖMÉÒxÉ ªÉlÉÉlÉÇ Eäò |ÉÊiÉ ÊxÉ®úÉ±ÉÉ º´ÉÉÇÊvÉEò EòÊ´É ½èþ* ´Éä +{ÉxÉä º¨ÉªÉ Eäò ÊVÉiÉxÉä Ê´É´ÉÉnùɺ{Énù EòÊ´É ®ú½äþ, =iÉxÉä ½þÒ Eò±ÉÉxiÉ®ú ¨Éå ÊxÉÌ´É´ÉÉnù +Éè®ú º´ÉÇ¨ÉÉxªÉ ¦ÉÒ ®ú½äþ* +{ÉxÉä GòÉÎxiÉEòÉ®úÒ Ê´ÉSÉÉ®úÉå Eäò EòÉ®úhÉ =x½åþ ºÉnèù´É Ê´É®úÉävÉ +Éè®ú ºÉÆPɹÉÇ EòÉ ºÉɨÉxÉÉ Eò®úxÉÉ {Éb÷É* UôxnùÉå EòÒ ®úÊfø¤ÉnÂùvÉiÉÉ iÉÉäb÷Eò®ú =x½þÉåxÉä ¨ÉÖHò Uôxnù ¨Éå "VÉÚ½þÒ EòÒ EòÊ±É' EòÊ´ÉiÉÉ Ê±ÉÉJÉÒ* =xÉEòÒ |Éä¨É +Ê¦É´ªÉÊHòiÉ +xªÉ UôɪÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ iÉ®ú½þ ½þ´ÉÉ<Ç xɽþÓ ½èþ* ÊxÉ®úÉ±ÉÉ |Éä¨É Ê´ÉpùÉä½þ, ºÉÆPɹÉÇ +Éè®ú GòÉÎxiÉ Eäò EòÊ´É ½èþ* "iÉÖ±ÉºÉÒnùɺÉ', "®úÉ¨É EòÒ ¶ÉÊHò {ÉÚVÉÉ', "º®úÉäVÉ ºÉ¨ÉÞÊiÉ' =xÉEòÒ

+Éì¨ÉSÉÊ®úiÉÉì¨ÉEò EòÉ´ªÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½èþ* "+xÉÉÊ¨ÉEòÉ', "{ÉÊ®ú¨É±É',"MÉÒÊiÉEòÉ' ÊxÉ®úÉ±ÉÉ Eäò +xªÉ EòÊ´ÉiÉÉ ºÉÆOÉ½þ ½èþ*

ºÉÚÊ¨ÉjÉÉxÉxnùxÉ {ÉÆiÉ (1900-1977)

UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå ºÉÖÊ¨ÉjÉÉxÉxnù {ÉÆiÉ EòÒ |ÉÊºÉrù "|ÉEÞòÊiÉ Eäò ºÉÖEÖò¨ÉÉ®ú EòÉä¨É±É EòÊ´É' Eäò °ü{É ¨Éå ½èþ* {ÉÆiÉ xÉä xÉÉ®úÒ, |ÉEÞòÊiÉ, ºÉÉèxnùªÉÇ +Éè®ú VÉÒ´ÉxÉ Eäò |ÉÊiÉ ¨Év¨É¨É´ÉMÉÔªÉ oùÎ¹]õ¤ÉÉävÉ EòÉ {ÉÊ®ú¹EòÉ®ú +{ÉxÉÒ ®úSÉxÉÉ+Éå Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä ÊEòªÉÉ ½èþ – "=SUô´ÉÉºÉ', "OÉÉÎxlÉ', "´ÉÒhÉÉ,' "{É±±É´É',"MÉÖÆVÉxÉ' =xÉEòÒ UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ ªÉÖMÉ EòÒ ®úSÉxÉÉBÄ ½èþ* "Eò±ÉÉ +Éè®ú ¤ÉÚgøÉ SÉÉÄnù', "ÊSÉnù¨¤É®úÉ', +Éè®ú "±ÉÉäEòÉªÉiÉxÉ' UôÉªÉÉ´ÉÉnùÉäkÉ®ú ªÉÖMÉ EòÒ ®úSÉxÉÉBÄ ½èþ* "ÊSÉnÆù¨¤É®úÉ' {É®ú {ÉÆiÉ EòÉä YÉÉxÉ{ÉÒ`ö {ÉÖ®úºEòÉ®ú ¦ÉÒ |ÉnùÉxÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ*

¨É½þÉnäù´ÉÒ ´É¨ÉÉÇ (1907-1987):

¨É½þÉnäù´ÉÒ ´É¨ÉÉÇ EòÉä "+ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ EòÒ ¨ÉÒ®úÉ' Eò½þÉ VÉÉiÉÉ ½èþ* =xÉEäò EòÉ´ªÉ ¨Éå ´ÉänùxÉÉ +Éè®ú nÖù:JÉ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ UôÊ´ÉªÉÉÄ +Ê¦É´ªÉHò ½Öþ<Ç ½èþ* nÖù:JÉ ¨É½þÉnäù´ÉÒ EòÒ EòÉ´ªÉ ºÉÉVÉÇxÉÉ EòÒ ¨ÉÚ±É |Éä®úhÉÉ ½èþ VÉÉä =xÉEäò ¶É¤nùÉå ¨Éå ºÉÉ®äú ºÉÆºÉÉ®ú EòÉä BEòºÉÚjÉ ¨Éå ¤ÉÉÄvÉää

®úJÉxÉä EòÒ lÉ¨ÉiÉÉ ®úJÉiÉÉ ½èÞ* "xÉÒ½þÉ®ú',"®úÊ¶¨É', "xÉÒ®úVÉÉ', "ºÉÉxvªÉMÉÒiÉ' +Éè®ú "nùÒ{ÉÊ¶ÉJÉÉ' –¨É½þÉnäù´ÉÒ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÉ´ªÉ ºÉÆOÉ½þ ½èÞ* "ªÉÉ¨ÉÉ' ¨Éå =xÉEòÒ UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ ªÉÖMÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉ EòÊ´ÉiÉÉBÄ ºÉÆEòÊ±ÉiÉ ½èÞ*

UNIT - 25

|ÉMÉÊiÉ´ÉÉnù

1. |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò =nÂù¦É´É +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ ÊEòºÉ|ÉEòÉ®ú ½ÖÞ+É?

UôÉªÉÉ´ÉÉnù ªÉÖMÉ Eäò ¤ÉÉnù ºÉxÉ 1938 ºÉä 1934 iÉEò Ê½þxnùÒ EòÉ´ªÉ lÉäjÉ ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ªÉlÉÉlÉÇ {É®ú ¤É±É näùxÉä´ÉÉ±ÉÒ BEò BäºÉÒ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½ÖÞ+É, VÉÉä |ÉMÉiÉÒ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ Eäò xÉÉ¨É ºÉä |ÉÊºÉrù ½ÖÞ<Ç* |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ ¨Éå ¦ÉÉèÊiÉEò´ÉÉnùÒ VÉÒ´ÉxÉnù¶ÉÇxÉ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ ºÉ¨ÉÉVÉ´ÉÉnùÒ Ê´ÉSÉÉ®úÉå EòÉä

|É¨ÉÖJÉiÉÉ nùÒ VÉÉiÉÒ ½èÞ* EòÉ±ÉÇ¨ÉÉCºÉÇ Eäò ¦ÉÉèÊiÉEò´ÉÉnùÒ ÊºÉrùÉxiÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú <ºÉ EòÉ´ªÉ EòÉ Ê´ÉEòÉºÉ ½ÖÞ+É* Ê½þxnùÒ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉ Eäò =nÂù¦É´É +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ ¨Éå ®úÉ¹]ÅõÒªÉ +Éè®ú +xiÉ®ÇúúÉ¹]ÅõÒªÉ {ÉÊ®úÎºlÉÊiÉªÉÉÄ ºÉ½þÉªÉEò ½ÖÞ<Ç* ¨ÉÉCºÉÇ Eäò ºÉÉ¨ªÉ´ÉÉnùÒ nù¶ÉÇxÉ EòÉ Ê´É¶´É´ªÉÉ{ÉÒ |É¦ÉÉ´É {Éb÷É lÉÉ* °üºÉ ¨Éå |ÉÊiÉÎ¹]õiÉ ºÉÉ¨ªÉ´ÉÉnù +Éè®ú {ÉÎ¶SÉ¨É Eäò +xªÉ näù¶ÉÉå ¨Éå ¿èò±ÉiÉÉ ½ÖÞ+É ¨ÉÉCºÉÇ´ÉÉnùÒ nù¶ÉÇxÉ ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ¤ÉÖÊrùVÉÒÊ´ÉªÉÉå EäòÊ±ÉB |Éä®úhÉ EòÉ Eäòxpù ¤ÉxÉ ®ú½þÉ lÉÉ* ¦ÉÉ®úiÉ ¨Éå 1935<Ç Eäò +ÉºÉ{ÉÉºÉ ºÉÉ¨ªÉ´ÉÉnùÒ +ÉxnùÉä±ÉxÉ =MÉxÉä ±ÉMÉ lÉÉ* ºÉÉÊ½þiªÉ ¦ÉÒ =ºÉºÉä |É¦ÉÉÊ´ÉiÉ ½ÖÞ+É +Éè®ú |ÉMÉiÉÒ´ÉÉnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉ ¶ÉÖ¯û ½ÖÞ+É* 1936<Ç ¨Éå näù¶É ¨Éå {É½þ±ÉÒ ¤ÉÉ®ú "|ÉMÉÊiÉ¶ÉÒ±É ±ÉäJÉEò ºÉÆÞÉ' EòÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ ½ÖÞ<Ç ÊVÉºÉEòÉ |ÉlÉ¨É ºÉ¨¨Éä±ÉxÉ ±ÉJÉxÉ>ő ¨Éå |Éä¨ÉSÉxnù EòÒ +vªÉlÉiÉÉ ¨Éå ½ÖÞ+É* Ê½þxnùÒ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ =nÂù¦É´É UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå {ÉÆiÉ +Éè®ú ÊxÉ®úÉ±ÉÉ ºÉä ½þÉä SÉÖEòÉ lÉÉ* {ÉÆiÉ EòÒ "VªÉÉäiºÉxÉÉ', "ªÉÖMÉ´ÉÉhÉÒ', iÉlÉÉ ÊxÉ®úÉ±ÉÉ EòÒ "´É½þ iÉÉäb÷iÉÒ {ÉilÉ®ú', "xÉB {ÉkÉä' "EÖòEÖò®ú¨ÉÖkÉÉ' +ÉÊnù EòÊ´ÉiÉÉ+Éå ¨Éå |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ º´É®ú ¨ÉÖJÉÊ®úiÉ ½þÉä =`äÖ*

2. |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ CªÉÉ–CªÉÉ ½èÞ?

|ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉ EòÒ |É¨ÉÖJÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ ÊxÉ¨xÉÊ±ÉÊJÉiÉ ½èÞ–

(1)°üÊgøø–Ê´É®úÉävÉ –|ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ <Ç¶´É®ú EòÉä ºÉÞÎ¹]õ EòiÉÉÇ xÉ½þÓ ¨ÉÉxÉiÉä lÉä* =ºÉä <Ç¶´É®ú EòÒ ºÉkÉÉ, +Éi¨ÉÉ, {É®ú±ÉÉäEò, vÉ¨ÉÇ, º´ÉMÉÇ, xÉ®úEò +ÉÊnù {É®ú Ê´ÉEòÉºÉ xÉ½þÓ ½èÞ* =ºÉEòÒ oùÎ¹]õ ¨Éå ¨ÉÉxÉ´É EòÒ ¨É½þi´ÉÉ ºÉ´ÉÉæ{É®úÒ ½èÞ* =x½åþ +xvÉÊ´É•ÉÉºÉÉå, Ê¨ÉiªÉÉ {É®Æú{É®úÉ+Éå +Éè®ú °üÊgøªÉÉå {É®ú |ÉJÉ®ú |É½þÉ®úEò®xÉä ¨ÉÉxÉ´É EòÉä ¨ÉÉxÉ´É °ü{É ¨Éå näùJÉxÉÉ–+¦ÉÒ¹]õ ½èÞ*

(2)¶ÉÉäÊ¹ÉiÉÉå EòÉ Eò¯ûhÉ MÉÉxÉ – ºÉ¨ÉÉVÉ Eäò ÊxÉ¨ÉÇ¨É ¶ÉÉä¹ÉhÉ ºÉä Ê{ÉºÉxÉä´ÉÉ±Éä ¶ÉÉäÊ¹ÉiÉ ´ÉMÉÉç EòÒ nù¶ÉÉ EòÉ ºÉ½þÉxÉÖ¦ÉÚÊiÉ {ÉÚhÉÇ ÊSÉjÉhÉ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉÊnùªÉÉå xÉä ÊEòªÉÉ ½èÞ* ºÉÉÆºÉÉÊ®úEò ºÉÖJÉÉå ºÉä ´ÉÆÊSÉiÉ ¶ÉÉäÊ¹ÉiÉ ´ÉMÉÇ Eäò VÉÒ´ÉxÉ EòÒ Eò¯ûhÉ nù¶ÉÉ ºÉ¦ÉÒ |ÉMÉiÉÒ´ÉÉÊnù EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå ¨Éå ½èÞ* ÊxÉ®úÉ±ÉÉ EòÉ ´É½þ iÉÉäb÷iÉÒ {ÉilÉ®ú =ºÉEòÉ +SUôÉ =nùÉ½þ®úhÉ ½èÞ*

(3)¶ÉÉä¹ÉEòÉå Eäò |ÉÊiÉ –ÞÉÞhÉÉ – |ÉMÉÊiÉ´ÉÉÊnùªÉÉå Eäò +xÉÖºÉÉ®ú ºÉ¨ÉÉVÉ ¨Éå nùÉä VÉÉÊiÉªÉÉÄ ½éþ – ¶ÉÉä¹ÉEò +Éè®ú ¶ÉÉäÊ¹ÉiÉ* VÉ¤É iÉEò {ÉÚÄVÉÒ´ÉÉnùÒ ´ªÉ´ÉºlÉÉ ¤ÉxÉÒ ®ú½äþMÉ iÉ¤É iÉEò ¶ÉÉä¹ÉhÉ EòÉ +xiÉ

+ºÉ¨¦É´É ½èÞ* |ÉMÉiÉÒ´ÉÉÊnù EòÊ´É <ºÉ VÉÞÉxªÉ ´ªÉ´ÉºiÉÉ EòÉä EÖòSÉ±É näùxÉä Eäò {ÉlÉ ¨Éå ½èÞ, <ºÉÊ±ÉB ´Éä ¶ÉÉä¹ÉEòÉå Eäò |ÉÊiÉ ÞÉÞhÉÉ |ÉEò]õ Eò®úiÉä ½éÞ*

(4) GòÉÎxiÉ EòÒ ¦ÉÉ´ÉxÉÉ – ºÉÉ¨ªÉ´ÉÉnùÒ ´ªÉ´ÉºlÉÉ EòÒ |ÉÊiÉ¹`öÉ Eäò Ê±ÉB ºÉÉ¨ÉÉxnù´ÉÉnùÒ {É®ÆÚ{É®úÉ+Éå EòÉ ºÉ¨ÉÚ±ÉxÉÉ¶É +É´É¶ªÉEò ½èÞ* Eäò´É±É {É®ÆÚ{É®úÉ+Éå EòÉ xÉÉ¶É {ÉªÉÉÇ{iÉ xÉ½þÓ, ¤ÉÎ±Eò ¶ÉÉä¹ÉEò ´ÉMÉÇ EòÉ ºÉ´ÉçlÉÉ v´ÉÆºÉ ´ÉÉÆUôxÉÒªÉ ½èÞ* +iÉ: |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´É ¶ÉÉä¹ÉhÉ +Éè®ú +xªÉÉªÉ Eäò |ÉÊiÉ GòÉÎxiÉ EòÉ +É¼´ÉÉxÉ Eò®úiÉÉ ½èÞ*

(5) xÉÉ®úÒú ÊSÉjÉhÉ – |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒù EòÊ´É EäòÊ±ÉB ¨ÉWÉnÚù®ú iÉlÉÉ ÊEòºÉÉxÉ Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ xÉÉ®úÒ ¶ÉÉäÊ¹ÉiÉ ½èÞ* =xÉEäò +xÉÖºÉÉ®ú ´É½þ +{ÉxÉÉ º´ÉiÉÆjÉ ´ªÉÊHòi´É JÉÉä SÉÖEòÒ ½èÞ +Éè®ú ´É½þ Eäò´É±É {ÉÖ¯û¹É EòÒ ´ÉÉºÉxÉÉ ¨ÉÉjÉ ®ú½þ MÉ<Ç ½èÞ*

(6) ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò VÉÒ´ÉxÉ EòÉ ªÉlÉÉlÉÇ ÊSÉjÉhÉ – |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´É näù¶É +Éè®ú Ê´Énäù¶É EòÒ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ºÉ¨É²ªÉÉ+Éå Eäò |ÉÊiÉ +iªÉxiÉ ºÉVÉMÉ ®ú½äþ ½èÞ* =xÉEäòÊ±ÉB ¨ÉÉxÉ´ÉiÉÉ´ÉÉnù EòÒ |ÉÊiÉ¹`öÉ EäòÊ±ÉB Bäº ÉÉ Eò®úxÉÉ +É´É¶ªÉEò lÉÉ* =xÉEäò ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå VÉÒ´ÉxÉ ´ÉÉºiÉÊ´ÉEò °ü{É ºÉä |ÉÊiÉÊ¤ÉÎ¨¤ÉiÉ ½Öþ+É*

3.|ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÉ´ªÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´É +Éè®ú ®úSÉxÉÉBÄ CªÉÉ–CªÉÉ ½èÞ?

|ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ =nÂù¦É´É UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå ºÉÖÊ¨ÉjÉÉxÉÆnùxÉ {ÉÆiÉ +Éè®ú ÊxÉ®úÉ±ÉÉ ºÉä ½þÉä SÉÖEòÉ lÉÉ* {ÉÆiÉ EòÒ "VªÉÉäiºÉxÉÉ', "ªÉÖMÉ´ÉÉhÉÒ' iÉlÉÉ ÊxÉ®úÉ±ÉÉ EòÒ "´É½þ iÉÉäb÷iÉÒ {ÉilÉ®ú', "xÉB {ÉkÉä', "EÖòEÖò®ú¨ÉÖkÉÉ' +ÉÊnù EòÊ´ÉiÉÉ+Éå ¨Éå |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ º´É®ú ¨ÉÖJÉÊ®úiÉ ½þÉä =`äö* |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnù Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå EäònùÉ®úxÉÉlÉ +OÉ´ÉÉ±É, ¶É¨ÉÊ´É±ÉºÉ ¶É¨ÉÉÇ, xÉÉMÉVÉÖÇxÉ, Ê¶É´É¨ÉÆMÉ±É ËºÉ½þ ºÉÖ¨ÉxÉ, ÊjÉ±ÉÉäSÉxÉ +Éè®ú ®úÉÆMÉäªÉ®úÉÞÉ´É +ÉiÉä ½èÞ*

(1)EäònùÉ®úxÉÉlÉ +OÉ´ÉÉ±É – iÉä |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ ´ÉMÉÇ Eäò ¶ÉÊHò ºÉ¨{ÉxxÉ EòÊ´É ½èÞ* =xÉEòÒ =nÂù¤ÉÉävÉxÉÉi¨ÉEò EòÊ´ÉiÉÉBÄ EòÉ¿òÒ ½éÞ* <xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå ¨ÉÉxÉ´É +Éè®ú |ÉEÞòÊiÉ Eäò ºÉÉèxnùªÉÇ EòÉ =x¨ÉÖHò °ü{É ±ÉÊlÉiÉ ½èÞ* =xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½éÞ – Eò½äÞ EäònùÉ®ú JÉ®úÒ JÉ®úÒ, ¿Úò±É xÉ½þÓ ®ÆúMÉ ¤Ééä±ÉiÉä ½éÞ, ½äÞ ¨Éä®úÒ iÉÖ¨É, MÉÖ±É¨Éä½ÆÞnùÒ, +Éi¨ÉMÉÆvÉ*

(2)®úÉ¨ÉÊ´É±ÉºÉ ¶É¨ÉÉÇ – ´Éä EòÊ´É ½þÒ xÉ½þÓ |ÉMÉÊiÉ¶ÉÒ±É ±ÉäJÉEò ºÉÆÞÉ Eäò ¨ÉÆjÉÒ ¦ÉÒ ®ú½äÞ* <xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå ¨Éå

ºÉÉnùMÉÒ, ´ÉäMÉ +Éè®ú ºÉ½þVÉiÉÉ =xÉEäò ºÉÉèxnùªÉÇ EòÉä ¤ÉføÉxÉä´ÉÉ±Éä ½éþ*

(3)xÉÉMÉVÉÖÇxÉ – <xÉEòÉ ´ÉÉºiÉÊ´ÉEò xÉÉ¨É ´ÉètxÉÉlÉ Ê¨É¸É ½èþ* <xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå Eäò iÉÒxÉ ¦Éänù ½éþ –(1)MÉÆ¦ÉÒ®ú ºÉÆ´ÉänùxÉÉi¨ÉEò +Éè®ú Eò±ÉÉi¨ÉEò EòÊ´ÉiÉÉ ÊVÉºÉ¨Éå ¨ÉÉxÉ´É ¨ÉxÉ EòÒ ®úÉMÉi¨ÉEò +Éè®ú ºÉéèxnùªÉÇ¨ÉªÉÒ UôÊ´ÉªÉÉå EòÉä nù¶ÉÉÇªÉÉ ½èþ* (2)EÖòUô EòÊ´ÉiÉÉBÄ ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò EÖò¯û{ÉiÉÉ, ®úÉVÉxÉèÊiÉEò +´ªÉ´ÉºlÉÉ +Éè®ú vÉÉÌ¨ÉEò +xvÉÊ´É¶´ÉÉºÉ {É®ú ´ªÉÆMªÉ Eò®úiÉÒ ½èþ* (3) iÉÒºÉ®äú ´ÉMÉÇ EòÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ =nÂù¤ÉÉävÉxÉÉi¨ÉEò ½éþ* =xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½éþ :– ¤ÉÉnù±É EòÉä ÊPÉ®úiÉä näùJÉÉ ½èþ, "{ÉÉ¹ÉÉhÉÒ', "SÉxnùxÉÉ', "®ú´ÉÒxpù Eäò |ÉÊiÉ', "ËºÉnÚù®ú ÊiÉ±ÉÊEòiÉ ¦ÉÉ±É', "iÉÖ¨½þ®úÒ nÆùiÉÖÊ®úiÉ ¨ÉÖºEòÉxÉ'

(4) ®ÆúMÉäªÉ®úÉPÉ´É – ¤É½Öþ¨ÉÖJÉÒ |ÉÊiÉ¦ÉÉ Eäò |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´É lÉä* <x½þÉåxÉä ¨ÉÖHòEò BÆ´É |É¤ÉxvÉ EòÊ´ÉiÉÉBÄ Ê±ÉJÉÒ ½èþ* =xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½éþ :– "+VÉäªÉ JÉÆb÷½þ®', "¨ÉävÉÉ´ÉÒ', "{ÉÉÆSÉÉ±ÉÒ'

(5) Ê¶É´É¨ÉÆMÉ±ÉËºÉ½þ ºÉÖ¨ÉxÉ – ºÉÚ¨ÉxÉ EòÒ |ÉMÉÊiÉ¶ÉÒ±É EòÊ´ÉiÉÉBÄ nùÉä iÉ®ú½þ EòÒ ½éþ – MÉÒiÉ{É®úEò UôÉä]õÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ +Éè®ú =nÂù¤ÉÉävÉxÉ{É®úEò ±É¨¤ÉÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ* =xÉEòÒ |É¨ÉÖJÉ ®úSÉxÉÉBÄ ½éþ :–

"VÉÒ´ÉxÉMÉÉxÉ',
"Ê½þ±±ÉÉä±É',"|É±ÉªÉºÉÞVÉxÉ'

(6) ÊjÉ±ÉÉäSÉxÉ:- ´Éä PÉ®úiÉÒ EòÒ ºÉÉåvÉÒ MÉxvÉ Eäò EòÊ´É ½èþ* <ºÉÊ±ÉB =xÉEòÒ EòÉ´ªÉ ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå ¦ÉÒ MÉÉÄ´É EòÒ ºÉÉnùMÉÒ ½èþ* "Ê¨É]Âõ]õÒ EòÒ ¤ÉÉ®úÉiÉ' =xÉEòÉ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ EòÊ´ÉiÉÉ ºÉÆOÉ½þ ½èþ*

UNIT - 26

|ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnù +Éè®ú xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ

1. |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ º´É°ü{É ÊEòºÉ|ÉEòÉ®ú °ü{ÉÉÊªÉiÉ ½Öþ+É?

|ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnù EòÉ =nªÉ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnù EòÒ |ÉÊiÉÊGòªÉÉº´É°ü{É ½Öþ+É* ºÉÉ¨ªÉ´ÉÉnùÒ nù¶ÉÇxÉ EòÒ Eò]Âõ]õ®úiÉÉ, ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò ªÉlÉÉlÉÇ´ÉÉnù EòÒ +ÊiÉ´ªÉÉÉ{iÉÒ +Éè®ú ºÉÉ¨ÉÚÊ½þEòiÉÉ Eäò EòÉ®úhÉ |ÉMÉÊiÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå BEò®úºÉiÉÉ +É MÉ<Ç lÉÒ* ´ÉèªÉÊHòEò +xÉÖ¦ÉÚÊiÉªÉÉå EäòÊ±ÉB ´É½þÉÄ EòÉä<Ç +´ÉEòÉ¶É xÉ½þÓ lÉÉ* ¡ò±ÉiÉ: ´ÉèªÉÊHòEòiÉÉ EòÉ ¨ÉÚ±É +ÉvÉÉ®ú ±ÉäEò®ú |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ +ÉÊ´É¦ÉÉÇ´É ½Öþ+É*

|ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ +É®úÆ¦É ºÉxÉ 1943 ¨Éå EòÊ´É +YÉäªÉ uùÉ®úÉ ºÉ¨{ÉÉÊnùiÉ "iÉÉ®úºÉ{iÉEò' ºÉä ½þÉäiÉÉ ½èþ* +YÉäªÉ xÉä Ê½þxnùÒ EòÉ´ªÉ Eäò <ÊiÉ½þÉºÉ ¨Éå BEò xÉªÉä ªÉÖMÉ EòÉ ºÉÚjÉ{ÉÉiÉ ÊEòªÉÉ* <ºÉ¨Éå +YÉäªÉ

Eäò +±ÉÉ´ÉÉ +xªÉ Uô½þ EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ ¦ÉÒ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç, VÉè°Éä – ÊMÉÊ®úVÉÉEÖò¨ÉÉ®ú ¨ÉÉlÉÖ®ú, MÉVÉÉxÉxÉ ¨ÉÉvÉ´É ¨ÉÖÊHò¤ÉÉävÉ, ¦ÉÉ®úiÉ¦ÉÚ¹ÉhÉ +OÉ´ÉÉ±É, xÉäÊ¨ÉSÉxnùVÉèxÉ, ®úÉ¨ÉÊ´É±ÉÉ°É¶É¨ÉÉÇ, |É¦ÉÉEò®ú ¨ÉÉSÉ´Éä +ÉÊnù* <xÉ °ÉÉiÉÉå EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ ¦ÉÉ´É¤ÉÉävÉ iÉlÉÉ EòÉ´ªÉ Ê¶É±{É EòÒ oùÎ¹]õ °Éä xÉªÉä-xÉªÉä |ÉªÉÉäMÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ lÉÓ* iÉÉ®ú°É{iÉEò EòÒ ¦ÉÚÊ¨ÉEòÉ ¨Éå +YÉäªÉ xÉä Ê±ÉJÉÉ ½èþ ÊEò ªÉä °ÉÉiÉÉå EòÊ´É ÊEò°ÉÒ BEò °EÚò±É Eäò xÉ½þÓ ½èþ, ´Éä ®úÉ½þÒ xÉ½þÓ, ®úÉ½þÉå Eäò +x´Éä¹ÉÒ ½èþ* iÉÉ®ú°É{iÉEò Eäò EòÊ´ÉªÉÉå xÉä "|ÉªÉÉäMÉ¶ÉÒ±É' ªÉÉ "|ÉªÉÉäMÉ' ¶É¤nù EòÉ =±±ÉäJÉ ÊEòªÉÉ ½èþ, |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnù EòÉ xÉ½þÓ* +YÉäªÉ xÉä Eò½þÉ ½èþ – ""½þ¨Éå |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ Eò½þxÉÉ =iÉxÉÉ °ÉÉlÉÇEò ªÉÉ ÊxÉ®úlÉÇEò ½èþ, ÊVÉiÉxÉÉ ½þ¨Éå "EòÊ´ÉiÉÉ´ÉÉnùÒ' Eò½þxÉÉ. . . |ÉªÉÉäMÉ +{ÉxÉä +É{É ¨Éå <¹]õ xÉ½þÓ ½èþ ´É½þ °ÉÉvÉ´É ½èþ +Éè®ú nùÉä½þ®úÉ °ÉÉvÉxÉ ½èþ, CªÉÉåÊEò ´É½þ =°É °ÉiªÉ EòÉä VÉÉxÉxÉä EòÉ °ÉÉvÉxÉ ½èþ ÊVÉ°Éä EòÊ´É |ÉäÊ¹ÉiÉ Eò®úiÉÉ ½èþ* °ÉxÉÂ 1951 ¨Éå nÖù°É®úÉ °É{iÉEò Eäò |ÉEòÉ¶ÉxÉ °Éä |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ xÉ<Ç EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå °ü{ÉxiÉÊ®úiÉ ½þÉä VÉÉiÉÒ ½èþ* 1951 iÉEò +ÉiÉä +ÉiÉä <°É EòÉ´ªÉvÉÉ®úÉ EäòÊ±ÉB xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ xÉÉ¨É °´ÉÒEÞòiÉ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ* xÉ<Ç EòÊ´ÉiÉÉ iÉEò +ÉiÉä +ÉiÉä =°É¨Éå EòlªÉ

+Éè®ú Ê¶É±{É nùÉäxÉÉå oùÎ¹]õªÉÉå ºÉä Eò<Ç {ÉÊ®ú´ÉiÉÇxÉ +Éè®ú Ê´ÉEòÉºÉ ½ÖÞB* ±ÉäÊEòxÉ |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnù +Éè®ú xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ +ÉvÉÉ®úMÉiÉ SÉäiÉxÉÉ, EòÉ´ªÉ oùÎ¹]õ, Ê´É¹ÉªÉ´ÉºiÉÖ, Ê¶É±{É iÉlÉÉ ¶Éè±ÉÒ ±ÉMÉ¦ÉMÉ BEò ½þÒ ½èþ* nùÉäxÉÉå Eäò ®úSÉÊªÉiÉÉ ¦ÉÒ BEò ½þÒ ½èþ* nÖùºÉ®úÉ ºÉ{iÉEò ¨Éå ÊVÉºÉ ºÉÉiÉ EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ ºÉÆEòÊ±ÉiÉ lÉÒ ´Éä ½éþ – ¦É´ÉÉÊxÉ|ÉºÉÉnùÊ¨É¸É, ¶É¨É¶Éä®ú ¤É½þÉnÖù®ú Ë ºÉ½þ, ®úPÉÖ´ÉÒ®ú ºÉ½þÉªÉ, xÉ®äú¶É ¨Éä½þiÉÉ, vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ, ¶ÉEÖòxiÉ±ÉÉ ¨ÉÉlÉÖ®ú +Éè®ú ½þÊ®úxÉÉ®úÉªÉhÉ ´ªÉÉºÉ* 1959¨Éå "iÉÒºÉ®úÉ ºÉ{iÉEò' |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ+É* <ºÉ¨Éå ¦ÉÒ +YÉäªÉVÉÒ Eäò ºÉÆ{ÉÉnùEòi´É ¨Éå ºÉ´Éæ•É®únùªÉÉ±É ºÉCºÉäxÉÉ, EäònùÉ®úxÉÉlÉ ËºÉ½þ, |ÉªÉÉhÉ xÉÉ®úÉªÉhÉ ÊjÉ{ÉÉ`öÒ, EÖò´É®ú xÉÉ®úÉªÉhÉ, ¨ÉnùxÉ ´ÉÉiºªÉÉªÉxÉ, EòÒlïÉSÉÉèvÉ®úÒ, Ê´ÉVÉªÉnäù´É xÉÉ®úÉªÉhÉ ºÉÉ½þÒ +ÉÊnù ºÉÉiÉ EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½ÖÞ<Ç* 1979 ¨Éå SÉÉèlÉÉ ºÉ{iÉEò +YÉäªÉ xÉä ºÉ¨{ÉÉÊnùiÉ +Éè®ú |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ÊEòªÉÉ* ºÉ{iÉEòÉå ¨Éå +YÉäªÉ xÉä BäºÉä EòÊ´ÉªÉÉå EòÉä ºlÉÉxÉ Ênùª ÉÉ, VÉÉä ÊEòºÉÒ ¨ÉÆÊVÉ±É {É®ú {É½ÄÞSÉä ½ÖÞB xÉ½þÓ ½èþ, +¦ÉÒ ®úÉ½þÒ ½èþ*

(2)|ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ ¨ÉÖJªÉ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ CªÉÉ–CªÉÉ ½èþ?

|ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ¦ÉÉ´É +Éè®ú Ê¶É±{É Eäò IÉäjÉ ¨Éå xÉªÉä-xÉªÉä |ÉªÉÉäMÉÉå EòÒ JÉÉäVÉ EòÒ lÉÒ*

¦ÉÉ´É {ÉIÉ

(1)+ÉvÉÖÊxÉEòiÉÉ EòÉ ¤ÉÉävÉ – +ÉvÉÖÊxÉEòiÉÉ ¤ÉÉävÉ xÉªÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ +Éi¨ÉÉ ½èþ* +ÉvÉÖÊxÉEò VÉÒ´ÉxÉ ¨Éå ´ÉèYÉÉxÉÒEò +ÉÊ´É¹EòÉ®ú +ÉÊnù Eäò EòÉ®úhÉ YÉÉxÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå ¤Éb÷É {ÉÊ®ú´ÉiÉÇxÉ ½Öþ+É* +ÉvÉÖÊxÉEò ¨ÉÉxÉ´É iÉEÇò +Éè®ú ¤ÉèÊrùEòiÉÉ EòÉ ºÉ½þ®úÉ ±ÉäiÉÉ ½èþ* ®úÉMÉÉi¨ÉEò ºÉ¨¤ÉxvÉÉå ¨Éå ¤Éb÷É {ÉÊ®ú´ÉiÉÇxÉ ½Öþ+É ½èþ* ¨ÉÉxÉ´É Eäò ¨ÉxÉ ¨Éå iÉxÉÉ´É +Éè®ú uxuùù ½èþ* +ÉvÉÖÊxÉEò ¨ÉÉxÉ´É Eäò <ºÉ VÉÊ]õ±É ¦ÉÉ´É ¤ÉÉävÉ EòÉä xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ªÉÉå ÊSÉÊjÉiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

"+ÉVÉ VÉÒiÉ EòÒ ®úÉiÉ {É½ÖþÊ®úªÉä, ºÉÉ´ÉvÉÉxÉ ®ú½þxÉÉ

=ÄSÉÒ ®ú½äþ ¨É¶ÉÉ±É ½þ¨ÉÉ®úÒ, +MÉÉä EòÊ`öxÉ b÷MÉ®ú ½èþ

¶ÉjÉÖ ½þ]õ MÉªÉÉ ±ÉäÊEòxÉ =ºÉEòÒ UôÉªÉÉ+Éå EòÉ b÷®ú ½èþ*'

(2)¤ÉÉèÊrùEòiÉÉ – +ÉvÉÖÊxÉEò ¨ÉÉxÉ´É ¤ÉÖrùÒ Eäò ºÉ½þÉ®äú iÉEÇò Eò®úEäò ½þÒ ½þ®ú ÊEòºÉÒ ¤ÉÉiÉ EòÉä +{ÉxÉÉiÉÉ ½èþ* <ºÉÊ±ÉB |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ¦ÉÉ´ÉxÉÉ EòÒ +{ÉäIÉÉ ¤ÉÉèÊrùEòiÉÉ EòÉä +ÊvÉEò ºlÉÉxÉ ÊnùªÉÉ ½èþ* =nùÉ:-

""GòÉäSÉ ¤Éè`öÉ ½þÉä ªÉÊnù ´É±¨ÉÒEò {É®ú

iÉÉä ¨ÉiÉ ºÉ¨ÉZÉ ÊEò

´É½þ +xÉÖ¹`ÖöÉ{É ¤ÉÉÄSÉ ®ú½þÉ ½èþ ºÉÆÊMÉxÉÒ Eäò º¨É®úhÉ Eäò

´É½þ iÉÉä nùÒ¨ÉEòÉå EòÉä]õÉä½þ ¨Éå ½éþ*"

(3)ªÉlÉÉlÉÇ Eäò |ÉÊiÉ +ÉOÉ½þ– |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ªÉlÉÉlÉÇ Eäò ÊSÉjÉhÉ {É®ú ¤É±É ÊnùªÉÉ ½èþ =x½þÉåxÉä |ÉMÉÊiÉ´ÉÉÊnùªÉÉå EòÒ iÉ®ú½þ ´ªÉÊHò Eäò ªÉlÉÉlÉÇ EòÒ ={ÉäIÉÉ xÉ½þÓ EòÒ* ´ªÉÊHò +Éè®ú ºÉ¨ÉÉVÉ nùÉäxÉÉå EòÉä ¨É½þi´É näùiÉä ½ÖþB =x½þÉåxÉä EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå ªÉlÉÉlÉÇ EòÉ ÊSÉjÉhÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

(4) ´ªÉÎ¹]õ +Éè®ú ºÉ¨ÉÎ¹]õ EòÉ ºÉ¨Éx´ÉªÉ– UôÉªÉÉ´ÉÉÊnùªÉÉå xÉä ´ÉèªÉÊHòEò +xÉÖ¦ÉÚÊiÉªÉÉå EòÉä ¨É½þi´É ÊnùªÉÉ iÉÉä |ÉMÉÊiÉ´ÉÉÊnùªÉÉå xÉä ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò ªÉlÉÉlÉÇ {É®ú ¤É±É ÊnùªÉÉ* |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä <xÉ nùÉä +ÊiÉ´ÉÉnùÉå EòÉä UôÉäb÷Eò®ú ´ªÉÊHò +Éè®ú ºÉ¨ÉÉVÉ EòÉ ºÉ¨Éx´ÉªÉ |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ ÊVÉºÉEòÉä +YÉäªÉ xÉä "xÉnùÒ Eäò uùÒ{É' ¨Éå ÊnùJÉÉªÉÉ ½èþ* xÉnùÒ uùÒ{É EòÒ ¨ÉÉÄ ½èþ* uùÒ{É xÉnùÒ ºÉä +±ÉMÉ xÉ½þÓ ½þÉä ºÉEòiÉÉ =ºÉÒ |ÉEòÉ®ú ´ªÉÊHò ºÉ¨ÉÉVÉ EòÉ ½þÒ +ÆMÉ ½èþ*

(5)´ªÉÆMªÉ– |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò §É¹]õÉSÉÉ®úÉå ¤ÉÖ®úÉ<ªÉÉå Eäò |ÉÊiÉ ´ªÉÆMªÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò IÉäjÉ ¨Éå VÉÉä +xÉÒÊiÉªÉÉÄ ½þÉäiÉÒ ½èþ =xÉEäò Ê´É®úÉävÉ ¨Éå =x½þÉåxÉä ´ªÉÆMªÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* =nùÉ:-

""nÚùºÉ®úÉå EòÉ Eò{É]õÉ {É½þxÉEò®ú
ºÉc÷Eò {É®ú Ê¨É±Éä BEò |ÉÉä¡òºÉ®ú
¤ÉÉä±Éä, ÊVÉº¨É iÉÉä +{ÉxÉÉ ½èþ
Eò{Éb÷É ¦ÉÒ +{ÉxÉÉ ½þÉä, CªÉÉ WÉ°ü®úÒ ¤ÉÉiÉ ½èþ?"

(6) ±ÉPÉÖ¨ÉÉxÉ´É EòÒ |ÉÊiÉ¹`öÉ– {ÉÖ®úÉxÉä EòÊ´ÉªÉÉå Eäò xÉÉªÉEò vÉÒ®úÉänùÉkÉ +Éè®ú ¨É½þÉxÉ lÉä* ±ÉäÊEòxÉ xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä lÉÖpù +Éè®ú ={ÉäÊlÉiÉ ´ªÉÊHò EòÉä ¦ÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ Ê´É¹ÉªÉ ¤ÉxÉÉªÉÉ VÉÉä Eò¨ÉWÉÉäÊ®úªÉÉå ºÉä ªÉÖHò ½èþ +Éè®ú VÉÒ´ÉxÉ EäòÊ±ÉB ¤É½ÖþiÉ Eò¹]õ =`öÉiÉÉ ½èþ*

(7) |ÉEPòÊiÉ–ÊSÉjÉhÉ– UôÉªÉÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä |ÉEPòÊiÉ Eäò ®ú¨ÉhÉÒªÉ ºÉéèxnùªÉÇ EòÉä =nÂùPÉÊ]õiÉ ÊEòªÉÉ iÉÉä xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä |ÉEPòÊiÉ Eäò ºÉÖxnù®ú °ü{É Eäò ºÉÉlÉ +ºÉÖxnù®ú lÉÖpù °ü{É EòÉ ¦ÉÒ ´ÉhÉÇxÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

(8)+ÉÎºiÉi´É¤ÉÉävÉ– |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒù xÉªÉä EòÊ´É +ÉÎºiÉi´É´ÉÉnùÒ Ê´ÉSÉÉ®úÉå ºÉä |É¦ÉÉÊ´ÉiÉ ½èþ* =xÉEäò +xÉÖºÉÉ®ú ¨ÉxÉÖ¹ªÉ EòÉä ´ÉiÉÇ¨ÉÉxÉ ¨Éå VÉÒxÉÉ ½èþ* ½þ®ú BEò lÉhÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ +Éè®ú =ºÉEòÉ ¨É½þi´É +¨ÉÚ±ªÉ ½èþ*

(9)¤Énù±ÉÉ ½Öþ+É ºÉÉèxnùªÉÇ ¤ÉÉävÉ – +ÉvÉÖÊxÉEò ªÉÖMÉ Eäò +xÉÖºÉÉ®ú xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä xÉªÉÉ ºÉÉèxnùªÉÇ–¤ÉÉävÉ |ÉºiÉÖiÉ ÊEòªÉÉ* ºÉÖxnù®ú +Éè®ú +ºÉÖxnù®ú nùÉäxÉÉå EòÉ +xiÉ®ú ºÉ¨ÉÉ{iÉ Eò®úEäò =x½þÉåxÉä ºÉÖxnù®ú EòÉä ¦ÉÒ +ºÉÖxnù®ú

°ü{É ¨Éå iÉlÉÉ +ºÉÖxnù®ú EòÉä ºÉÖxnù®ú °ü{É ¨Éå ÊSÉjÉiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

(10) Ê´É¹ÉªÉ EòÒ ºÉÉvÉÉ®úhÉiÉÉ– xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå Eäò +xÉÖºÉÉ®ú EòÊ´ÉiÉÉ Eäò´É±É ¤Éb÷Ò ¤ÉÉiÉ ªÉÉ ¨É½þÉxÉ Ê´É¹ÉªÉ Eò½þxÉä EäòÊ±ÉB xÉ½þÓ ½èþ, ´É½þ VÉÒ´ÉxÉ Eäò ºÉÉvÉÉ®úhÉ Ê´É¹ÉªÉ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ ½þÉä ºÉEòiÉÒ ½èþ* =xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ Ê´É¹ÉªÉ ®ú½þÉ– SÉÚb÷Ò EòÉ]ÖõEòc÷É, SÉÉªÉ EòÉ {ªÉÉ±ÉÉ, ºÉÉ<ÊEò±É, EÖòkÉÉ, ½þÉä]õ±É +ÉÊnù*

|ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉä EòÊ´ÉªÉÉå xÉä Ê¶É±{É ¨Éå xÉªÉä |ÉªÉÉäMÉÉå EòÒ JÉÉäVÉ EòÒ ½èþ* xÉªÉä xÉªÉä |ÉiÉÒEò, Ë¤É¤É ={É¨ÉÉxÉÉå EòÉ |ÉªÉÉäMÉ =x½þÉåxÉä ÊEòªÉÉ* =x½þÉåxÉä ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉä VÉÒ´ÉxÉ Eäò ÊxÉEò]õ ±ÉÉxÉÉ SÉÉ½þÉ* =x½þÉåxÉä {ÉÖ®úÉxÉä ¶É¤nùÉå ¨Éå xÉªÉÉ +lÉÇ ¦É®úxÉÉ SÉÉ½þÉ* ¤ÉÉä±ÉSÉÉ±É EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉä EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ ¦ÉÉ¹ÉÉ ¤ÉxÉÉEò®ú ¦ÉÉ¹ÉÉ EòÉ ±ÉÉäEòiÉÆjÉÒEò®úhÉ ÊEòªÉÉ* ¦É´ÉÉÊxÉ|ÉºÉÉnù Ê¨É¸É xÉä Ê±ÉJÉ –VÉè°Éä ½þ¨É ¤ÉÉä±ÉiÉä ½éþ ´Éè°Éä iÉÚ Ê±ÉJÉ"*

(3) |ÉªÉÉäMÉ´ÉÉnùÒ xÉªÉÉÇ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´É +Éè®ú ®úSÉxÉÉBÄ CªÉÉ–CªÉÉ ½èþ?

(1) +YÉäªÉ – ½þ®úÒ PÉÉºÉ {É®ú lÉhÉ ¦É®ú, ¤ÉÉ¤É®úÉ +½äþ®úÒ, <xpù vÉxÉÖ¹É ®úÉènäù ½ÖþB, <iªÉ±É¨É, +ÉÄMÉxÉ Eäò {ÉÉ®ú uùÉ®ú, ÊEòiÉxÉÒ xÉÉÄ´ÉÉå ¨Éå ÊEòiÉxÉÒ ¤ÉÉ®ú

(2) ¨ÉÖÊH ò¤ÉÉävÉ – SÉÉÄnù EòÉ ¨ÉÚÄ½þ]äõføÉ ½èþ, ¦ÉÚ®úÒ ¦ÉÚ®úÒ JÉÉEò vÉÚÊ±É

(3) ®úPÉÖ´ÉÒ®ú ºÉ½þÉªÉ – ºÉÒÊføªÉÉå {É®ú vÉÚ{É, +Éi¨É½þiªÉÉ Eäò Ê´É¯ûqù, ½ÄþºÉä–½ÄþºÉä VÉ±nùÒ ½ÄþºÉä, ±ÉÉäMÉ ¦ÉÚ±É MÉB ½éþ*

(4) ¶É¨É¶Éä®ú ¤É½þÉnÖù®ú ËºÉ½þ – EÖòUô EòÊ´ÉiÉÉBÄ, EÖòUô +Éè®ú EòÊ´ÉiÉÉBÄ, SÉÖEòÉ ¦ÉÒ ½ÚÄþ xÉ½þÓ ¨Éå, <iÉxÉä +{ÉxÉä {ÉÉºÉ, ¤ÉÉiÉ ¤ÉÉä±ÉäMÉÒ, EòÉ±É iÉÖZÉºÉä ½þÉäc÷ ½èþ ¨Éä®úÒ

(5) ¦É´ÉÉxÉÒ|ÉºÉÉnù Ê¨É¸É – MÉÒiÉ ¿ò®úÉä¶É, ºÉiÉ{ÉÖb÷É Eäò VÉÆMÉ±É,]Úõ]õxÉä EòÉ ºÉÖJÉ

(6) xÉ®äú¶É ¨Éä½þiÉÉ – ´ÉxÉ{ÉÆJÉÒ ºÉÖxÉÉä, ¤ÉÉä±ÉxÉä nùÉä SÉÒb÷ EòÉä, ¨Éä®úÉ ºÉ¨ÉÌ{ÉiÉ BEòÉxiÉ

(7) vÉ¨ÉÇ´ÉÒ®ú ¦ÉÉ®úiÉÒ – `ÆÖb÷É ±ÉÉä½þÉ, ºÉÉiÉ MÉÒiÉ ´É¹ÉÇ, EòxÉÖÊ|ÉªÉÉ

(8) EÚÄò´É®ú xÉÉ®úÉªÉhÉ – SÉGò´ªÉÚ½þ, +Éi¨ÉVÉªÉÒ

(9) ºÉ´Éæ•É®únùªÉÉ±É ºÉCºÉäxÉÉ – EòÉ`ö EòÒ PÉÆÊ]õªÉÉÄ, ¤ÉÉÄºÉ EòÉ {ÉÖ±É, BEò ºÉÖxÉÒ xÉÉ´É, EÖò+ÉxÉÉä xÉnùÒ, VÉÆMÉ±É EòÉ nùnÇù, JÉÚÄÊ]õªÉÉå {É®ú]ÆõMÉä ±ÉÉäMÉ

(10) EäònùÉ®úxÉÉlÉ ËºÉ½þ–+¦ÉÒ Ê¤É±ÉEÖò±É +É¦ÉÒ, WÉ¨ÉÒxÉ {ÉEò ®ú½þÒ ½èþ, ªÉ½þÉÄ ºÉä näùJÉÉä, +EòÉ±É ¨Éå ºÉÉ®úºÉ, ¤ÉÉPÉ*

UNIT - 27

ºÉÉ`öÉäkÉ®úÒ EòÊ´ÉiÉÉ

1. ºÉÉ`öÉäkÉ®úÒ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ CªÉÉ ½èþ?

1960 Eäò ¤ÉÉnù Ê½þxnùÒ ¨Éå ½þÒ xÉ½þÓ, ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ ºÉÉÊ½þiªÉ ¨Éå +xÉäEò ´ÉÉnù ¨ÉÖJÉÊ®úiÉ ½ÖþB* +ÉWÉÉnùÒ Ê¨É±ÉxÉä Eäò ¤ÉÉnù ºÉÉ`ö iÉEò +ÉEò®ú EòÉä<Ç MÉhÉxÉÒªÉ {ÉÊ®ú´ÉiÉÇxÉ xÉ½þÓ ½Öþ+É* =xÉEòÉ lÉÉä¦É, ¨ÉÉä½þ¦ÉÆMÉ +ÉÊnù EòÉ´ªÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå +Ê¦É´ªÉHò ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ* +EòÊ´ÉiÉÉ, +º´ÉÒEÞòiÉ EòÊ´ÉiÉÉ +ÉÊnù <ºÉ ºÉ¨ÉªÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÉ´ªÉÉxnùÉä±ÉxÉ ½éþ* <xÉ¨Éå +ÉÊvÉEòÉÆ¶É VÉx¨É ±ÉäiÉä ½þÒ ºÉ¨ÉÉVÉ ½þÉä MÉªÉä* EÖòUô +ÉxnùÉä±ÉxÉ SÉÉ®ú ªÉÉ {ÉÉÄSÉ ´É¹ÉÇ iÉEò ®ú½þ ºÉEäò* b÷Éì.MÉhÉ{ÉÊiÉSÉxpù MÉÖ{iÉ xÉä <xÉ EòÉ´ªÉéxnùÉä±ÉxÉÉå EòÉä iÉÒxÉ ´ÉMÉÉç ¨Éå Ê´É¦ÉHò ÊEòªÉÉ ½èþ –

(1)ÊxÉ¹ÉävÉ ¨ÉÚ±ÉEò – <ºÉ ¸ÉähÉÒ ¨Éå {É®ÆÚ{É®úÉMÉiÉ ºÉÉ¨ÉÉVÉÒEò, ºÉÉÆºEÞòÊiÉEò BÆ´É xÉèÊiÉEò ¨ÉÚ±ªÉÉå EòÉ ÊxÉ¹ÉävÉ Eò®úEäò PÉÉä®ú ´ªÉÉHò´ÉÉnù, =SUÞÆôJÉ±É ªÉÉèxÉ´ÉÉnù BÆ´É xÉMxÉ ¦ÉÉäMÉ´ÉÉnù EòÉä +{ÉxÉÉªÉÉ*

(2) ºÉÆPÉ¹ÉÇ¨ÉÚ±ÉEò – <ºÉ¨Éå ºÉÉ¨ÉÉÊVÉEò, +ÉìlÉEò BÆ´É ®úÉVÉxÉÒÊiÉEò {ÉÊ®úÎºlÉÊiÉªÉÉå Eäò |ÉÊiÉ Ê´É®úÉävÉ +Éè®ú +ºÉxiÉÉä¹É ´ªÉHò Eò®úiÉä ½ÖþB =xÉEäò Ê´É¯ûqù ºÉÆPÉ¹ÉÇ EòÉ +É¼´ÉÉxÉ ÊEòªÉÉ*

(3)+ÉºlÉÉ¨ÉÚ±ÉEò – <ºÉ¨Éå EòÊ´ÉªÉÉå xÉä {É®ÆÚ{É®úÉMÉiÉ ¨ÉÚ±ªÉÉå EòÉä º´ÉÒEòÉ®ú

Eò®úiÉä ½Öþ> =xÉEòÒ {ÉÖxÉ:|ÉÊiÉ¹`öÉ {É®ú ¤É±É ÊnùªÉÉ*

(2)+EòÊ´ÉiÉÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉ CªÉÉ ½èþ?

"+EòÊ´ÉiÉÉ' xÉÉ¨ÉEò +ÉxnùÉä±ÉxÉ +Î{´ÉEÞòiÉ ªÉÉ ÊxÉ¹ÉävÉ¨ÉÚ±ÉEò EòÊ´ÉiÉÉ Eäò +lÉÇ ¨Éå ½þÉäiÉÉ lÉÉ* ÊuùùÊiÉªÉ Ê´É¶´ÉªÉÖrù Eäò ºÉ¨ÉÉ{iÉ ½þÉäxÉä Eäò ¤ÉÉnù +Éè®ú +¨É®úÒEòÉ Eäò ºÉÉÊ½þiªÉ lÉäjÉ ¨Éå Antipoetry Eäò °ü{É ¨Éå Bä¤Éä EòÉ´ªÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉ +ÉªÉä VÉÉä {ÉÚhÉÇ °ü{É ºÉä Ê´É¹ÉävÉÉi¨ÉEò oùÎ¹]õEòÉähÉ {É®ú +ÉvÉÉÊ®úiÉ lÉä* Ê½þxnùÒ ¨Éå ºÉÉiÉ´Éå nù¶ÉEò Eäò +É®úÆ¦É ¨Éå Ê´ÉþùÉä½þÒ {ÉÒgøÒ xÉÉ¨É ºÉä ÊxÉ¹ÉävÉÉi¨ÉEò EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ ºÉÆOÉ½þ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ+É* ºÉxÉ 1963 ¨Éå VÉMÉnùÒ¶É SÉiÉÖ´ÉænùÒ Eäò ºÉÆ{ÉÉnùxÉ ¨Éå "|ÉÉ®úÆ¦É' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EòÉ´ªÉºÉÆOÉ½þ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ+É* <ºÉ¨Éå =x½þÉåxÉä +{ÉxÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò Ê±ÉB "+Ê¦ÉxÉ´É EòÉ´ªÉ' ¶É¤ÉnÉnù |ÉªÉÖHò ÊEòªÉÉ lÉÉ* ¤ÉÉnù ¨Éå 1964 ¨Éå "+Ê¦ÉxÉ´É EòÉ´ªÉ' EäòÊ±ÉB "BÆ]õÒ {ÉÉä<]ÅõÒ' ªÉÉ "+EòÊ´ÉiÉÉ' xÉÉ¨É º´ÉÒEòÉ®ú ÊEòªÉÉ* 1965 ¨Éå ¶ªÉÉ¨É {É®ú¨ÉÉ®ú Eäò ºÉÆ{ÉÉnùxÉ ¨Éå "+EòÊ´ÉiÉÉ' {ÉÊjÉEòÉ EòÉ +É®úÆ¦É ½Öþ+É* iÉ¤É ºÉä ±ÉäEò®ú +EòÊ´ÉiÉÉ xÉÉ¨É Î{lÉ®ú +Éè®ú |ÉÊºÉrù ½þÉä MÉªÉÉ* ¶ªÉÉ¨É{É®ú¨ÉÉ®ú xÉä Eò½þÉ EòÒ ½þ¨ÉÉ®úÒ EòÊ´ÉiÉÉ EòÊ´ÉiÉÉ xÉ½þÓ, +EòÊ´ÉiÉÉ ½èþ* VÉÉä EòÊ´ÉiÉÉ º´ÉÒEÞòiÉ ¨ÉÉxªÉiÉÉ+Éå Eäò +xÉÖºÉÉ®ú xÉ½þÓ, ´É½þÒ +EòÉÊ´ÉiÉÉ ½èþ* +EòÊ´ÉiÉÉ +ÉxnùÉä±ÉxÉ Eäò ºÉÉlÉ VÉÖb÷xÉä´ÉÉ±Éä EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå VÉMÉnùÒ¶É SÉiÉÖ´ÉænùÒ,

¶ªÉÉ¨É {É®ú¨ÉÉ®ú, Eèò±ÉÉ¶É ´ÉÉVÉ{ÉäªÉÒ, xÉ®äúxpùvÉÒ®ú, ®úÉVÉEò¨É±É SÉÉèvÉ®úÒ, ®ú¨Éä¶É MÉÉèb÷, ®úÉVÉÒ´É ºÉCºÉäxÉÉ, MÉÆMÉÉ|ÉºÉÉnù Ê´É¨É±É, ¨ÉÉäxÉÉ MÉÖ±ÉÉ]õÒ, ¨ÉÊhÉEòÉ ¨ÉÉäÊ½þxÉÒ, ºÉÉèÊ¨ÉjÉ ¨ÉÉä½þxÉ +ÉÊnù |É¨ÉÖJÉ ½èþ* +EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå ÊxÉ¹ÉävÉ EòÉ º´É®ú |É¨ÉÖJÉ ½èþ* <xÉ EòÊ´ÉªÉÉå xÉä vÉ¨ÉÇ, ºÉÆºEþÒÊiÉ, º¨ÉÉVÉ BÆ´É xÉèÊiÉEòiÉÉ ºÉä ºÉÆ¤ÉÉÎxvÉiÉ ºÉ¦ÉÒ {É®Æú{É®úÉMÉiÉ ¨ÉÚ±ªÉÉå ªÉÉ iÉi´ÉÉå EòÉä +º´ÉÒEþÒiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* ¤Éb÷Éå EòÉ ÊxÉ¹ÉävÉ +Éè®ú +º´ÉÒEòÉ®ú <ºÉEòÒ ¨ÉÚ±É |É´ÉÞÊkÉ ½èþ* +{ÉxÉä {ÉÚ´ÉÇVÉÉå +Éè®ú +{ÉxÉä {ÉÊ®ú´ÉÉ®ú Eäò ¤Éc÷Éå Eäò |ÉÊiÉ =x½þÉåxÉä PÉÉä®ú +´ÉYÉÉ |ÉEò]õ EòÒ* ÊVÉºÉ näù¶É ¨Éå näù¶É|Éä¨É EòÉä ½þ¨É ¤Éb÷É ºÉ¨ÉZÉiÉä ½éþ, =ºÉEòÉä =x½þÉåxÉä xÉMÉhªÉ ¨ÉÉxÉÉ ½èþ* ºÉ¦ÉÒ |ÉEòÉ®ú EòÒ ´ªÉ´ÉºlÉÉ+Éå ºÉä PÉÉhÉ ®úJÉxÉä´ÉÉ±Éä +EòÊ´ÉªÉÉå xÉä ±ÉÉäEòiÉÆjÉ ´ªÉ´ÉºlÉÉ EòÉ Ê´É¶Éä¹É °ü{É ºÉä Ê´É®úÉävÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* +EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå =SUþÆôJÉ±É ¦ÉÉäMÉ´ÉÉnù +Éè®ú ªÉÉèxÉ´ÉÉnù EòÒ |É´ÉÞÊkÉªÉÉÄ {ÉÉªÉÒ VÉÉiÉÒ ½èþ* =xÉEòÒ oùÎ¹]õ ¨Éå xÉÉ®úÒ Eäò´É±É ´ÉÉºÉxÉÉ EòÒ {ÉÚÌiÉ EòÉ ºÉÉvÉxÉ ½èþ*

UNIT - 28

ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ

1. ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ºÉä CªÉÉ iÉÉi{ÉªÉÇ ½èþ?

"ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ' ¶É¤nù +ÆOÉäWÉÒ Eäò "Contemporary' EòÉ {ÉªÉÉÇªÉ ½èÞ* <ºÉ¨Éå ªÉ½Þ ¤ÉÉiÉ º{É¹]õ ½èÞ ÊEò ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ ºÉ¨ÉºÉÉ¨ÉÊªÉEò ºÉÆnù¦ÉÉç ºÉä VÉÖb÷Ò ½ÖÞ<Ç ½èÞ* ºÉÉlÉ ½ÞÒ <ºÉä ªÉÖMÉ Ê´É¶Éä¹É Eäò ºÉÆnù¦ÉÉç Eäò +xÉÖºÉÉ®ú ¤Énù±ÉÒ ½ÖÞ<Ç ¨ÉÉxÉÊºÉEòiÉÉ EòÉ ¦ÉÒ tÉäiÉEò ¨ÉÉxÉÉ VÉÉiÉÉ ½èÞ* ºÉ¨ÉEòÉÊ±ÉxÉ EòÊ´ÉiÉÉ ´ÉºiÉÖiÉ: xÉ<Ç EòÊ´ÉiÉÉ Eäò +ÉMÉä EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ ½èÞ VÉÉä "+xÉÖ¦ÉÚiÉÒ EòÒ |ÉÉ¨ÉÉÊhÉEòiÉÉ' +Éè®ú "¦ÉÉäMÉÉ ½ÖÞ+É ªÉlÉÉlÉÇ' EòÉä ®úSÉxÉÉ EòÉ |É¨ÉÉhÉ ¨ÉÉxÉiÉÒ ½èÞ* ºÉxÉ 1976 ¨Éå b÷É. Ê´É¶´É¨¦É®úxÉÉlÉ ={ÉÉvªÉÉªÉ EòÒ {ÉÖºiÉEò "ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ ¦ÉÚÊ¨ÉEòÉ' Eäò ¨ÉÉvªÉ¨É ºÉä Ê½ÞxnùÒ EòÉ´ªÉ-lÉäjÉ ¨Éå "ºÉ¨ÉEòÉÊ±ÉxÉ EòÊ´ÉiÉÉ' xÉÉ¨ÉEò BEò xÉªÉä +ÉxnùÉä±ÉxÉ EòÉ VÉx¨É ½ÖÞ+É* <ºÉ¨Éå iÉÒxÉ EòÊ´ÉªÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ+Éå EòÉ ºÉÆEò±ÉxÉ ½ÖÞ+É ½èÞ* <xÉ¨Éå +EòÊ´ÉiÉÉ, |ÉÊiÉ¤Érù EòÊ´ÉiÉÉ, Ê´ÉSÉÉ®ú EòÊ´ÉiÉÉ +ÉÊnù Ê´ÉÊ¦ÉxxÉ EòÉ´ªÉÉxnùÉä±ÉxÉÉå ºÉä VÉÖbä÷ ½ÖÞB EòÊ´É +ÉªÉä ½éÞ* b÷É. MÉhÉ{ÉÊiÉSÉxpù MÉÖ{iÉ ¨ÉÉxÉiÉä ½èÞ ÊEò b÷É. Ê´É¶´É¨¦É®úxÉÉlÉ ={ÉÉvªÉÉªÉVÉÒ xÉä <ºÉ|ÉEòÉ®ú ºÉÉ`öÉäkÉ®úÒ ªÉÖMÉ Eäò ºÉ¦ÉÒ +ÉxnùÉä±ÉxÉÉå EòÉä BEò ¨ÉÆSÉ {É®ú ±ÉÉxÉä Eäò ±ÉlªÉ ºÉä =x½åÞ ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ ´ªÉÉ{ÉEò ¶ÉÒ¹ÉÇEò ÊnùªÉÉ ½èÞ*

ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå VÉÉä ½þÉä ®ú½þÉ ½èþ EòÉ ºÉÒvÉÉ JÉÖ±ÉÉºÉÉ ½èþ* <ºÉä {ÉgøEò®ú ´ÉiÉÇ¨ÉÉxÉ EòÉ±É EòÉ ¤ÉÉävÉ ½þÉä ºÉEòiÉÉ ½èþ* ªÉ½þÓ xÉ½þÒó =ºÉ¨Éå EòÉ±É EòÉ ½þÉäiÉÉ ½Öþ+É °ü{É ½èþ, VÉÒ´ÉxÉ +Éè®ú ¨ÉÚ±ªÉÉå EòÒ +¨ÉÚiÉÇ vÉÉ®úhÉÉ+Éå Eäò ºlÉÉxÉ {É®ú ºÉiÉÉB ½ÖþB ±ÉÉäMÉÉå EòÉ Ê´É´ÉäSÉxÉ +Éè®ú Ê´ÉpùÉä½þ ½èþ* ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ EäòxpùÒªÉ iÉi´É Ê´ÉSÉÉ®ú ½þÒ ½èþ* <ºÉÊ±ÉB ªÉ½þ Ê´ÉSÉÉ®ú EòÊ´ÉiÉÉ EòÉ ½þÒ {ÉªÉÉÇªÉ ½èþ* ={ÉÉvªÉÉªÉVÉÒ xÉä ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò Ê±ÉB ºÉÆPÉ¹ÉÇ¶ÉÒ±É EòÊ´ÉiÉÉ, Ê´ÉpùÉä½þÒ EòÊ´ÉiÉÉ +ÉÊnùù xÉÉ¨É ¦ÉÒ ¨ÉÉxÉä ½éþ* ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ VÉxÉ´ÉÉnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ½èþ* <ºÉÊ±ÉB <ºÉEòÒ ¶Éè±ÉÒ ºÉ{ÉÉ]õ ½èþ* EòÊ´ÉiÉÉ VÉxÉiÉÉ Eäò ÊxÉEò]õ +ÉªÉÒ* EòÉ´ªÉ¦ÉÉ¹ÉÉ MÉt Eäò ºÉ¨ÉÉxÉ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÒ* <ºÉEäò EòÊ´ÉªÉÉå xÉä VÉÒ´ÉxÉ EòÉ VÉÒiÉÉ-VÉÉMÉiÉÉ ÊSÉjÉ |ÉºiÉÖiÉ Eò®úxÉÉ SÉÉ½þÉ*

2. ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò |É¨ÉÖJÉ EòÊ´É EòÉèxÉ-EòÉèxÉ ½éþ?

ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå EòÊ´É vÉÚÊ¨É±É ºÉ¤ÉºÉä |ÉÊºÉrù ½èþ* =xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¦ÉÉ®úiÉÒªÉ VÉxÉiÉÆjÉ EòÒ ¨ÉÉxÉ´É-Ê´É®úÉävÉÒ ½þ®úEòiÉÉå EòÉ ºÉÒvÉÉ ºÉÉIÉÉiEòÉ®ú Eò®úiÉÒ ½èþ* +{ÉxÉä BEò¨ÉÉjÉ EòÉ´ªÉ ºÉÆEò±ÉxÉ ºÉÆºÉnù ºÉä ºÉc÷Eò iÉEò Eäò uùÉ®úÉ ´Éä ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ ¤ÉxÉ ºÉEäò*

=x½þÉåxÉä ºÉ¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ EòÊ´ÉiÉÉ EòÒ xÉÓ´É b÷É±ÉÒ* {É]õEòlÉÉ =xÉEòÒ ±ÉÆ¤ÉÒ EòÊ´ÉiÉÉ ½èþ* <xÉEäò +±ÉÉ´ÉÉ ±ÉÒ±ÉÉvÉ®ú VÉMÉÚb÷Ò, ´ÉähÉÖMÉÉä{ÉÉ±É, SÉxpùEòÉxiÉ näù´ÉiÉÉ±Éä, Eöò¨ÉÉ®äúxpù, EÖò¨ÉÉ®úÊ´ÉEò±É, ¤É±Énäù´É ´É¶ÉÒ, xÉ®äúxpù ¨ÉÉä½þxÉ, YÉÉxÉäxpù{ÉÊiÉ, =nùªÉ|ÉEòÉ¶É, Ê´ÉVÉäxpù, b÷É. ¶ªÉÉ¨ÉËºÉ½þ ¶ÉÊ¶É, ®úÉVÉä¶É VÉÉä¶ÉÒ, ¨ÉÆMÉä±É¶É b÷¤É®úÉ±É, +¯ûhÉ Eò¨É±É, @ñiÉÖ®úÉVÉ, ®úÉVÉÒ´É ºÉCºÉäxÉÉ +ÉÊnù ºÉ¨ÉEòÉÊ±ÉxÉ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå +±ÉMÉ {É½þSÉÉxÉ {ÉÉ ºÉEäò ½éþ*

UNIT - 29

Ê½þxnùÒ ºÉÉÊ½þiªÉ EòÉä Eäò®ú±É EòÒ näùxÉ

1. º´ÉiÉÆjÉiÉÉ |ÉÉÎ{iÉ Eäò {É½þ±Éä Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå Eäò®úÊ±ÉªÉÉå EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ?

º´ÉiÉÆjÉiÉÉ |ÉÉÎ{iÉ Eäò ¤É½ÖþiÉ {É½þ±Éä ½þÒ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ±ÉäJÉxÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå Eäò®ú±É ¨Éå EòÉ¿òÒ EòÉªÉÇ ½þÉäxÉä ±ÉMÉÉ lÉÉ* <ºÉ EòÉ±É Eäò |É¨ÉÖJÉ Eäò®ú±ÉÒªÉ Ê½þxnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ ±ÉI¨ÉÒEÖò]Âõ]õÒ näù´ÉÒ, ¸ÉÒ¨ÉÊiÉ ¦ÉÉ®úiÉÒ näù´ÉÒ,]õÒ.Eäò. MÉÉäÊ´ÉxnùxÉ iÉlÉÉ Ê´É¨É±É "Eäò®ú±ÉÒªÉ' Eäò xÉÉ¨É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ* ±ÉI¨ÉÒEÖò]Âõ]õÒ näù´ÉÒ EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå ¨Éå "+É¼´ÉÉxÉ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EòÊ´ÉiÉÉ +ÉÊvÉEò +ÉEò¹ÉÇEò +Éè®ú ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ ®ú½þÓ ½èþ* ªÉ½þ EòÊ´ÉiÉÉ VÉÖ±ÉÒ<ç 1929EòÒ "Ê½þxnùÒ |ÉSÉÉ®úEò {ÉÊjÉEòÉ'¨Éå |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½Öþ<Ç* nùÉÊ®úpù¬, nÖù:JÉ iÉlÉÉ Ê´Énäù¶ÉÒ ¶ÉÉºÉxÉ ºÉä ¨ÉÖHò ½þÉäxÉä EòÉ ºÉÆEò±{É <ºÉ EòÊ´ÉiÉÉ ¨Éå ½èþ* =xÉEòÒ "Ë{ÉVÉ®ú¤Ér {ÉlÉÒ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EòÊ´ÉiÉÉ xÉ´ÉÆ¤É®ú 1929 ¨Éå |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½Öþ<Ç ÊVÉºÉ¨Éå º´ÉÉiÉÆjªÉ EòÒ ¨É½þÒ¨ÉÉ ½èþ* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ ¦ÉÉ®úiÉÒ näù´ÉÒ EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå ¨Éå ¦ÉÒ º´ÉÉiÉÆjªÉ EòÒ iÉÒuÉ +Ê¦É±ÉÉ¹ÉÉ ½èþ* VÉÖ±ÉÉ<Ç 1923 ¨Éå =xÉEòÒ

"½äÞ ºÉxvªÉä' xÉÉ¨ÉEò EòÊ´ÉiÉÉ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖÞ<Ç* ¸ÉÒ.]õÒ. Eäò. MÉÉäÊ´ÉxnùxÉ EòÒ "+UÖôiÉ EòÒ +É½Þ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EòÊ´ÉiÉÉ 1933 ¨Éå ¨ÉÖÊÞùiÉ ½ÖÞ<Ç ÊVÉºÉ¨Éå MÉÉÄvÉÒVÉÒ Eäò +º{ÉÞ¶ªÉiÉÉ, nùÉºÉiÉÉ, +xÉÉÉSÉÉ®ú +ÉÊnù ºÉä ºÉ¨¤ÉÎxvÉiÉ ¤É½ÖÞ¨ÉÚ±ªÉ Ê´ÉSÉÉ®ú ½èÞ* ¸ÉÒ. Ê´É¨É±É "Eäò®ú±ÉÒªÉ' EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ nùÉ¶ÉÇxÉÒEò +ÉvÉÉ®ú |É¤É±É ½èÞ* +MÉºiÉ 1935 Eäò Ê½ÞxnùÒ |ÉSÉÉ®úEò ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ =xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ "|ÉÉhÉÉÆ¤ÉÖ' =xÉEòÒ nùÉ¶ÉÇÊxÉEòiÉÉ EòÉ tÉäiÉEò ½èÞ* +HÚò¤É®ú 1941 ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ¸ÉÒ.]õÒ. Eäò ®úÉ¨ÉxÉ ¨ÉäxÉÉäxÉ EòÒ "ºÉÉÊvÉiÉ Eò®úÉä' +Éè®ú ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ ´ÉÒ. +Î"¨ÉhÉÒ EòÒ "xÉÉ®úÒ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EòÊ´ÉiÉÉBÄ ¦ÉÒ +iªÉxiÉ ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ ½éÞ*

2. º´ÉÉiÉÆjªÉÉäkÉ®ú - EòÉ±É ¨Éå Eäò®ú±É Eäò Ê½ÞxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ ±ÉäJÉxÉ EòÒ Eèòº ÉÒ |ÉMÉÊiÉ ½ÖÞ<Ç?

º´ÉÉiÉÆjÉªÉÉäkÉ®ú EòÉ±É ¨Éå Eäò®ú±É Eäò Ê½ÞxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉ–±ÉäJÉxÉ ¨Éå EòÉ¿òÒ |ÉMÉÊiÉ ½ÖÞ<Ç* |ÉÉªÉ: ºÉ¦ÉÒ Ê½ÞxnùÒ {ÉjÉ–{ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå Eäò®úÊ±ÉªÉÉå uùÉ®ú ®úÊSÉiÉ Ê½ÞxnùÒ EòÊ´ÉiÉÉBÄ |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½ÖÞ<Ç ½éÞ* <ºÉ EòÉ±É Eäò Eäò®ú±ÉÒªÉ Ê½ÞxnùÒ EòÊ´ÉªÉÉå ¨Éå ´ÉÉºÉÖnäù´ÉxÉ Ê{É±±Éè, {ÉÒ. xÉÉ®úÉªÉhÉ, {ÉÆ xÉÉ®úÉªÉhÉ

näù´É, B¨É. ¸ÉÒvÉ®ú ¨ÉäxÉÉäxÉ, SÉxpù¶ÉäJÉ®úxÉ xÉÉªÉ®ú, +ÉÊnù +ÉiÉä ½éþ* ¸ÉÒ. ´ÉÉºÉÖnäù´ÉxÉ Ê{É±±Éè¯û¨ÉÉxÉÒ ¶Éè±ÉÒ EòÉ |ÉªÉÉäMÉ Eò®úxÉä´ÉÉ±Éä |ÉÊiÉ¦ÉÉ´ÉÉxÉ EòÊ´É lÉä* +EòiÉÚ¤É®ú 1953 EòÒ ®úÉ¹]Åõ´ÉÉhÉÒ ¨Éå =xÉEòÒ EòÊ´ÉiÉÉ ºÉÖxÉ ±ÉÉä EòlÉÉ-Eò½þÉxÉÒ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ<Ç* =x½þÉåxÉä "Eäò®ú±É ºÉiÉºÉÉ<Ç' Ê±ÉJÉxÉä EòÒ ªÉÉäVÉxÉÉ EòÒ, ±ÉäÊEòxÉ =xÉEòÒ +ÉEòÎº¨ÉEò ¨ÉÞiªÉÖ Eäò EòÉ®úhÉ +vÉÖ®úÉ ®ú½þ MÉªÉÉ +Éè®ú ¤ÉÉnù ¨Éå <ºÉÉ{É®ú Ê±ÉÊJÉiÉ =xÉEäò ºÉÉè SÉÖxÉä ½ÖþB nùÉä½þÉå EòÉ ºÉÆEò±ÉxÉ ºÉÆ{ÉÉÊnùiÉ ½Öþ+É* "xÉ®úxÉÉÂ' ={ÉxÉÉ¨É ºÉä {ÉÒ. xÉÉ®úÉªÉhÉ xÉä GòÉÆÊiÉEòÉ®úÒ ¦ÉÉ´ÉÉå ºÉä ªÉÖHò EòÊ´ÉiÉÉBÄ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ EòÒ* 1950 Eäò "±É±ÉEòÉ®ú' ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ "+Énù¨É Eäò |ÉÊiÉ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò EòÊ´ÉiÉÉ <ºÉEòÉ =nùÉ½þ®úhÉ ½èþ* {ÉÒ. xÉÉ®úÉªÉhÉ näù´É (näù´É Eäò®ú±ÉÒªÉ) Eäò®ú±É Eäò ±ÉÉäEòÊ|ÉªÉ Ê¹ÉxnùÒ EòÊ´É ½èþ* =xÉEòÒ 1957 Eäò ¤ÉÉnù EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ ºÉÆOÉ½þ "+É®úiÉÒ' xÉÉ¨É ºÉä |ÉEòÉ¶É ¨Éå +ÉªÉÉ ½èþ* Eäò®ú±ÉÒªÉ Ê¹ÉxnùÒ EòÊ´É {É®úÆú{É®úÉ EòÒ +MÉ±ÉÒ Eòb÷Ò BxÉ. SÉxpù¶ÉäJÉ®úxÉ xÉÉªÉ®ú ½éþ* "Ê½þ¨ÉÉ±ÉªÉ MÉ®úVÉ ®ú½þÉ ½èþ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò BEò JÉhb÷-EòÉ´ªÉ =x½þÉåxÉä |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* ¸ÉÒ. ¨ÉÖiÉÚ®ú ®úÉPÉ´ÉxÉ

xÉÉªÉ®ú EòÉ BEò EòÊ´ÉiÉÉ ºÉÆOÉ½þ "iÉÉ®úÉ{ÉlÉ' xÉÉ¨É ºÉä |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½èþ +Éè®ú b÷É. Ê´ÉVÉªÉxÉ EòÒ iÉä<ÇºÉ EòÊ´ÉiÉÉ+Éå EòÉ BEò ºÉ¨ÉÉ½þÉ®ú "EòlªÉ +Éè®ú iÉlªÉ xÉÉ¨É ºÉä ÊxÉEò±É SÉÖEòÉ ½èþ VÉÉä |ÉÉªÉ: ´ªÉÆMªÉ|ÉvÉÉxÉ ½èþ* <xÉEäò +ÊiÉÊ®úHò xÉ<Ç {ÉÒgøÒ Eäò ¸ÉÒ–´ÉÎ±±ÉCEòÖxxÉÖ +SªÉÖiÉxÉ EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ |ÉiÉÒlÉÉ +Éè®ú ºÉÒ. {ÉÒ. ®úÉVÉMÉÉä{ÉÉ±ÉxÉ xÉÉªÉ®ú EòÒ EòÊ´ÉiÉÉ ªÉÉnùÉå EòÒ Eò¥É ¨Éå ¦ÉÒ Ê´É¶Éä¹É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ*

3. Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò BÆ´É BEòÉÆEòÒ Eäò lÉäjÉ ¨Éå Eäò®ú±ÉÒªÉÉå EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ?

¨ÉÉè±ÉÒEò Ê½þxnùÒ xÉÉ]õEò ®úSÉxÉÉ ¨Éå Eäò®ú±ÉÒªÉÉå xÉä Eò¨É vªÉÉxÉ Ênùª ÉÉ ½èþ* {ÉÚhÉÇ ¨ÉÉè±ÉÒEò Ê½þxnùÒ xÉÉ]Eò Ê±ÉJÉxÉä iÉlÉÉ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ Eò®úxÉä EòÉ ¸ÉäªÉ BxÉ. SÉxpù¶ÉäJÉ®úxÉ xÉÉªÉ®ú EòÉä ½èþ* "ºÉä´ÉÉ¸É¨É' ¶ÉÒ¹ÉÇEò ºÉä =xÉEòÉ xÉÉ]õEò ºÉxÉ 1968 ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ+É VÉÉä iÉÒxÉ +ÆEòÉå ´ÉÉ±ÉÉ BäÊiÉ½þÉÊºÉEò xÉÉ]õEò ½èþ* =xÉEòÉ nÚùºÉ®úÉ xÉÉ]õEò ½èþ ªÉÖMÉºÉÆMÉ¨É' Eäò®ú±É EòÒ ¨ÉÉèÊ±ÉEò xÉÉ]õEò ®úSÉxÉÉ Eäò ºÉÆnù¦ÉÇ ¨Éå Eäò®ú±É Ê½þxnùÒ |ÉSÉÉ®ú ºÉ¦ÉÉ. ÊjÉ´ÉäxpùÉ EòÒ +Éè®ú ºÉä |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ¸ÉÒ. Eäò. {ÉÒ.

EÞò¹hÉxÉEÖò]Âõ]õÒ ±ÉÞÉÖ°ü{ÉEò ¦ÉÒ =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ* <ºÉ¨Éå {ÉÖ®úÉhÉ, <ÊiÉ½þÉºÉ +ÉÊnù EòÒ ¨ÉxÉÉä®ÆúVÉEò Eò½þÉÊxÉªÉÉå Eäò +ÉvÉÉ®ú {É®ú ºÉ®ú±É ¦ÉÉ¹ÉÉ ¨Éå Ê±ÉJÉä MÉB Eò<Ç ±ÉÞÉÖ-°ü{ÉEò ½éþ*

xÉÉ]õEò EòÒ +{ÉäIÉÉ Ê½þxnùÒ BEòÉÆEòÒ ±ÉäJÉxÉ Eäò IÉäjÉ ¨Éå Eäò®ú±ÉÒªÉÉå EòÒ näùxÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* ¸ÉÒ. SÉxpù¶ÉäJÉ®úxÉ xÉÉªÉ®ú, ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ. ±ÉI¨ÉÒEÖò]Âõ]õÒ +¨¨ÉÉ, Eäò. xÉÉ®úÉªÉhÉ iÉIÉÉ b÷É. VÉÒ. MÉÉä{ÉÒxÉÉIÉxÉ Eäò xÉÉ¨É <ºÉ¨Éå Ê´É¶Éä¹É =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½éþ* ¸ÉÒ. SÉxpù¶ÉäJÉ®úxÉ xÉÉªÉ®ú EòÉ "EÖò¯ûIÉäjÉ VÉÉMÉiÉÉ ½èþ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò BEòÉÆEòÒ ºÉÆOÉ½þ Ê½þxnùÒ ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½Öþ+É ÊVÉºÉ¨Éå iÉÒxÉ BEòÉÆEòÒ ½èþ* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ. ±ÉÎI¨ÉEÖò]Âõ]õÒ +¨¨ÉÉ xÉä "´Éä±ÉÖiÉ¨¤ÉÒ EòÒ ´ÉÒ®ú +É½ÖþiÉÒ',"{É¹ÉÊ¶É®úÉVÉÉ EòÉ +Éi¨É ºÉ¨É{ÉÇhÉ', +Éè®ú "¦ÉÉ®úiÉÒªÉ xÉÉ®úÒ iÉä®úÒ ¨ÉÊ½þ¨ÉÉ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò iÉÒxÉ BEòÉÆÊEòªÉÉå EòÉ ºÉÆOÉ½þ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ* "Eäò®ú±É ¦ÉÉ®úiÉÒ', "OÉxlÉ±ÉÉäEò¨É VÉèºÉÒ' Eäò®ú±É EòÒ Ê½þxnùÒ {ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå Eò<Ç ¨ÉÉèÊ±ÉEò BEòÉÆÊEò |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½ÖþB ½éþ ÊVÉxÉ¨Éå ¸ÉÒ. Eäò. xÉÉ®úÉªÉhÉ EòÉ "+ÉÊJÉ®úÒ

ºÉ´ÉÉ±É', ¸ÉÒ. {ÉÒ. Eäò ´ÉMÉÔºÉ EòÉ "SÉÎxpùEòÉ', ¸ÉÒ. ¸ÉÒ®ÆEúMÉ¨É Ê´ÉGò¨ÉxÉ xÉÉªÉ®ú EòÉ "BEò ½þÒ ºÉ½þÉ®úÉ' |É¨ÉÖJÉ ½éþ*

4. **Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉ ±ÉäJÉxÉ ¨Éå Eäò®ú±ÉÒªÉÉå EòÉ CªÉÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ½èþ?**

MÉÖhÉ +Éè®ú {ÉÊ®ú¨ÉÉhÉ EòÒ oùÎ¹]õ ºÉä Eäò®ú±ÉÒªÉÉå EòÉ ºÉ´ÉÉÇÊvÉEò ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ªÉÉäMÉnùÉxÉ ÊxÉ¤ÉxvÉÉå EòÒ ®úSÉxÉÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå ½Öþ+É ½èþ* Eäò®ú±ÉÒªÉÉå uùÉ®úÉ Ê±ÉÊJÉiÉ ÊxÉ¤ÉxvÉ =kÉ®ú iÉlÉÉ nùÊIÉhÉ EòÒ =SSÉºiÉ®úÒªÉ {ÉjÉ {ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½èþ* Eäò®ú±É Eäò Ê½þxnùÒ ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå Eäò ¤ÉÒSÉ º´É.´ÉÉºÉÖnäù´ÉxÉ Ê{É±±Éè, SÉxpù½þÉºÉxÉ, {ÉÒ.Eäò. Eäò¶É´ÉxÉ xÉÉªÉ®ú ®úixÉ¨ÉªÉÒnäù´ÉÒ nùÒIÉÒiÉ, b÷É. ¦ÉÉºEò®úxÉ xÉÉªÉ®ú, b÷É. Ê´É¶´ÉxxÉÉlÉ +ªªÉ®ú, BxÉ. ´ÉÒ. EÞò¹hÉ ´ÉÉÊ®úªÉ®ú, Eäò ®úÊ´É´É¨ÉÉÇ, SÉxpù¶ÉäJÉ®úxÉ xÉÉªÉ®ú, b÷É. ®úÉ¨ÉxÉ xÉÉªÉ®ú, b÷É. ®úÉ¨ÉSÉxpù näù´É, ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ ±ÉI¨ÉÒEÖò]Âõ]õÒ +¨¨ÉÉ, b÷É. ºÉ®ú±ÉÉnäù´ÉÒ +ÉÊnù =±±ÉäJÉxÉÒªÉ ½èþ*

º´É. ´ÉÉºÉÖnäù´ÉxÉ Ê{É±±Éè Eäò®ú±É Ê½þxnùÒ |ÉSÉÉ®ú ºÉ¦ÉÉ EòÒ "®úÉ¹]ÅõÒ´ÉÉhÉÒ' {ÉÊjÉEòÉ ¨Éå ºÉxÉ 1953-54Eäò +ÆEòÉå ¨Éå Eò<Ç

ÊxÉ¤ÉxvÉ |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ÊEòB VÉÉä ±ÉÊ±ÉiÉ ÊxÉ¤ÉxvÉ ¨ÉÉxÉä VÉÉiÉä ½éÞ* ¸ÉÒ. Eäò¶É´ÉxÉ xÉÉªÉ®ú Eäò |ÉÉªÉ: ÊxÉ¤ÉxvÉ nùÊIÉhÉ ¦ÉÉ®úiÉ Ê½ÞxnùÒ |ÉSÉÉ® ú+ÉxnùÉä±ÉxÉ ºÉä ºÉÆ¤ÉÆÊvÉiÉ ½èÞ* "nùÊIÉhÉ Eäò Ê½ÞxnùÒ |ÉSÉÉ®ú +ÉxnùÉä±ÉxÉ EòÉ ºÉ¨ÉÒIÉÉi¨ÉEò <ÊiÉ½ÞÉºÉ' =xÉEòÉ OÉxlÉ ½èÞ* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ. ®úixÉ¨ÉªÉÒnäù´ÉÒ nùÒÊIÉiÉ EòÉ "Eèò®ú±ÉÒ ºÉÉÊ½ÞiªÉ nù¶ÉÇxÉ BEò ¤É½ÚÞSÉÌSÉiÉ +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò OÉxlÉ ½èÞ* b÷É. ®úÉ¨ÉSÉxpù näù´É xÉä ¦ÉÒ ¨É±ÉªÉÉ±É¨É ºÉÉÊ½ÞiªÉ {É®ú BEò {ÉÊ®úSÉªÉÉi¨ÉEò OÉxlÉ Ê±ÉJÉÉ ½èÞ* ¨É±ÉªÉÉ±É¨É ºÉÉÊ½ÞiªÉ EòÉ {ÉÊ®úSÉªÉ |ÉºiÉÖiÉ Eò®ú±ÉxÉä´ÉÉ±ÉÉ BEò +Éè®ú ºÉÉ®úMÉÉÌ¦ÉiÉ OÉxlÉ b÷É. Eäò ¦ÉÉºEò®úxÉ xÉÉªÉ®ú EòÉ "¨É±ÉªÉÉ±É¨É ºÉÉÊ½ÞiªÉ EòÉ <ÊiÉ½ÞÉºÉ' ½èÞ* ¸ÉÒ. SÉxpù½ÞÉºÉxÉ +Éè®ú b÷É. ´Éä±±ÉÉªÉhÉÒ +VÉÖÇxÉxÉ xÉä ¦ÉÒ ¨É±ÉªÉÉ±É¨É ºÉÉÊ½ÞiªÉ {É®ú Eò<Ç {ÉÊ®úSÉªÉÉi¨ÉEò ±ÉäJÉ Ê±ÉJÉä ½éÞ* "®úÉ¹]Åõ¦ÉÉ®úiÉÒ EòÉä Eäò®ú±É EòÉ ªÉÉäMÉnùÉxÉ' b÷É. Ê´ÉJÉxÉÉlÉ +ªªÉ®ú EòÉ BEò nÚùºÉ®úÉ OÉxlÉ ½èÞ* 'ºÉä´ÉÉºÉnùxÉ EòÒ ºÉ¨ÉÒIÉÉ' ¶ÉÒ¹ÉÇEò BEò OÉxlÉ ¦ÉÒ b÷É +ªªÉ®ú EòÉ ½èÞ* º´ÉÉÊiÉ ÊiÉ¯ûxÉÉ±É {É®ú +vÉÉÊ®úiÉ

BEò ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ OÉxlÉ ¦ÉÒ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½èþ*

Eäò®ú±ÉÒªÉ Ê½þxnùÒ ±ÉäJÉEòÉå uùÉ®úÉ Ê½þxnùÒ iÉlÉÉ ¨É±ÉªÉÉ±É¨É Eäò EòÊ´ÉªÉÉå iÉlÉÉ EÞòÊiÉªÉÉå {É®ú iÉÖ±ÉxÉÉi¨ÉEò BÆ´É º´ÉiÉÆjÉ +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò BEò OÉxlÉ ¦ÉÒ |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½èþ ÊVÉºÉ¨Éå þ÷É. ®úÉ¨ÉSÉxpùnäù´É EòÒ {ÉÖºiÉEò "iÉÖ±ÉºÉÒ +Éè®ú iÉÖÆSÉxÉ' BEò ={É±ÉÎ¤vÉ ¨ÉÉxÉÒ VÉÉiÉÒ ½èþ* "Eò½þÉxÉÒ º´É®ú +Éè®ú º´É°ü{É' ¸ÉÒ. Ê´É¶´É¨É EòÉ Ê½þxnùÒ Eò½þÉxÉÒ ºÉÉÊ½þiªÉ {É®ú º´ÉiÉÆjÉ +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò OÉxlÉ ½þÉ* ¸ÉÒ. ´ÉÒ. xÉÉ®úÉªÉhÉxÉEÖò]Âõ]õÒ xÉä "Ê½þxnùÒ EòÒ xÉ<Ç EòÊ´ÉiÉÉ' {É®ú +É±ÉÉäSÉxÉÉi¨ÉEò OÉxlÉ Ê±ÉJÉÉ ½èþ* ¸ÉÒ. B. +É®úÊ´ÉxnùÉlÉxÉ EòÉ "¨É½þÉnäù´ÉÒ EòÉ ®äúJÉÉÊSÉjÉ-BEò Ê´É´ÉäSÉxÉÉi¨ÉEò +ÉvªÉªÉxÉ' |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ½Öþ+É ½èþ ÊVÉºÉ¨Éå ¨É½þÉnäù´ÉÒ ®äúJÉÉÊSÉjÉÉå EòÉ MÉ½þxÉ +vªÉªÉxÉ ={É±É¤vÉ ½èþ* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ. iÉÆEò¨ÉhÉÒ+¨¨ÉÉ xÉä "¨É±ÉªÉÉ±É¨É +Éè®ú Ê½þxnùÒ Eäò JÉhþ÷EòÉ´ªÉ' |ÉEòÉ¶ÉÒiÉ ÊEòªÉÉ ½èþ*

EòÉ´ªÉ¶ÉÉºjÉ iÉlÉÉ ¦ÉÉ¹ÉÉÊ´ÉYÉÉxÉ ºÉ¨¤ÉxvÉÒ Ê½þxnùÒ OÉxlÉÉÉå EòÉ ºÉÞVÉxÉ ¦ÉÒ Eäò®ú±ÉÒªÉÉå xÉä ÊEòªÉÉ ½èþ* þ÷É. BxÉ. ®úÉ¨ÉxÉ xÉÉªÉ®ú EòÉ EòÉ´ªÉ¶ÉÉºjÉ

ºÉÆ¤ÉxvÉÒ OÉxlÉ "½þÉä®äúºÉ EòÒ EòÉ´ªÉÉEò±ÉÉ' EòÉ +{ÉxÉÉ ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ºlÉÉxÉ ½èþ* ¦ÉÉ¹ÉÉÊ´ÉYÉÉxÉ Eäò lÉäjÉ ¨Éå b÷É. {É®ú¨Éä¶´É®úxÉ uùÉ®úÉ Ê±ÉÊJÉiÉ "¦ÉÉÊ¹ÉEòÒ' Ê´É¶Éä¹É °ü{É ºÉä ¨É½þi´É{ÉÚhÉÇ ½èþ* ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ. ±ÉI¨ÉÒEÖò]Âõ]õÒ +¨¨ÉÉ EòÉ BEò OÉxlÉ "Ê¶ÉlÉÉ ¦ÉÉ®úiÉÒ ' xÉÉ¨É ºÉä |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ={ÉªÉÚÇHò ÊxÉ¤ÉxvÉEòÉ®úÉå Eäò +±ÉÉ´ÉÉ Eäò®ú±É ¨Éå xÉ<Ç {ÉÒgøÒ ¦ÉÒ ºÉ¶ÉHò ±ÉäJÉEò ½éþ ÊVÉxÉEäò ÊxÉ¤ÉxvÉ {ÉjÉ-{ÉÊjÉEòÉ+Éå ¨Éå |ÉEòÉÊ¶ÉiÉ ½þÉäiÉä ®ú½þiÉä ½éþ*